2025 रजत जयंती वर्ष

अनुवाद भारती

शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)
सप्तर्षि पथ, बनगाँव, बेलतला, गुवाहाटी - 28

वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे !

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे !

वर दे, वीणावादिनि वर दे !

अनुवाद भारती

रजत जयंती वर्ष - 2025

संरक्षक		**प्रो. अनंत कुमार नाथ** प्रोफेसर, तेजपुर विश्वविद्यालय (सेवानिवृत्त)
मार्गदर्शक		**श्री मोहन कोईराला** सचिव, शब्द-भारती
संपादक		**श्री मनोज कुमार** वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, ई.एस.आई.सी.
कार्यकारी संपादक		**श्री दीपक कुमार** अनुवादक, एन.आई.आर.डी.
संपादक मंडल		**श्री के. बासफोर** सचिव, शब्द-भारती
		श्री रामेश्वर शर्मा सी.आर.सी.सी, कामरूप मेट्रो, समग्र शिक्षा, असम
		श्री अजय कुमार पत्रकार, निष्पक्ष समाचार ज्योति

प्रकाशक -

शब्द - भारती

(हिन्दी संसाधन केन्द्र)

सप्तर्षि पथ, बनगाँव, बेलतला

गुवाहाटी - 781028 (असम)

संपर्क – +91 8724951078

+91 9436979505

Website - www.shabdabharati.org

Email - shabdabharati@gmail.com

•https://www.facebook.com/shabdabharatiofficial

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं और यह आवश्यक नहीं कि संपादक / संपादक मंडल इससे सहमत हों । पत्रिका में इंटरनेट पर उपलब्ध चित्रों का साभार उपयोग किया गया है ।

अनुवाद भारती

रजत जयंती वर्ष-2025

Silver Jubilee year 2025

कहाँ से चले थे, कहाँ पहुँच गए
मंजिल मिले न मिले
पर
आप सब मिल गए।

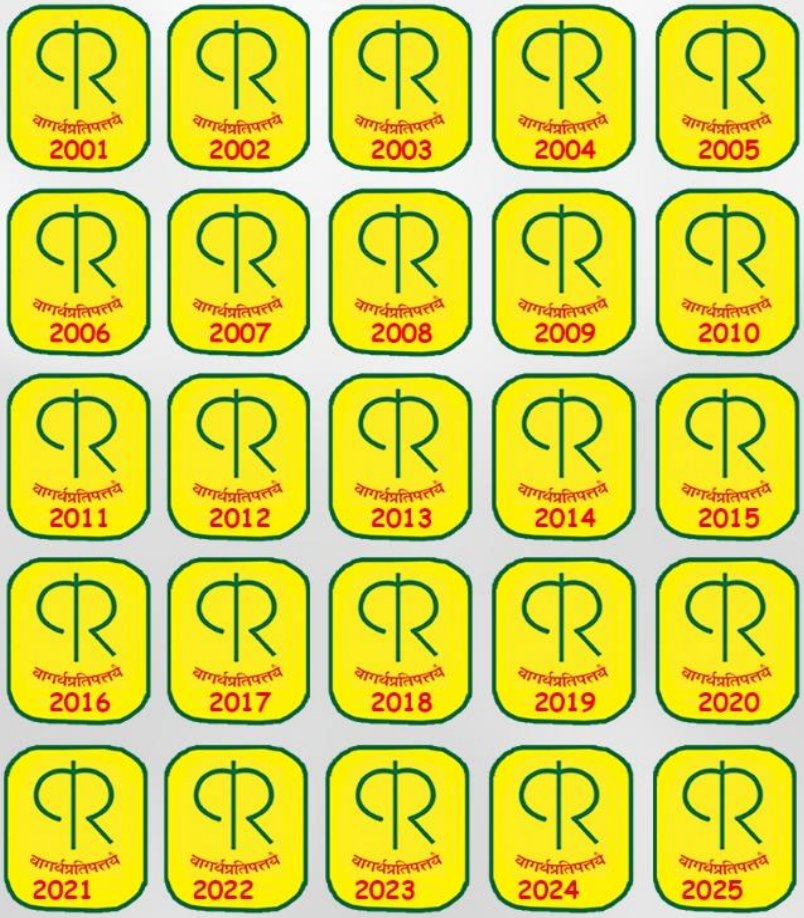

रजत जयंती वर्ष के पूर्व प्रीति सम्मेलन में आप सादर आमंत्रित हैं

दिनांक: 22 दिसंबर, 2024 (रविवार) :: समय- 11.30 बजे पूर्वाह्न

उत्तरापेक्षी:

अध्यक्ष/ उपाध्यक्ष/ सचिव

दूरभाष: 9436979505/9854113246/8812871461/9864035385

शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केंद्र)

सप्तर्षि पथ, बनगांव, बेलतला, गुवाहाटी-28, असम

संरक्षक की कलम से -

शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)
गुवाहाटी, असम

शुभकामना संदेश

शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र) की हिन्दी ई-पत्रिका **अनुवाद भारती** के रजत जयंती विशेषांक का प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है ।

इस ई-पत्रिका **अनुवाद भारती** में विविध सारगर्भित रचनाओं का समावेश है जो इसके छात्र-छात्राओं, संकाय-सदस्यों व अन्य हिन्दी प्रेमियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करती है। इससे असम जैसे सुदूर पूर्वोत्तर हिंदीतर राज्य में हिंदी के प्रति एक सकारात्मक माहौल भी तैयार होगा।

शब्द भारती हर हिंदी प्रेमी व विद्यार्थियों का वह मंच है जहां सौहार्दता है, मेल-मिलाप है और हिंदी के लिए काम करने का एक माहौल है। यह अत्यंत ही खुशी का विषय है कि हमारे युवा संकाय और सदस्य शब्द भारती को और अधिक निखारने के लिए कटिबद्ध होकर काम में लगे हैं। मैं उन सब की भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूं और उन्हें भी आशीर्वाद देता हूं।

शब्द भारती के रजत जयंती वर्ष के इस पावन बेला में प्रकाशित होनेवाली ई-पत्रिका **अनुवाद भारती** के माध्यम से राजभाषा की अखंड ज्योति निरंतर जलती रहे- इन्हीं शुभकामनाओं के साथ -

अनंत कुमार नाथ

प्रोफेसर अनंत कुमार नाथ

दिनांक: तेजपुर 15 दिसम्बर, 2024

संपादकीय

शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र) की हिंदी ई-पत्रिका **अनुवाद भारती** का रजत जयंती विशेषांक आपके कर-कमलों में सौंपते हुए मुझे सुखद अनुभूति हो रही है ।

भारत के सुप्रसिद्ध युवा कवि **अमन अक्षर** की कविता की एक पंक्ति है - **हम यहां तक अचानक नहीं आए हैं** - यह बात शब्द भारती के उद्भव और विकास में भी बिल्कुल सही प्रतीत होती है । जीवन के कई वसंतों और विभिन्न झंझावातों को पार करते हुए शब्द भारती आज भी पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की सेवा में समर्पित भाव से अडिग खड़ा है । 24 वर्ष यूं ही नहीं बीत गए । अनेक बाधाएं आईं, परंतु जिन लोगों के आशीर्वाद, मार्गदर्शन और आत्मीय सहयोग से हम यहां तक आएं हैं, शब्द भारती उन सभी के प्रति कृतज्ञ है । आज भी उसी निश्चल भाव से शब्द भारती हिंदी की सेवा में समर्पित है । बाधाएं तो अनेक हैं, लेकिन हौसले बुलंद हैं और इरादे जवां हैं और अभी बहुत दूर तक जाना है ।

शब्द भारती मात्र एक शैक्षणिक संस्थान ही नहीं, बल्कि यह पूर्वोत्तर भारत के सैकड़ों हजारों बेरोजगार युवाओं का पथ प्रदर्शक भी है और उनके सपनों के पंखों को उड़ान देती है । आज की तकनीकी और स्वप्निल दुनिया में जब हम चांद तारे पर जाने की बात करते हैं और जब हम पूरी दुनिया को मुट्ठी में कर लेने की बात करते हैं, तब ऐसे समय में भी शब्द भारती हिंदी की सेवा में विशेषकर अनुवाद के क्षेत्र में समर्पित भाव से काम काम कर रही है, जो नि:संदेह प्रशंसनीय है । अनुवाद आज हमारे जीवन की एक अनिवार्य शर्त है जिसके बिना हमारे विकसित होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है । ऐसे में शब्द भारती के **वाक् सेतु अनुवाद डिप्लोमा पाठ्यक्रम (Post Graduate Diploma in Translation)** का महत्व स्वत: स्पष्ट हो जाता है और यह बात किसी से छिपी भी नहीं है कि **शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केंद्र)** से अनुवाद में एक-वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पास करके अनेक छात्र-छात्राएं आज भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में सरकारी, गैर-सरकारी और निजी संस्थानों में नौकरी प्राप्त करने में सफल हुए हैं । इससे शब्द भारती और भी गौरवान्वित है ।

शब्द भारती की हिंदी पत्रिका **अनुवाद भारती** का प्रकाशन पूर्व में भी होता रहा है, लेकिन, इस वर्ष **अनुवाद भारती** की ई-पत्रिका का प्रथम अंक का प्रकाशन हो रहा है जिसमें शब्द भारती के ही पूर्व या वर्तमान छात्र-छात्राओं, संकाय सदस्यों और हिंदी प्रेमियों की विविध, सुंदर, पठनीय और सुरुचिपूर्ण रचनाओं का समावेश है । **अनुवाद भारती का यह अंक आपकी मधुर स्मृतियों में अनंत काल तक बसा रहेगा - ऐसा मेरा विश्वास है ।**

अनुवाद भारती का यह सफर निरंतर जारी रहे, इसके लिए हमें चाहिए - आपका साथ, आपकी छोटी-सी प्रेरणा, आपकी निष्पक्ष प्रतिक्रिया, आपका स्नेह और आशीष..

आपका

(मनोज कुमार)
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

शब्द भारती (हिंदी संसाधन केन्द्र) - लक्ष्य एवं उद्देश्य

हिन्दी भाषा के जरिए भारत की शक्तिशाली राष्ट्रीय पहचान दिलाते हुए देश को मजबूत बनाने के लिए सन में 1999 में गठित **शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)** भारत सरकार की राजभाषा नीति और शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत में स्थित सरकारी-गैर सरकारी कार्यालयों में हिन्दी को राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा के रूप लागू करने के लिए उपाय करने और संविधान के अनुच्छेद 351 में वर्णित प्रावधान के अनुसार हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाने, उसका विकास करने और उसके लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ करने तथा राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी में समन्वयन एवं कार्यन्वयन करने व हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओं को अनुवाद के जरिए विकसित करनेवाली एक पंजीकृत संस्था है ।

संस्था का लक्ष्य हिन्दी के माध्यम से हिन्दीतर क्षेत्र के विभिन्न भाषा-भाषियों, जाति-उपजातियों तथा समुदायों के बीच देश की भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है । इसके अनुरूप संस्था की नियमावली और नीति-निर्देशिकाएँ संकलित हुई है ।

संस्थान के अन्य कार्यकलाप हैं-

•राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रासार के लिए कार्यालयों, संस्थाओं और व्यक्तियों को सहायता और परामर्श प्रदान ।
•देवनागरी टाईपिंग, कम्प्यूटर, आशुलिपि प्रशिक्षण की व्यवस्था ।
•हिन्दी में अनुवाद का काम, रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण और पूर्वोत्तर के क्षेत्रीय भाषाओं, बोलियों के हिन्दी अनुवाद पर शोधपरक अध्येता वृत्ति / फेलोशिप प्रदान ।
•हिन्दी के जरिए पूर्वोत्तर की विभिन्न भाषाओं / बोलियों समन्वयन ।
•कार्यालयीन हिन्दी–प्रशिक्षण की व्यवस्था ।
•हिन्दी में संगोष्ठी, कार्यशालाओं, लेखन शिविरों, सम्मेलनों का आयोजन ।
•हिन्दी की मानक, स्तरीय, लोकप्रिय, कार्यालयीन और अनुवाद से संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, शब्दावलियों, कोशों की आपूर्ति और प्रकाशन ।
•राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन संबंधी शोधपरक कार्य का आयोजन, पुरस्कार, प्रोत्साहन और स्कॉलरशिप प्रदान ।
•राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन संबंधी अद्यतन, नवीनतम सूचनाएँ / भार्गदर्शन ।
•भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), शिक्षा विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) और संबंधित राज्य सरकारों एवं भारतीय ज्ञानपीठ तथा साहित्य अकादेमी संहित विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों के साथ हिन्दी का विकास और कार्यान्वयन / सम्बद्धता ।
•वे समस्त कार्य जो हिन्दी के विकास और कार्यान्वयन में आनुषंगिक, अनुपूरक और संबंद्ध हैं ।

अनुवाद पाठ्यक्रम

भारत सरकार से मान्यता प्राप्त एकवर्षीय
वाक्सेतु स्नातकोत्तर अनुवाद (अंग्रेजी-हिन्दी-अंग्रेजी) डिप्लोमा पाठ्यक्रम

शब्द-भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र) अनुवाद और हिन्दी विषयक अनेक गतिविधियों और आयामों के प्रति निरंतर कार्यरत तथा समर्पित एक ऐसी संस्था है जो वर्ष 2003 से पूरी निष्ठा के साथ अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है । भाषाओं के अनेक मर्मज्ञ विद्वानों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों तथा अनुवादसेवियों के सहयोग से शब्द-भारती 'अनुवाद भारती' वार्षिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन, अनुवाद विषयक मासिक एवं वार्षिक गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का निरंतर आयोजन, अनुवाद विषयक विभिन्न प्रकाशन तथा अनुवादकों को सम्मानित एवं पुरस्कृत करने जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्यों के साथ-साथ एकवर्षीय वाक्सेतु स्नातकोत्तर अनुवाद (अंग्रेजी-हिंदी-अंग्रेजी) डिप्लोमा पाठयक्रम भी सफलतापूर्वक चला रही है। गर्व का विषय है कि रोजगारोन्मुख तथा व्यवहारमूलक इस पाठयक्रम की उपादेयता एवं स्वतसिद्घ प्रासंगिकता के कारण ही भारत सरकार ने इसे सरकारी नौकरियों के लिए मान्यता प्रदान की है । उल्लेखनीय है कि संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त अनेक अनुवादक देश के कोने-कोने में सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों में कार्यरत हैं। इस पाठयक्रम की निरंतर बढ़ती लोकप्रियता का परिणाम है कि अब इस पाठयक्रम की शाखाएँ पूर्वोत्तर राज्यों के अनेक स्थानों, जैसे- अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, दुलियाजान और तेजपुर में भी आरंभ किए जा रहे हैं। भविष्य में भी पाठयक्रम की शाखाएँ खोली जानी हैं।

इस बहुआयामी, उपयोगी तथा रोजगारमूलक सार्थक पाठयक्रम के उद्देश्य इस प्रकार हैं –

•अनुवाद के विविध क्षेत्रों में रोजगार के लिए प्रशिक्षण देना
•सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के युग में अनुवाद की उपादेयता का बोध कराना
•अनुवाद प्रक्रिया का प्रयोग सीखाना
•भूमंडलीकरण के युग में अनुवाद की रचनात्मक भूमिका स्पष्ट करना
•कार्यालयीन अनुवाद का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना
•बैंक, बीमा, संसद, विधि, विज्ञापन तथा कंप्यूटर आदि विशिष्ट क्षेत्रों में अनुवाद का प्रशिक्षण देना
•तत्काल भाषान्तरण, दुभाषिए संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करना
•प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में अनुवाद के स्वरूप तथा पत्रकारिता से परिचित कराना
•प्रयोजनमूलक हिंदी, कोशविज्ञान तथा पारिभाषिक शब्दावली में दक्षता प्रदान कराना अनुवाद के सैद्धांतिक ज्ञान के साथसाथ उसके विविध आयामों, अनुशासनों से व्यावहारिक बोध कराना, तथा
•हिन्दीतर क्षेत्रों में हिन्दी के प्रचारप्रसार को मौलिक तथा अनूदित रूप में गति प्रदान करना

पंक्ति

-अंकिता लहकर

शब्दों की उलझन में बिखरी हुई
यह पंक्ति
खयालों की दुनिया में रहने वाली
यह पंक्ति।

कहीं किसी राह पर रुकेगी यह जिन्दगी
क्या तभी मिलेगी मुझे मेरी यह पंक्ति
न यह वक्त काबू में है, न ही तकदीर
फिर भी इन्हीं से टकराती है
यह पंक्ति।

बादलों में छिपी हुई नीलाभ आसमानों की तरह
किसी दिन ढूढ़ लूँगी
यह पंक्ति।

प्रेरणा की दागों से बनी हुई
उम्मीदों की चादर बनेगी
यह पंक्ति।
तितलियों की भाँति उड़ेगी
सपनों की उड़ान लेगी
यह पंक्ति।

राह अलग थी सफर अलग था
फिर भी किसी मोड़ पर मिली थी
यह पंक्ति।

*****

परिष्कृत होता जा रहा मशीनी अनुवाद

-मेधावी

शब्द भारती (हिंदी संसाधन केंद्र) अनुवाद पर विद्वानों के विभिन्न विचार उपलब्ध हैं कुछ ने इसे विज्ञान माना है तो कुछ ने कला, कुछ ने न विज्ञान और न ही कला बल्कि एक शिल्प माना है| व्यापकता से विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह विज्ञान, कला और शिल्प तीनों है| तीनों में किसी भी एक दृष्टिकोण का यदि अभाव हो तो अनुवाद की शुद्धता संदेहास्पद हो जाती है|

अनुवाद को परिभाषित करने वाले विद्वानों के अपने-अपने विचार हैं, कुछ का कहना है कि हू-ब-हू अनुवाद संभव ही नहीं है, कुछ ने माना कि यह मूल विषय जैसा ही होता है- परंतु वही नहीं होता| अँग्रेजी लेखक जार्ज बोरो ने भी कहा है कि Translation is at best an echo. कुछ ने इसे सर्जनात्म्क प्रक्रिया माना है और कहा है कि कई बार यह सर्जना मूल से भी अच्छी हो जाती है|

विद्वानों की उक्तियों से यह लगता है कि अनुवाद को भले ही अपनी-अपनी दृष्टि से देखा गया हो, परिभाषित किया गया हो, परंतु अनुवाद की महत्ता, अनुवाद की आवश्यकता, अनुवाद की अनिवार्यता पर सभी सहमत हैं| यह दो भिन्न भाषाओं के बीच का सेतु है, यह मानव सभ्यता के विकास का अनिवार्य तत्व है, यह ज्ञान विज्ञान के प्रचार-प्रसार का माध्यम है, साहित्य और संस्कार के विस्तार का वाहक है| किसी भी जानकारी को अन्य भाषा-भाषी तक पहुंचाने के लिए अनुवाद ही जरिया बनता है|

मानव स्वभाव से ही अनुवादक है| इस उक्ति की सार्थकता आज की नई शिक्षा नीति से पुष्ट हो जाती है| नई शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर पर अपनी मातृ भाषा में शिक्षा देने की योजना पर बल दिया जा रहा है| प्राथमिक के बाद विद्यार्थियों को दूसरी भाषा में शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था है| इसका अर्थ यह हुआ कि अपनी मातृ भाषा के अतिरिक्त उसे दूसरी भाषा एक खास उम्र के बाद सीखनी होगी| उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर उसके लिए तीसरी भाषा सीखना भी अनिवार्य हो सकता है| ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक है कि अपनी मातृ भाषा में मूल रूप से सोचकर वह दूसरी भाषा में उसी विचार को अभिव्यक्त करने के लिए अनुवाद को ही शस्त्र बनाएगा|

इसके अतिरिक्त हम बहुभाषी समाज में या फिर वैश्वीकरण की दौर में अपना अस्तित्व बचाने के लिए एक से अधिक भाषाओं की जानकारी रखते हैं| इस परिस्थिति में भी हम किसी विषय को अपनी भाषा में ही सोचते हैं फिर अनुवाद के जरिए उसे दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं|

इसका अर्थ यह हुआ कि अनुवाद कला का प्रशिक्षण लिए बगैर प्रत्येक व्यक्ति अनुवाद करने का कार्य निरंतर करता रहता है| इस प्रकार अनुवाद को यदि स्वाभाविक प्रक्रिया कहा जाए, अनुवाद को यदि कुछ शर्तों के साथ आंतरिक तत्व कहा जाए, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी| जीवन का प्रत्येक क्षेत्र चाहे राजनीतिक हो या वाणिज्यिक, सांस्कृतिक हो या शैक्षिक- प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की महता स्वत: स्पष्ट है| अनुवाद के अभाव में संपर्क की सीमा सीमित हो जाती है, जिसे विकास और वैश्वीकरण के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं कहा जाएगा|

अनुवाद की अनिवार्यता को देखते हुए प्रौद्योगिकी ने भी इससे वर्षों पहले नाता जोड़ने का काम किया| आज उन्नत प्रद्योगिकी के साथ अनुवाद भी परिष्कृत होने की प्रक्रिया में अग्रसर है| कंप्यूटर प्रोग्राम की सहायता से एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करने को यांत्रिक या मशीनी अनुवाद कहते हैं| भारत में इस तरह का प्रयास 1995 में आईआईटी कानपुर द्वारा किया गया था| इसके पश्चात, अँग्रेजी से हिंदी के लिए सी-डैक ने 1997 में मंत्र नामक पहला इंजन बनाया| बाद में कई अन्य संस्थाओं तथा लोगों ने भी अपने-अपने स्तर पर मशीन अनुवाद प्रणाली विकसित की| इन सभी प्रयासों के बीच गूगल का अनुवाद टूल्स काफी लोकप्रिय बना और इसका मशीनी अनुवाद अपेक्षाकृत बेहतर समझा जाने लगा| माइक्रोसॉफ्ट भी इसतरह की सुविधा भारतीय भाषाओं के लिए उपलब्ध करवाने लगा है| आजकल किसी भाषा में अभिव्यक्त बात को अन्य किसी भाषा में अनूदित करना बड़ी बात नहीं रह गई है| मशीनी अनुवाद के लिए गूगल एवं माइक्रोसॉफ्ट के अलावा अनेक नि:शुल्क एवं सशुल्क टूल्स तथा मोबाइल एप उपलब्ध हैं जो पालक झपकते अनुवाद प्रस्तुत करते हैं|

मशीनी अनुवाद का सफर श्ब्दानुवाद (Dictionary based translation) से शुरू हुआ| आगे चलकर सांखिकीय मशीन अनुवाद (SMT) आया| मगर अनुवाद का कार्य चुनौतीपूर्ण बना ही रहा| SMT से अनुवाद की गुणवत्ता में प्रत्याशित वृद्धि नहीं हुई| मशीनी अनुवाद पर काम चलता रहा, अनुसंधान होते रहे और NMT (तंत्रिका मशीन नेटवर्क) सामने आया| आजकल गूगल और माइक्रोसॉफ्ट दोनों इसी प्रक्रिया पर आधारित अनुवाद एप्लिकेशन प्रयोग करते हैं|

गूगल ने मशीनी अनुवाद का आरंभ 2006 में किया था वहीं माइक्रोसॉफ्ट ने वर्ष 2011 में अपने उपभोक्ताओं के लिए मशीनी अनुवाद प्रारम्भ किया| अनुवाद की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु अनुसंधान कार्य जारी रहे और वर्ष 2016 में गूगल ने NMT को अनुवाद की मूल प्रक्रिया के रूप में अपनाया| कहना होगा कि NMT से अनुवाद के क्षेत्र में बड़ी क्रान्ति आई| NMT के जरिए किए गए अनुवाद गुणवत्ता की दृष्टि से SMT अनुवाद से बेहतर परिणाम देने लगा| शब्दानुवाद के

स्थान पर व्याकरण एवं वाक्य संरचना और शब्दार्थ पर आधारित अनुवाद सामने आने लगा| उदाहरणस्वरुप करीब 10-12 वर्ष पूर्व के गूगल अनुवाद का एक नमूना देखिए:-

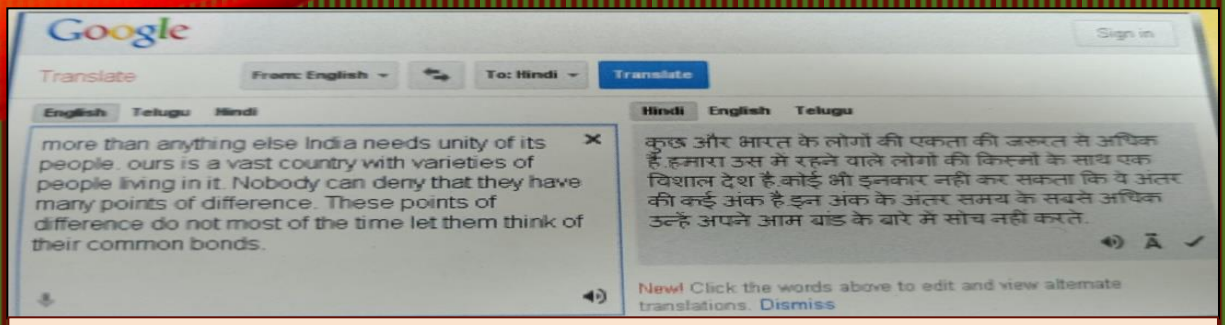

इसी अनुच्छेद का आज गूगल निम्नवत अनुवाद करता है :-

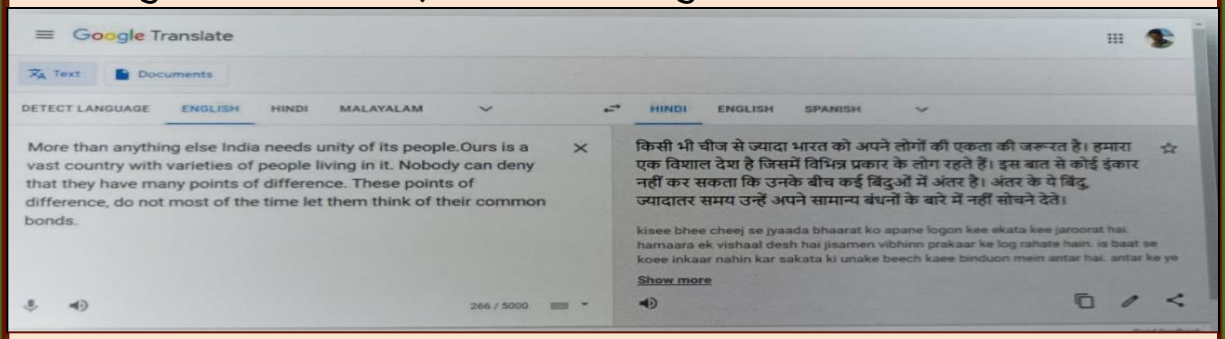

देखा जा सकता है कि इन 10-12 वर्षों में मशीनी अनुवाद की गुणवत्ता में कितना परिवर्तन आया है| मशीनी अनुवाद सटीकता की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा है|

अनुवाद में वाक्य-संरचना विशेष महत्व रखती है| यदि, वाक्य संरचना सही नहीं है तो अर्थ का अनर्थ होना स्वाभाविक है, जैसे-

“I would like to have hot cow milk”. दशक पूर्व गूगल इसका अनुवाद करता था-

“मुझे गरम गाय का दूध चाहिए”|

इस पंक्ति में प्रयुक्त सारे शब्द सही हैं परंतु अर्थ बादल गया है अनर्थ में| इसी वाक्य को नए अनुवाद टूल्स से गूगल अब अनुवाद करता है:-

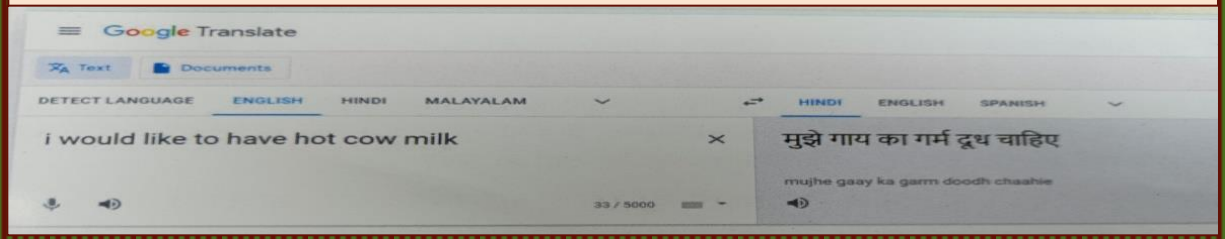

सटीकता की ओर बढ़ते मशीनी अनुवाद का यह दूसरा उदाहरण है|

तंत्रिका अनुवाद आखिर क्या है?:- यह स्रोत भाषा के वाक्य अथवा वाक्यांशों को तंत्रिका नेटवर्क की सहायता से परखकर, उसे सही क्रम में तथा लक्ष्य भाषा की संरचना के अनुसार परिवर्तित करने की अत्याधुनिक मशीनी अनुवाद प्रक्रिया है| केवल वाक्य ही नहीं, पाठ खंड, पूर्ण वाक्य, संपूर्ण दस्तावेज़ का भी इसी तरह अंतरण किया जाता है |

तंत्रिका नेटवर्क की विशेषता यह है कि यह कृत्रिम बुद्धि के सहारे नेटवर्क में पहले से उपलब्ध कई वाक्यों का विश्लेषण करने के बाद समस्याओं का समाधान अपने आप ढूँढ लेता है|

एक अन्य उदाहरण: Where is the Railway Station? इसका शब्दानुवाद है " कहाँ है रेलवे स्टेशन?"| इसी वाकई को तंत्रिका नेटवर्क से अब निमानलिखित अनुवाद प्राप्त होता है-

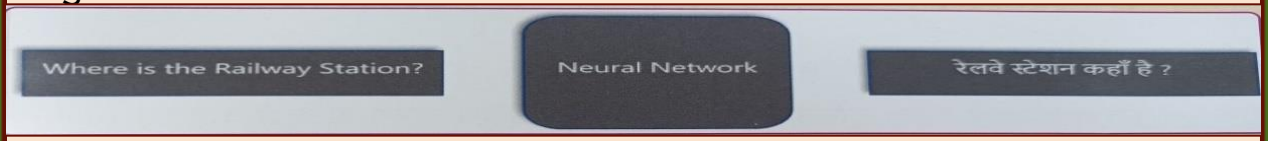

उपर्युक्त उदाहरण में हिंदी वाक्य को हिंदी भाषा की संरचना के अनुसार अनूदित कर दिया गया है| तंत्रिका नेटवर्क में इनपुट को वेक्टर और मैट्रिक्स डेटा में एनकोड किया जाता है फिर लक्ष्य भाषा में उसे डिकोड किया जाता है| वाक्य से वेक्टर में रूपांतरण को वेक्टर मैपर कहा जाता है- यह नेटवर्क का पहला चरण है| इस प्रकार मशीनी अनुवाद वाक्यों तथा शब्द-समूहों से संबंध रखता है|

तंत्रिका नेटवर्क को और सक्षम बनाने के लिए तंत्रिका नेटवर्क के स्थान पर आवर्ती तंत्रिका नेटवर्क समाधान (RNN) का प्रयोग किया जाता है, जो बार-बार प्रयोग होने वाले वाक्यों और शब्द-समूहों का अध्ययन करके समस्या का समाधान निकाल लेता है| फिर RNN का आधुनिक संस्करण द्वि-दिशात्मक आवर्ती तंत्रिका नेटवर्क का प्रयोग शुरू हुआ ताकि अनुवाद और परिष्कृत हो| उसके बाद डीप NMT प्रक्रिया शुरू हुई, जिसमें कई परतों से दोनों दिशाओं में आवश्यकतानुसार विश्लेषण एवं अनुवाद होता है|इस प्रकार मशीनी अनुवाद का स्तर दिन-ब-दिन सुधरता जा रहा है, परिणामस्वरूप किसी भी भाषा में सूचना का आदान-प्रदान या सम्प्रेषण लगभग साध्य हो गया है| आज भाषा सम्प्रेषण में बाधक नहीं रह गई है, आने वाले दिनों में उम्मीद है कि मानव श्रम द्वारा किए गए अनुवाद की तरह तकनीकि विकास की बदौलत मशीनी अनुवाद भी परिष्कृत, सटीक और मान्य माना जाने लगेगा|

****

खोए हुए बेटे की याद में...

ज्योत्सना गोगोई

मेरा प्यारा बेटा,

आज मुझे तुम्हारा बहुत याद आ रहा है। आज जब मैं तुम्हारे कमरे की सफाई कर रही थी तो मुझे तुम्हारा स्कुल डायरी मिली जिसे तुम हमें कभी देखने नहीं देते थे। तुम्हे याद हैं? मैंने इसे तुम्हारे ग्यारहवें जन्मदिन पर उपहार के तौर पर दिया था। पापा और मैंने आधी रात को हैप्पी बर्थडे कहकर तुम्हें प्यार से बधाई दिया था। जब तुम्हें डायरी मिली तो खुशी से तुमने मुझे गले लगा लिया था।

बेटा, जबसे तुम हमें छोड़कर गए हो, राते बहुत सूनी हो गई हैं। आधी रात को पापा मुझे रोते हुए देखते है तो गाली देते हैं। मैं जानती हूं कि वह मुझे झूठा गुस्सा दिखाते है। जिस दिन तुम हमें छोड़कर गए, पापा सारी रात रोते रहे। वे सोचते हैं कि मुझे इस बारे मे नही पता। तुम्हे मुझे रोती हुई देखकर बुरा लगता होगा न! तुम्हे याद हैं? पहले जब भी मैं रोती थी तब तुम भी रो देते थे। अब यह याद आता है तो मुझे हंसी आती हैं।

अगर कभी मुझे तुम्हारी बहुत ज्यादा याद आती है तो मैं तुम्हारे बिस्तर की तकिया अपने सीने से लगा लेती हूँ। आजकल मेरे आंसुओं ने तेरे तकिये पर फूल भर दिये हैं। अगर तुमने यह देखा तो मुझपर गुस्सा हो जाओगे। मैंने तुम्हारे कमरे में किसी को कोई भी वस्तु छूने नहीं दिया है। तुम्हारे पसंद के पेंसिलों, चित्तों और रंगो को खूबसूरती से व्यवस्थित करके रखा है। तो तुम किसी बात की चिंता न करना। बस तुम जहाँ भी हो ठिक रहो, खुश रहो। ठीक है।

आज यही छोड़ती हूं। अगर तुम्हारे पापा जग गए तो मुझे फिर डाटेंगे।

अलविदा बेटा। बहुत सारा प्यार तुम्हारे लिए।

– आपकी माँ

*****

नयी शुरूआत

- निशा

नयी शुरुआत

जिंदगी यू गुजर रही है ।
कि पता नही ,
जाना कहाँ है।
रास्ते बहुत सारे है ,
समझ नही आ रहा ,
सही कौन- सा है।
हर बात पे लोग पूछ रहे है ,
आगे करना क्या है ?
रातों की नींद उड़ी हुई है,
आत्मविश्वास कही कोने मे पड़ा है।
ये हवाएं मदहोश नही,
होश मे ला रही है ।
चांदनी रात भी आज,
अंधकारमय लग रही है ।
फिर मन ने सहलाकर कहाँ,
सो जा ।
कल सुबह एक नयी शुरुआत है ।

– Ni Sha

एक पहेली मेरी ज़िंदगी

-परिमिता दत्त बरुवा

मेरी ज़िंदगी एक पहेली है
क्या पता यह मेरा सौभाग्य है या दुर्भाग्य है।
आज कुछ और है कल कुछ ओर,
यह सिलसिला न जाने कव तक चलनेवाली है।

थकान सी महसूस होने लगी है,
आँखों में आँसू आने लगे हैं।
न जाने कब तक मायूसियाँ रहेंगी,
अब तो उम्मीद भी साथ छोड़ने लगी है।

एक दिन विदा हो जाउँगी इस संसार से,
किसी को पता भी न चलेगा।
मेरे जलते हुए लौ को देखेंगे मेरे चाहनेवाले
बाक़ी सहारा केवल मेरी यादों का रह जाएगा।

भाग्य को कौन बदल सकता है ?
यह तो भगवान के हाथ में है
जीवन के इस सफ़र में सुख दुःख को साथ लेकर
हँसते हुए चलते ही जाना है।
बस चलते ही जाना है॥

नारी

-मलया हिलैदारी

प्राचीन युग से हमारे समाज व्यवस्था में नारी विशेष महत्व मिला हैं। प्राचीन ग्रंथों में नारी को पुजनीय तथा देवी माना गया है। प्राचीन युग से हो स्त्रौ समाज के लिए एक प्रेरणा नारी में एक ऐसी शक्ति है, जो दुनिया की किसी भी चीज में नहीं हैं। नारी एक सृजन शक्ति हैं, नारी ही समाज अच्छे अच्छे लोगों को सृजन करने हैं।

वर्तमान समाज में नारी को हम अलग तरर्जा देते हैं। आजकल नारी कट सकता हैं। असमीया भाषा में कहावत था किं लाउ सदा पत्तों के पीछे रहता है। अर्थात लड़की या नारी सदा पुरुष के नीचे रहती है। यह कहावत आजकल उलट गयी है। आजकल की नारी क्या कुछ नहीं कर सकती। प्लेन उड़ाने से लेकर युद्ध भूमि तक जा सकती है। आज की नारी शक्तिशाली बलशाली महान है।

नारी के प्रकार या भाग में एक ऐसे भाग होते हैं जो है माँ'; जो सबके लिए खाँस होते हैं। माँ शब्द बोलने से ही मन में एक भें एक अदभूत-सा भाव उपन्न हो जाते हैं; जो शब्दों में व्यकत नहीं कर पाया। माँ ईश्वर के द्वारा दिया गया एक वरदान है। माँ के पास एक ऐसी शक्ति है, जो दुनिया की किसी भी चीज में नहीं हैं। माँ आंचल में ही हमलोग सबसे ज्यादा सुरक्षित महसूस करने हो। पर आजकल समाज में ये देखने को मिलना हैं कि बच्चे अपने माता-पिता को रास्ते में छोड़कर जाने हैं, उनका देखभाल नहीं करते।

आजकल ये स्थिति बहुत देखने को मिलना हैं जो बहुत दुख स्थिति हैं। हमे अपने जन्मदाती माँ के साथ ऐसा कभी नही करना जाहिए। हमारे लिए माँ तो एक देवी जैसी होनी हैं। जो हर परिस्थिति में हमारे साथ खड़ी रहती है।

आज के नारी कहा से कहा पहुंच फिर भी कुछ कुछ जगहों पर आज भी नारो या लड़की को घर के अंदर रहने देते हैं। उन लोगों के लिए भी बहुत कुछ नियम बनाते हैं तु ये ना करो, वहां न जाओं हम लड़का और लड़की को एक समान मानते हैं। फिर भी रात में नड़की को अकेले बाहर लाने नहीं देना है। कुछ कुछ जगहों लड़की की वृत्ति को लेकर भी कभी प्रश्न करने हैं।

स्त्री के ऊपर स्त्री के दार कभी कभी दहेज के लिए घरेलू हिंसो के लिए, पति की मानसिक दबाव, बेरुखी से भी नारी को मानसिक यातना से गुजरना पड़ता है। एक तरफ हम दुर्गा माँ, सरस्वती, लक्ष्मी को पूजा करने हो और दूसरी तरफ हम स्त्री पर मानवीय अत्याचार करते हैं। ये क्यो होता हैं? कोई इसका जवाब दे सकता है। कोई भी इसका उत्तर नहीं दे पायेगा। कोई लोग स्त्री को एक काठ का पुतला समझते है।

नारी एक ऐसी गुल्यवान सम्पति है जो नही होते से समाज की गति रोक जायेगा। नारी सृष्टिकर्ता भी और विनाशकारी भी हैं। नारी हो मानवता की धुरी है और मानवीय मूल्यों की संवाहक है।

मानवता की गरिमा और लावण्य भी नारी का रूप हैं। नारी का इस दुनिया पर होना, दुनिया का गौरव हैं।

नारी का हमेशा आदर करना चाहिए।

नारी अच्छे और खुशी रहने से ही एक घर परिवार समाज देश और दुनिया सब खुश रह सकता है।

*****

अहसास

- निशा

अहसास

गलती ना आपकी है ना मेरी है
गलती उन परिस्थियों की है
जिनमें हम फंस जाते हैं और
चाहते हुए भी निकल नहीं पाते
या यूँ कहु कि निकलना नहीं चाहते
कहने को बहुत कुछ है
पर कह नहीं सकते
या यूँ कहु कि कहना नहीं चाहते
और शायद इसलिए भी नहीं कहना चाहते
कि हम चाहते है आप खुद समझो
कि हमारा अहसास क्या है?
कि हम क्या महसूस करते हैं?
कि जब हमारी नजरें टकराती है
तो क्यों एकदम से झुक जाती है?
कि क्यों मन में सोचते है कि
अब नहीं.....और
फिर क्यों आप नज़र में पड़ते हो?
और हम सब भूल जाते है
माना हमें दुनिया की परवाह है
पर आप तो बेपरवाह हो
जो बात हम नहीं कह सकते
क्या आप समझ नहीं सकते?

— Ni Sha

YourQuote.in

नए रंग

- नमबम थादोई चनु

रोज जीवन में नए रंग भरने का वक्त आया हैं,
खुशियों की बुनियाद पे हम सब मिलकर चलेंगे साथ।

बंदूक की जगह, मुस्कुराहट का साथ हों,
संसार में अमन और प्रेम का राज हों।

टियर गैस की जगह, प्रिय संगीत का राग हों,
स्वरों में घुल मिलके, सबको प्यार का तोहफा हों।

असुरक्षित न हो, हर कोना हो शांत,
जीवन की दिशा में हम सब मिलकर बदलेंगे इस रण को।

संस्कृति के रंग, प्रेम के साथ खिले,
हर कदम पे साथ चले, एक दूसरे को समझे।

हम जीतेंगे ये संघर्ष, ऐसा हमें विश्वास हैं,
संभालों जीवन को, बने रहे प्रेम का सागर।

रिश्तों में मिठास, संवेदना का इजहार,
इन शब्दों में छुपा हैं हमारा प्यारा संसार। *****

गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि में' अस्तित्व की तलाश करती स्त्री

- निशा

प्रस्तावना- उपन्यासकार गीतांजलि श्री (1957) की गणना समकालीन हिंदी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण साहित्यकार के रूप होती है। गीतांजलि श्री की पहली कहानी 'बेलपत्र' है। जिसका प्रकाशन सन् 1987 ई. में 'हंस' पत्रिका में हुआ था लेकिन एक लेखक के रूप में उनकी पहचान 'अनुगूँज'(1991) के प्रकाशन के बाद बनी जो एक कहानी संग्रह है। इनके कथा साहित्य का अनुवाद व्यापक स्तर पर हुआ है। इसमें अंग्रेजी के साथ साथ जर्मन, फ्रेंच, सर्बिया, बांग्ला, उर्दू, मलयालम, उड़िया और गुजराती भाषाएँ शामिल है। हिंदी कथा साहित्य में गुण तथा मात्रा दोनों ही दृष्टि से गीतांजलि श्री का योगदान महत्वपूर्ण है। उनके प्रकाशित उपन्यासों में 'माई'(1993), 'हमारा शहर उस बरस'(1998), 'तिरोहित'(2001), 'खाली जगह'(2006), 'रेत समाधि'(2018) सम्मिलित है। तथा कहानी संग्रह में 'अनुगूँज'(1991), 'वैराग्य'(1999), 'मार्च माँ और सकुरा'(2008), 'प्रतिनिधि कहानियां'(2010), 'यहाँ हाथी रहते थे'(2012) शामिल है। इनकी कृतित्व की विशिष्टता विषय की दृष्टि से निर्विवाद है ही कथावस्तु से लेकर कथाशिल्प तक लेखिका ने अनूठी विविधता दिखायी है यह विविधता ही उनका वैशिष्ट्य है।

विषयवस्तु- स्त्री-पुरुष के बगैर समाज की कल्पना भी संभव नहीं हो सकती है। क्योंकि स्त्री-पुरुष एक दुसरे की पूरक होते है। वैसे दोनों का अपना स्वायत अस्मिता भी होती है। किन्तु सामाजिक विकाश की प्रक्रिया में जोर दिया गया कि पुरुष ने स्त्री की अस्मिता और अस्तित्व को विकसित नहीं होने दिया। स्त्री की अस्मिता तथा अस्तित्व को तय करने वाला प्रमुख कारन उसका पुरुष सन्दर्भ ही बना रहा। पुरुष सन्दर्भ के कारन ही स्त्री को पत्नी, माँ, बेटी, बहन का दर्जा प्राप्त हुआ। स्त्री को अस्तित्व के पहचान का कोई और रूप समाज आज भी इस भूमंडलीकरण के युग में स्त्री को स्वीकार नहीं करता और ऐसे स्त्री पर अनेक प्रश्नों की बरसात कर

देता हैं। मानव-जीवन को संचालित करने वाले संस्थान, कलारूप, नियम, मूल्य, एवं पैमाने प्रत्येक पुरुष पर केन्द्रित रहे है। स्त्री जीवन हाशिए पर ही रहा है स्त्री सदैव से ही प्रकृति का पर्याय माना जाता है। लिंगभेदीय असमानता के माहौल को स्त्री ने स्वंय के संघर्ष, जिजीविषा एवं परिवर्तन के प्रति गहरी आस्था के माध्यम से तोडा है।

'रेत समाधि' उपन्यास का मूल तत्व है- 'अम्मा' जो एक अस्सी वर्षीय वृद्धा है। वह स्त्री की जीवन-रस को पाकर फी जिवंत को उठती है, कैसे पुरुषसत्तात्मक समाज में अपना होना, अनपे अस्तित्व की तलाश करती ही और कैसे जीवन की रेत की समाधि से बहार आकर एक नया जीवन जीने लगती है; यह उपन्यास के केंद्र में है। इस उपन्यस में 'बेटी' जो अम्मा की बेटी होती है। वह इस पुरुष प्रधान समाज में घर छोड़ अपने प्रेमी के साथ 'लिविंग' में रहती है। स्वतंत्र होकर यह इसके बड़े भी को पसंद नहीं अत और पुरे उपन्यास में दोनों के बीच के मन-मुटाव को देख सकते है। गीतांजलि श्री 'रेत समाधि' के बारे में कहती है यह "हर साधारण औरत में छिपी एक असाधारण स्त्री की महागाथा है।"

माँ

'अम्मा' जिसका नाम चंद्रप्रभा देवी है। कि होता यह है कि अम्मा ने अपने पति के निधन के बाद पीठ कोदिवार बना पलंग पकड़ रखा है। पूरा घर लगा रहता है कि अम्मा पलंग से उठे, थोड़ा घुमे-फिरे, लेकिन अम्मा ने तो जैसे प्रतिज्ञा ले रखी है की वो नहीं उठेगी। बेटा, बहु, बेटी, पोता सब कहते हैं अम्मा उठो, मगर वो नहीं उठती है। फिर अचनाक एक दिन वह होता है जिसकी कल्पना घर के किसी सदस्य ने नहीं की थी। अम्मा उठती है और बिना किसी को बताए एक छड़ी के सहारे घर से निकल जाती है। पूरा घर परेशां होता है, खोज खबर होती है फिर अम्मा मिलाती है एक ठाने में। अम्मा लौटती है किन्तु उसके बाद बेटी के पास रहने चली जाती है। उसके

बाद तो अम्मा में कायाकल्प होने लगती है और ये होता है रोजी के सानिध्य में जो एक किन्नर होती है लेकिन अम्मा की बहुत अच्छी दोस्त होती है।

रोजी के सानिध्य में अम्म्मा अपने पहनावे-ओढ़ावे से लेकर दैनिक के तमाम आयामों में बिलकुल बदल जाती है। उर्जा से भर जाती है, उसमें नई हसरतें जागने लगती है। बेटी को भी समझ में नहीं आता है कि ऐसा कैसे हो रहा है। वो थोड़ी घबराती भी है, लेकिन अम्मा तो आत्मविश्वास की जीवित मूर्ति बनती जाती है। और उसके बाद जो होता है, वो तो अम्मा को तोड़ देता है। रोजी की अप्रत्याशित हत्या उसे कुछ अवधि के लिए फिर से मुर्दा बना देती है। लेकिन वह इस सदमे से भी अंतत उबार जाती है और रोजी की अधूरी इच्छा पूरी करने के बहाने पाकिस्तान अपनी बेटी के साथ जाती है पासपोर्ट वीजा के साथ। बेटे,बहु और पोतों की इसमें सहमति होती है लेकिन उनको मालूम नहीं कि अम्मा के मंसूबे क्या है। पाकितान पहुँचने के बाद यह राज खुलता है कि अम्मा यानि चंद्रप्रभा देवी का अतीत तो पाकिस्तान में पीछे छूट गया था। वह कभी चंदा हुआ करती थी और अनवर नाम के मुस्लिम शख्स के साथ अविभाजित भारत में उसकी शादी हुई थी। अम्म्मा यानी चंदा का जन्म पाकिस्तान में एक हिन्दू परिवार में हुआ था लेकिन भारत-विभाजन के बाद मचे त्रासदी में कई अन्य हिन्दू औरतो के साथ वो भी सरहद के इस पार चली आई। यानि हिंदुस्तान में और यहाँ आकर चंदा चंद्रप्रभा देवी नाम से नई और दूसरी जिन्दंगी शुरू करती है। पर क्यों गई थी अम्मा उर्फ़ चंद्रप्रभा उर्फ़ चंदा अपने जीवन की इस आखरी पड़ाव में पाकिस्तान? धीरे-धीरे ये रहस्य खुलता है कि वो अपने पहले पति 'अनवर' की खोज में वहां गई थी और वही उसकी मृत्यु होती है। पाकिस्तान के सुरक्षाकर्मियों द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद वप अपनी बेटी और पुलिस वालों से कहती है कि उसे इछे से दौड़ते हुए आएं और जोर से धक्का दें, क्यों? इसलिए कि वह धक्का खाकर पीठ के बल गिरने का अभ्यास करना चाहती है और आखिर में जब वो गोली खाकर मरती है तो मुहं के बल नहीं पीठ के बल ही गिरती हैं।

इस प्रकार 'रेत समाधि' उपन्यास में माँ अपनी अस्तित्व की खोज में सारी सरहदों को पार करती हुई उम्र के आखरी पड़ाव में भी अपने प्रेमी की तलाश करती हुई पाकिस्तान पहुँच जाती है। गीतांजलि श्री ने माँ के माध्यम से ये बताना चाहती है कि अस्तित्व की खोज करने में उम्र, सरहद, परिवार, रिश्ते-नाते कोई भी सीमाएं हमें नहीं रोक सकती।

बेटी

उपन्यास में एक और मुख्य भूमिका निभाने वाली पात्र है बेटी, जो अपनी जिंदगी स्वंय की शर्तों पर स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है उसको परिवार में सिर्फ माँ का सहारा है उपन्यास में उसके फटेहाल जिंदगी के बारे में है-"बहन बेचारी डांटना फटकारना दुराना जरुरी था उसे वापस रह पर लाने को पर थी वो बेचारी कितनी बेवकूफ लड़की, नाजों से पली,लाडली लल्ली जिद अपने ही नुकसान के प्रति नादान,अनजान और फायदा उठाने वाले,भूतलाव में डालने वाले नालायक जान, जिन्हें वो प्रेमीगन समझती रह जाती बार-बार अकेली उसके ऊँचे घराने, अफसर भाई बाप को पता नहीं तो बोरिया बिस्तर लेकर चल दिए। अकेली, गरीब, बेचारी उसे छोड़कर। कहीं टिक कर नौकरी भी नहीं मिली। आज यहाँ लिख दिया, कल वहाँ बोल आयी। सेक्रेटरिएट लाइब्रेरी में कुछ खरीद उसकी किसी- के -पल्ले- वाली इक्का दुक्का किताबों की, भाई ने करा दी। बाकी, हरी मरी फिर रही है, कपड़े लट्टे भी गंवारों जमादारीनों से, कभी खुरदुरा, तात का कुरता, अब फटा तब फटा पजामा, कभी राजस्थान गुजरात के गाँव से पच्चीस तीस रुपये में मिले बकवास घाघरे। शक्ल सूरत से उसकी मुफ़लिसी टपके और देखकर परिवार के आँसू।"[1]

[1] गीतांजलि श्री, रेत समाधि, पृष्ठ स. 33

हमारा समाज पितृसत्तात्मक धारा को अभी भी लिए हुए है। इस उपन्यास में भी अम्मा का बेटा जो एक अफसर है वह पितृसत्तात्मक विचारों से ग्रस्त है इसलिए बेटी घर छोड़ निकल पड़ती है खुद अपने अस्तित्व की तलाश में। वह पितृसत्तात्मक विचारों को पूरी तरह से खंडित करती दिखाई देती है। अपने पैरों पर खड़े होने और अपने मन मुताबिक अभिव्यक्ति के लिए पत्रकारिता का पेशा अपना लेती है। चुकी उसका भाई अफ़सर है, उसे ये सब पसंद नहीं आता। परंपरागत घर के सभी दायरें को तोड़कर बेटी घर को तो छोड़ती ही है, इसके साथ ही वह अपने प्रेमी के साथ बिना शादी रहती है। जिसे लिवइन रिलेशन कहा जाता है।

इस प्रकार देखे तो बेटी अपनी अस्तित्व के लिए घर से बाहर निकल आती है। वह स्वतंत्र विचारों वाली है। जिसे दुनिया के नियम- कायदें से फर्क नहीं पड़ता। अपना समाज के दायरें में, बंधन में न बंधकर स्वतंत्र रूप से जीती है। यह उसके भाई को असह्य है इसलिए पूरे उपन्यास में यह पाते है कि उन दोनों में मन- मुटाव बना रहता है। इस उपन्यास में बड़े पितृसत्तात्मक विचारों का प्रतीक है तो बेटी उन पितृसत्तात्मक विचारों का पूरी तरह से विरोध करती नज़र आती है।

बहू

'रेत समाधि' उपन्यास में बहू अपने अस्तित्व की खोज करती दिखाई देती है। लेकिन उसमें स्त्री चेतना नहीं होती है एक और वह घर की अन्य स्त्रियों से हीही इर्ष्या भाव रखती दूसरी ओर अपने अस्तित्व के लिए लड़ती, बहस करती, अपने में बदलाव करती नजर आती है। बहू उन स्त्रियों में आती है जिनको दूसरों के पास वो वस्तु क्यों है, इससे इर्ष्या होती है। इर्ष्या को परिभाषित करते हुए आचार्य शुक्ल कहते है कि "जैसे दूसरे के दुःख को देख दुःख होता है वैसे ही दूसरे के सुख या भलाई को देख भी एक प्रकार का दुःख होता है, जिसे इर्ष्या कहते है।"[2]

---

[2] आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चिंतामणि भाग-1, पृष्ठ स. 83

बहू रिबॉक के जूते पहनने लगती है। रीबॉक एक अमरीकी कंपनी है, रीबॉक जूते का जिक्र इस प्रकार है-"अब वह अपने नए रंगरूप में ही जाना जाता है और पीढ़ि दर पीढ़ि अपनी नयी किस्म से आगे बढ़ता है। जूता, न कि सांप। जूते का प्रकार। एक तलवों में कांटे तो दूसरे के तन पर सरंध्र और तीसरे का सोल गद्देडार जो गेंद की तरह कूदे है। यानी उसकी जाती प्रजाति और ताकतवर होती चली है, पृथ्वी को शिकंजे में कस लेती है।"[3] रीबॉक के जूते ही नहीं बल्कि मोंजे, टोपी आदि भी सभी जगह प्रचलित है और लोग उसे पहनकर अपने शान को बढ़ावा देते है।

बहू रीबॉक की जूते पहनकर अपने आप में आत्मविश्वास पाती है वह योगा सिखाती है और बाद में योगा सिखाने भी लगती है। इसका जिक्र उपन्यास में इस प्रकार होता है-"जिस दिन उसने रोबोक डाटे, वह खुदाबखुद लम्बी- लम्बी सैर करने लगी, दूसरे संगी- साथियों के साथ जॉगिंग में रम गयी, और मोहल्ले के बाग में योग- गुरु की शागिर्दी में योगासन भी चल निकला। चल निकला? ऐसा वैसा? कि दौड़ गया और छुट्टियों में जब बच्चों के स्कूलों की जरूरतों के आसपास की माँओं की फुर्सत थी, तो ये ही पुत्रवधु उनकी योग- गुरु हुई और अच्छा खासा समर और विंटर कोर्स कराने लगी।"[4] जैसा कि हम सभी जानते है कि हमारे समाज में बेटियों के लिए जितने कठोर नियम, उससे अधिक कठोर नियम एक पुत्रवधु के लिए है। बहू को इस रूप में दिखाकर लेखिका स्त्री विमर्श के एक और पहलू को सामने ला देती है।

वह अपने ही घर की स्त्रियों से इर्ष्या करती है कभी सास से, तो कभी ननद से। बड़े हैदराबाद के चारमीनार से साड़ी लेकर आते हैं। माँ के लिए भी और पत्नी के लिए भी पर पत्नी को माँ वाली साड़ी पसंद आती है। इसको उपन्यास में इस प्रकार दिखाया है-"अम्मा के कहा तुम्हीं पहनना मैं बूढ़ी घोड़ी इतनी नाच मटक वाली क्या पहनूँगी। पर बड़े ने पहनवाई और अम्मा प्यारी लगी। पत्नी का दाह होगा

---

[3] गीतांजलि श्री, रेत समाधि, पृष्ठ स. 34-35

[4] गीतांजलि श्री, रेत समाधि, पृष्ठ स. 35

जो चिंगारी बनकर उस पर दो चार छेद कर गया। धोबी ने गरम इस्त्री चला दी। फिर भी माँ उसे पहनती रहीं, उन छेदों को रफू कराके। और पत्नी कम से कम तीन चार साल तक उसी का फरमाइश मेरे हर दौर पे करती, या हैदराबाद से कोई आता जाता हो तो करती। जैसे सोते जागते उसे वही नैरकुंज जलाता हो। शायद अब वो उसी की अलमारी में टंगी होगी पर कुछ और तार- तार हो गयी होगी।"[5]

इस प्रकार हम पाते है कि बहू में स्त्री चेतना की कमी मिलती है वह अपने बेटे के कहने पर या इर्ष्या में ये सब करती है। बहू में उस प्रकार की स्त्री चेतना देखने को नहीं मिलती जिस प्रकार माँ और बेटी में है। बहू के अंदर स्त्री चेतना नही है, पर कहीं न कहीं बहू अपने अस्तित्व की तलाश करती दिखाई देती है।

निष्कर्ष निष्कर्षत: हम कह सकते है कि 'रेत समाधि' उपन्यास में हम पाते है कि माँ, बेटी और बहू तीनों ही अपने अपने जीवन मैं अपनी- अपनी तरह से अपने अस्तित्व को ढूंढने में लगी है और कही हद तक वह सफ़ल भी होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. श्री, गीतांजलि, रेत समाधि, राजकमल प्रकाशन, (2022), नई दिल्ली

सहायक ग्रंथ

1. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, (2022), नई दिल्ली
2. श्री, गीतांजलि, अनुगूंज, राजकमल प्रकाशन, 2006), नई दिल्ली

---

[5] गीतांजलि श्री, रेत समाधि, पृष्ठ स. 188

वक्त

– पूजा देवी

एक वक़्त हुआ करता था

जब जेब में बहुत वक्त हुआ करता था
बेपरवाह मीलों यूं ही चलते रहते थे
यारों ने संग यारियां बेशुमार निभाया करते थे
सितारों से सजे कैनवास पे ख्वाबों के रंग बिखेरते थे
एक वक़्त हुआ करता था
जब रद्दी के भाव वक्त बिकता था.

अब हाल कुछ यूं है
के पाबंदी खुलके सांस लेने में भी है
रास्ते जीने की नहीं मंजिल तक पहुँचने की जल्दी है
ज़रूरी काम का नाम देकर यारियों को बीच में ही छोड़ देने की जल्दी है
ख्वाब देखने की क्या, गरम चाय से जीभ जल जाये
पर कप खाली करके निकलने की जल्दी है
वक़्त तो जेब में बहुत रखके चले थे
जो जी लिए वो रह गए
बाकी जाने कैसे रेत से फिसल गए।

*****

लड़की आगे बढ़ी नही!
उरने को पूरा आसाम दिया है
पर पैरो की बेरे अभी हटी नहीं
लड़की आगे बढ़ी नहीं !
हाथो मैं कलम तो थमा दिया
नौकरी किसी को करवानी nhi
लड़की आगे बढ़ी नहीं!
रातो को रास्ते पे चल तो रही हैं
पर हर रोज किसी न किसी का शिकार बन रही रही .....
लड़की आगे बढ़ी नहीं !
घूंघट हटा दिया गाया
पर्दे से बाहर दिखा दिया गया हैं
दौरने को कहा उससे
और लगाम भी लगा दिया गया हैं
आज भी समाज " लड़की हो"
बोल k लहजा सीखा रही हैं
लड़की आगे बढ़ी नही !

प्रियंका

उड़ान

खोल दे पंख मेरे, कहता हैं परिंदा,
अभी और उड़ान बाकी हैं,
जमीन नहीं हैं मंजिल मेरी
अभी पूरा आसमान बाकी हैं।
जब भी तुम्हारा हौसला
आसमान तक जाएगा,
याद रखना कई ना कोई पंख
काटने जरुर आएगा।

-पूजा राय

अनुवाद का महत्व- आज के परिप्रेक्ष में
(एक लघु आलेख)

- संचिता

आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुनः कथन' से लेकर आज के 'ट्रांसलेशन' तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में 'स्वांतः सुखाय' माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है।

दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद प्राचीन काल की व्यक्ति परिधि से निकलकर आधुनिक युग की समष्टि परिधि में समा गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

बीसवीं शताब्दी के अवसान और इक्कीसवीं सदी के स्वागत के बीच आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिन्तन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों। हमारे देश में अनुवाद का महत्त्व प्राचीन काल से ही स्वीकृत है। आज के परिप्रेक्ष में बात करें तो आज अनुवाद व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है। आज के सिमटते हुए संसार में सम्प्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एक मात्र अचूक साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकनेवाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और सुदृढ़ बना सकते हैं। भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग मे अनुवाद की आवश्यकता असंदिग्ध है।

हमारे दैनिक जीवन में अनुवाद का बहुआयामी तथा विस्तृत महत्व है। अनुवाद आधुनिक युग की अनिवार्य आवश्यकता है। विश्व में अनेक भाषाएं तथा बोलियां बोली जाती हैं, ऐसी स्थिति में अनुवाद वैश्विक विचार-विमर्श की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हमारे राष्ट्र भारत की बात करें तो भी स्थिति काई अलग नहीं है। हमारी 22 मान्यता प्राप्त भाषाएं हैं इसे देखते हुए राष्ट्रीय एकता के लिए अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हिन्दी तथा अंग्रेजी संपर्क भाषा के रूप में सर्वाधिक उपयोग में लाई जाती हैं। विभिन्न टी वी चैनलों के कारण भारत में हिन्दी तथा अंग्रेजी को समझने, बोलने एवं लिख पाने वाले लोगों की संख्या में तीव्र बढ़ोतरी हो रही है। भारतीयों द्वारा विभिन्न देषों में जा कर व्यापार तथा जीवकोपार्जन करने के कारण भी हिन्दी तथा अंग्रेजी का प्रसार हो रहा है। आज अनुवाद का महत्व इसलिए भी ज्यादा हो गया है चूंकि शिक्षा का स्तर लगातार बढ़ रहा है। जिससे मानव की आज की हिन्दी जिज्ञासु प्रवृति और अधिक बलवति हो रही है। आज मानव दूसरी भाषा एवं संस्कृति में उपलब्ध ज्ञान, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, साहित्यिक,

असमिया कृष्णकाव्य धारा एवं सूरसागर

लोङ्जम रेस्तिना देवी

इंफाल, मणिपुर

हिंदी की भक्तिकालीन कविता की कृष्णकाव्यधारा के प्रमुख कवि महात्मा सूरदास का प्रभाव भारत की अन्य भाषाओं और संस्कृतियों पर पड़ा | कहने का आशय यह कि सूर की कविता की व्याप्ति हिंदी भाषी क्षेत्रों के साथ-साथ सुदूर हिंदीतर क्षेत्रों तक पहुंची | असमिया मध्यकालीन नव्य – वैष्णव भक्ति आन्दोलन पर भी सूरदास का गहरा असर लक्षित किया जा सकता है | असमिया भाषा एवं साहित्य के मर्मज्ञविद्वान, मणिपुर विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के अध्यक्ष रह चुके प्रो. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' ने उचित ही लिखा है – " असमिय साहित्य में मध्यकालीन नव्य वैष्णव भक्ति आन्दोलन के, जो मूलतः कृष्ण भक्ति आन्दोलन है, प्रवर्तक थे – श्रीमंत शंकरदेव (1449 – 1568 ई.) अज्ञात नहीं है कि शंकरदेव साहित्यकार के साथ- साथ एक महत्वपूर्ण विचारक भी थे | अतः उन्होंने असमिया समाज में कृष्णभक्ति धारा के वैचारिक और दार्शनिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया | इस मध्यकालीन असमिया कृष्णभक्ति धारा के विकास में सर्वप्रमुख योगदान शंकरदेव का रहा, अनंतर जिन लोगों ने कृष्णभक्ति की धारा को अजस्र रूप में प्रवाहित करने में अपना योगदान दिया उनमें माधवदेव, दामोदरदेव, हरिदेव और नारायण ठाकुर का नाम आता है | जब हम तुलनात्मक दृष्टि से हिंदी की कृष्णभक्ति धारा और असमिया कृष्णकाव्य धारा का अध्ययन करते है तो यह तथ्य सामने आता है कि जहाँ हिंदी कृष्णकाव्य धारा ईश्वर के सगुण रूप की आराधना करती है, वहीं दूसरी ओर असमिया कृष्णकाव्य धारा ईश्वर के निर्गुण और निराकार रूप को अपना अवलम्ब मानती है | एक और बड़ा अंतर जो परिलक्षित होता है वह यह है जहाँ सूर की कविता में राधा को विशेष महत्व प्राप्त है वहीं असमिया कृष्णकाव्य धारा में राधा को उस रूप में चित्रित नहीं किया गया है | असम की कृष्णकाव्य धारा राधा को उसी रूप में लेती है जैसा की श्रीमद भगवत गीता में वर्णित है | इस कथ्य का समर्थन करते हेतु प्रो. अमरनाथ कहते है –

" प्राचीन पुराणों में केवल भागवत पुराण में गोपाल कृष्ण की कथा सम्यक रूप से वर्णित की गई है परंतु उसमें भी राधा का नामोल्लेखन तक नहीं हुआ है | पदम और सबसे अधिक ब्रहावैवर्त पुराण में ही राधा – कृष्ण की प्रेम गर्भित कथा विस्तार से दी गयी है | " राधा यहाँ एक सामान्य सी गोपी मात्र है जिसका चित्रण मात्र प्रेमिका के रूप में हुआ है |

असम को जो कृष्णभक्ति साहित्य है, उसका मूल उत्स ' श्रीमद्भागवत और गीता ' है | यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि असमिया कृष्णभक्ति के विकास में चार संहतियों – ब्रह्म संहति , पुरुष संहति, काल संहति और निका संहति का महत्वपूर्ण योगदान है | एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि शंकरदेव और माधवदेव का साहित्य असमिया कृष्णभक्ति साहित्य का सर्वाधिक उज्ज्वल पक्ष प्रकाशित करता है | असमिया कृष्णभक्ति का स्वरूप जिन ग्रंथों से निर्मित होता है वे हैं भक्ति रत्नाकार, भक्ति प्रदीप, भक्ति रत्नावली, नामघोषा, काव्य ग्रंथों में कीर्तनघोषा, महाभागवत, बरगीत, अंकीय नाटक (शंकरदेव) अंकीय नाट (माधवदेव) का उल्लेख दिया जा सकता है | प्रो. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' ने असमिया कृष्णभक्ति साहित्य की जिन विशेषताओं को लक्षित किया है वे हैं – चार सत्य, निर्गुण भक्ति, आराध्य देव, एकशरण, दास्यभाव, राधा की अस्वीकृति, विग्रह पूजा के प्रति उदासीनता, सिंहासन और थापना, नाम कीर्तन | अतः यह कहा जा सकता है कि असमिया कृष्णभक्ति का आधार भगवत और कृष्ण की आराधना हो यहाँ भक्ति का स्वरूप निर्माण है | यहाँ यह भी ध्यान रखना होगा कि निर्गुण का अर्थ गुणहीन नहीं वरन् गुणातीत होना है | ऊपर से भले ही यहाँ विरोध प्रकट होता है किंतु वस्तुतः आतंरिक रूप से कोई भी विरोध नहीं है | असमिया कृष्णभक्ति साहित्य में एकमात्र आराध्य देव श्रीकृष्ण हैं जिनके नाम रूप, गुण और लीला का सुंदर एवं जिवंत वर्णन इस साहित्य में यत्र – तत्र – सर्वत्र विकीर्ण है | इस संदर्भ में यह भी लक्षित किया जा सकता है कि कृष्ण का एकमात्र आराध्य देव मानने के कारण ही यहाँ एक प्रकार से राधा की अस्वीकृति है | असमिया कृष्णभक्ति पूजा के संदर्भ में शंकरदेव ने मूर्तिपूजा के रूप में जड़ पूजा का निषेध किया है | लेकिन सिंहासन और स्थापना की स्वीकृति यहाँ है |

जब हम असम के कृष्णभक्ति साहित्य और सूरसागर का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि दोनों प्रकार की रचनाओं पर भागवत का प्रभाव तो है किंतु उनमें दोनों के रचनाकारों ने अपना मौलिक योगदान भी प्रस्तुत किया है | यह एक महत्वपूर्ण बात है जिसकी तरफ हमें ध्यान देना चाहिए | महापुरुष शंकरदेव ने अपने 'महाभागवत' और सूरदास ने 'सूरसागर' में अनेकत्र कृष्ण की लीलाओं का गान किया है | शंकरदेव की पंक्तियाँ हैं –

" ताते सुन शिशुमति, कृष्ण पावे फरी नती;

विरचिला शंकर पयार।"

सूरदास भी लिखते हैं –

" सब विधि अगम अगोचर ताते सूर सगुन लीला पद गाखौ "

विनम्रता और ईश्वर के प्रति समर्पण दोनों कवियों के यहाँ देखा जा सकता है –

"प्रथम स्कंधर परा द्वादश पर्यन्त, कहिला राजाता महा मुनीन्द्र महंते।

सक्षेप करिया उद्धारिया तार सार, शंकर रचिला कृष्णचरित्र पयार॥ "

असमिया कृष्णभक्ति साहित्य और सूरसागर दोनों जगहों पर कृष्ण के ब्रह्म रूप की स्वीकृति है। असमिया साहित्य की एक पंक्ति द्रष्टव्य है –

" कृष्णरूपे परम ईश्वर, भेलि लीला अवतार "

सूरदास ने भी लिखा है –

" ब्रह्म धार्यौ कृष्ण अवतार "

असमिया कृष्णभक्ति साहित्य और सूरसागर दोनों रचनाओं में ईश्वर और

जीव के संबंधों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। दोनों स्थलों पर ईश्वर और जीव में अभेद संबंध की स्थापना है अर्थात् ईश्वर और जीव एक हैं, यह मान्यता है, एक बरगीत की पंक्तियाँ देखने योग्य हैं –

" हामु जल जीव शिव तेरि अंशा,

काहे ओहि मोह बन्ध।

सूरदास ने भी लिखा है –

" रह्यो घट-घट व्यापि सोई ज्योति रूप अनूप "

इसी प्रकार इस संसार और जगत के संदर्भ में भी असमिया और सूरसागर में विवेचन किया गया है। दोनों स्थलों पर संसार को सारहीन, नाशवान और माया मोह से युक्त बताया गया हैं। पंक्तियाँ देखने योग्य हैं –

- इटो चार संसारत, नाहिं किछु सार तत्व,
- अथिर धन, जन, जीवन, यौवन; अथिर यहु संसार

सूरदास ने भी लिखा है –

" मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया, मिथ्या है जो यह देह कहौ क्यों हरि बिसराया। "

असमिया कृष्ण भक्ति काव्य और सूरदास के काव्य के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जहाँ दोनों कृष्णरूपी केंद्र के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं और उन्हीं के स्वरूप और लीला को अपना वर्ण्य विषय बनाते हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ विभिन्नताएँ भी परिलक्षित की जा सकती हैं। सूर के यहाँ जहाँ कृषि और चरागाही संकृति तथा

कृष्ण की बालसुलभ चेष्टाओं का प्राचुर्य हैं, वहीं दूसरी ओर असमिया कृष्ण काव्य कहीं अधिक वैचारिक और दार्शनिक है। इस संदर्भ में प्रो. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' ने बिलकुल ठीक लिखा है – " असमी-कृष्ण भक्ति काव्य और सूरसागर की भावभूमि एक होने के कारण उनमें समांतरता सर्वत्र वर्तमान है। उनमें समता के अनेक तत्व हैं। फिर भी प्रकृति और उपलब्ध में दोनों भिन्न हैं। प्रथम में जहाँ ब्रह्म कृष्ण का निरंतर अनुकीर्तन है वहाँ द्वितीय में मानव सुलभ चेष्टाओं और उनके अपरितीम सौंदर्य का गायन है। दोनों का विधायक धर्म भक्ति है, निषेधात्मक क्रांति नहीं। निषेध की अपेक्षा उनमें विधि के तत्व अधिक है, दोनों का मूल स्वर मानवतावादी है। "

एक वर्षीय वाकसेतु स्नातकोत्तर अनुवाद पाठ्यक्रम
ONE YEAR VAKSETU PG TRANSLATION COURSE

उद्देश्य:

- अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के लिए प्रशिक्षण दिलाना
- सूचना आर संचार प्रोद्यौगिकी के युग में अनुवाद की उपादेयता का बोध कराना
- अनुवाद प्रक्रिया का प्रयोग सीखाना
- भूमंडलीकरण के युग में अनुवाद की रचनात्मक भूमिका स्पष्ट कराना
- कार्यालयी अनुवाद का व्यावहारिक प्रशिक्षण
- बैंक, बीमा, संसद, विधि, विज्ञापन, पत्रकारिता के अनुवाद से परिचित कराना, अभ्यास कराना
- प्रिंट मीडिया एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया के अनुवाद से परिचित कराना
- प्रयोजनमूलक हिंदी, कोश विज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली में दक्षता प्रदान कराना
- अनुवाद का सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान दिलाना
- अंग्रेजी हिंदी में समांतराल रूप से बोलने, लिखने हेतु दक्ष बनाना एवं सरकारी नौकरी के लिए तैयार कराना

प्रवेश पात्रता:

- किसी भी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक डिग्री अनिवार्य
- स्नातक स्तर पर अंग्रेजी विषय अनिवार्य
- डिग्री अंतिम सेमेस्टर में अध्ययनरत फ्रेश विद्यार्थी (शर्तानुसार)

Shabda Bharati
Hindi Sansadhan kendra

Saptarshi Path, Income Tax Colony, Bongaon I Beltola , Ghy - 28

"चीरु के लोकगीतों में सांस्कृतिक अध्ययन"

-सलाम पुष्प देवी

लोकगीत मनुष्य समाज के एक अटूट अंग होते हैं | लोकगीत में संपूर्ण लोक वन प्रकट होते हैं, अर्थात इनमें वहाँ के लोगों की सुख-दुख, रीति-रिवाज, परंपरा, न-पान, आचार-विचार, रहन-सहन आदि सब दर्शाते हैं | इस तरह लोकगीतों में लोक साधारण की भावना एवं संवेदना की अभिव्यक्ति हैं | लोकगीत मनुष्य जीवन को मनोरंजन, खुशी, उत्साह, प्रेम, एकता आदि को प्रदान करने वाले एक ईश्वर की देन कहा सकते हैं |

कई विद्वानों ने लोकगीत के बारे में कई सारे परिभाषा दिए हुए हैं | जैसे-

१) डॉ.चिन्तामणि उपध्याय - "लोकगीत मनुष्य की प्राकृत भावना की अभिव्यक्ति से जन्म है, आदिम वातावरण में पला है और काल की गहराइयों से उठकर प्रौढ़ता को प्राप्त हुआ है |"

२) डॉ.तेज नारायण लाल - "लोकगीत हमारे जीवन विकास के इतिहास हैं |"

३) कृष्णधर - "लोकगीत रस से परिपूर्ण बोल हैं |"

४) गांधी जी के अनुसार - "लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं, नदियाँ गाती हैं, फसलें गाती हैं, उत्सव और मेले, ऋतुएँ और परम्पराएँ गाती हैं |"

५) रामचन्द्र शुक्ल - "लोकगीतों में जन-जीवन की सच्ची झांकी निहित है |"

६) फेयरी के अनुसार - "The primitive spontaneous music had been called folk song."

निष्कर्ष - सभी परिभाषाओं को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि लोकगीत साधारण अलिखित होते हैं और रचयिता अज्ञात होता है | यह मौखिक परंपरा में जीवित रहते हैं | संक्षेप में हम कह सकते हैं कि "लोक मानस की अभिव्यक्ति करने वाले गीत को लोकगीत कहा जा सकता है | " लोक समूह में प्रचलित गीत ही लोकगीत होते हैं |"

अतः मणिपुर में कई सारे जनजातियाँ रहते हैं | इनमें से चीरु जनजाति भी एक ऐसी जनजाति है जो उनके कई सारे लोकगीत रहते हैं |इन लोकगीतों में चीरु जनजाति के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक रूप देखा जा सकता है | मणिपुर की चीरु जाति के लोकगीतों को निम्न प्रकारों से विभाजित किया जा सकता है, जैसे –

१) प्रकृति संबंधी गीत
२) पर्व एवं त्योहार संबंधी गीत
३) श्रम संबंधी गीत
४) बाल संबंधी गीत
५) प्रेम संबंधी गीत
६) संस्कार संबंधी गीत |

१) प्रकृति संबंधी गीत - मणिपुर के चीरु जनजाति ज़्यादातर पहाड़ी इलाकों में रहते हैं। इसलिए वे प्राकृतिक सौंदर्य के बारे में एवं प्रकृति से संबंधित गीत गाये जाते हैं। जैसे

चीरु - जरलाह

इह...खुला-खुला... इह... इमैमौनी अरे ?
रोडबोनहाइ चारोट फाइबै इहा।
इह... चुडडा सी अरतम्ना इह... खौंटिन
जोडतिन जोड इह... लाइमाक,
इह...शोरथा पुम खाद खौंटिनजोड इहजोइ इह,
हौराइले, थाहाइले जड़ फा निशोक, थावारही।
हौइ सा-सा, हौइ सा-सा।

मणिपुरी - मेरा थागी ईशै

हो अराप्पगी मैडालसिबु करिगी मैडालनो?
रोडबोन खुनगी पामलौ मैथाबगी मैडाल्ला
थाजागी मेडला मडालना नमहटखे
खुन-खुन्दता नट्टना मालेम शिन्ना
थाजागी मेडला मडालना कुपशिनखे
होइ सा-सा, होइ सा-सा।

हिन्दी - कार्तिक महीने का गीत

दूर दूर जो प्रकाश दिख रहे हैं
ये किसके प्रकाश है
रोडबोन गाँव के पामलौ जलाने का प्रकाश है क्या
आकाश में तिमतिमाती तारों के प्रकाश भी
जय कर लिया है चाँद की शीतल चाँदनी ने
गाँव-गाँव, सारे जहान
छा गए शीतल चाँदनी
होइ सा-सा, होइ सा-सा।

(होइ सा-सा :- गाने के अंतिम में गाने वाले एक सूर)

इस लोकगीत में कार्तिक महीने की चाँदनी रात के सौंदर्य का वर्णन किया जाता है | चीरु के लोग यह गीत बहुत हर्षोल्लास के साथ गाते हैं | इस प्रकार के गीतों में ' वर्षा के गीत ' , ' जउम वृक्ष के गुणगान ' , ' फूलों के गुणगान ' , ' एक स्थान के गुणगान ' आदि भी गाये जाते हैं |

२) पर्व एवं त्योहार संबंधी गीत - चीरु जाति के ओठों पर पर्व-त्योहारों से संबंधी लोकगीतों ने चीरु जाति की धड़कनों को अज्ञात काल से संभाला | इस तरह के लोकगीतों में कई सारे गीत आते हैं | जैसे –

चीरु - राउ होइ लाह -१

अपार रे चाङ निडे
पारतिन ने चाङ निडे
अनथिडे नोलिगाह
अनथिडे नोलैअ
लैसिकेह पार चाङ् रोङ् |
थिङलेन थिडा चुरोङति
जुमकोक जोङमो रेनरैअह
थिङलेन थिडा चुरोङति |

मणिपुरी - कुम्हैदा शकनबा – १

लै ओइना शातचनिङई ऐदि
पुम्नमकपु शुम्हटपी लैराङ ओइना
ऊपाल मागी मरुम थूपना
निङथिरबी लैराङ ओइना |
कोकिल चेकलानि ऐदि
अचौबा उपालतबु पामजबा
उपालदता कायदोङजनिङबी
नोङगौबिगुम्बीनि इखौ लाङजबी |

(त्योहार में युवतियाँ द्वारा गाने वाले गीत)

हिन्दी - त्योहार में गाने वाले गीत – १

पुष्प की तरह खिलना चाहती हूँ मैं
सबको मन मोहित करने वाली पुष्प की तरह
वृक्ष के छायाओं में छिपकर
सौंदर्य पुष्प की तरह |
कोयल पक्षी हूँ मैं
जो चाहने वाले बड़े वृक्ष को ही
रहना चाहती हूँ वृक्ष पर ही
प्यासी चातक की तरह |

इसके अलावा नृत्य करते समय गाने वाले गीत, त्योहार में गाने वाले गीत -२...., हर्षोल्लास को व्यक्त करने में गाने वाले गीत आदि होते हैं |

३) श्रम संबंधी गीत - मनुष्य जीवन श्रम करके जीवन व्यतीत करते हैं | चीरु जाति भी श्रम करते समय गाना गाया जाता है | जैसे-

चीरु - बाइपो सुकना लाह

इअ कोठा मै हाइ
कौवा मै हाइ अजोडा थाड रिजामो इअ
इअ इ कोवा मै हाइ अजोडा थाड रिजामो इअ
अतुक ताका सोजोकासेम रिजामो इअ
अराम मे सङ इन ने सङ
कुमतोले सङ इन सङ
कुमतोले सङ, इन सङ
फाइ फोले राम सेम सङ |

(मिराम्मा मितैताङ हाइना सङ होड़ चोइले इफोनाला)

मणिपुरी - याम शुबदा शकनबा

हो कनानो नङबु
कना कनानो नखोयसे
कयाम लूबा वा ओइरबनो
लाक्लगा हाइरो लाउ |
लम लमदगी पुरकपा फौ
कुम अमगी कारकपा कैनुडगी फौ
तल (याम)ओइना शुरागा मयामदा पीजगे |

(लौ लोकपा लोइरगा याम शुबदा शकनबा ईशै)

मणिपुरी - आटा बनाते समय गाने वाले गीत

अरे कौन है तू
कौन- कौन हो तुम
कितनी कठिन है बात
आकर बताओ |
हर जगह से लाये हुए धान
एक वर्ष की इकठित धान
रोटी (आटा) बनाके खिलाएँगे सभी को |

इस तरह श्रम के गीतों में शिकार करते समय गाये जाने वाले गीत, पामलौ (पहाड़ों में स्थित कृषि स्थान) करते समय गाये जाने वाले गीत आदि भी होते हैं |

४) बाल संबंधी गीत - चीरु लोकगीतों में बाल संबंधी गीत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं | जैसे - लोरी गीत, खेल-कूद के गीत, बूढ़े और बच्चे दोनों साथ में गाने वाले गीत आदि भी हैं |

लोरी गीत - यह गीत बच्चे को सुलाते समय गाते हैं |

चीरु - नाइ ओइना ला – ३

हुम हुम हुम
नुनु पा पा होडराडनी
नाइओ मिक मिक थोराडरो
हुम हुम हुम
मुमु होडफा सोकजोइमो
पापा होडफा सोकजोइमो
फाइलें बुका सेचामाराम
बोड-बोड
हुम हुम हुम।

मणिपुरी - नाओशुम ईशै – ३

हुम हुम हुम
नावा ओइबा ओइबी – ओ
पलेम इमा लाकलनि
पन्थौ इपा लाकलनि
हुम हुम हुम
तूमखून ताल्लो तूमखून ताल्लो
शोडला मोडशोड मरक्ता
षन लाबाना खोडलि बोड्-बोड्
हुम हुम हुम।

हिन्दी - लोरी गीत - ३

हुम हुम हुम
छोटे-छोटे लाल-ओ
आ जाएँगी माँ
आ जाएँगे पिता
हुम हुम हुम
सो जा सो जा
झाड़ियों के बीच
मो-मो करके रम्बाते हैं बैल
हुम हुम हुम।

इस लोकगीत में बच्चे के भाई या बहन अपने माता-पिता के इंतजार करते हुए उनको सुलाते हुए गाये जाने वाले गीत हैं। यह गीत वात्सल्य रस से ओतप्रोत है।

५) प्रेम संबंधी गीत - प्रेम मनुष्य जीवन के सबसे जरुरी भावों में से एक हैं। इसके अंतर्गत युवक-युवतियाँ द्वारा गाये जाने वाले गीत, मनोरंजन गीत, प्रेम-विराह के गीत आदि मिलते हैं। जैसे –

चीरु - सिमनु ताडसा रोफोना ला
सिमनु : नङ ले कै नुमपोक हिरुसुर लाइनोनिङ् रेसेनराङ् रोइ।
ताडसा : ओइ रेसेननोरोइ रेथेडा कुनुमपोक नडनि।
सिमनु: ताडसा : ओइये: नादिन ना नुमपोक ही तायइङ् तैयार खङा पारसुमरोइ।
ताडसा : राभानले रेहलै अदिअह खोताडभा ओ पारसुमराङ्।
सिमनु : थिडलिङ् रुइयाम कारहि पारसुमरोइ ।

मणिपुरी - लैशा-पाखडना शक्नबा

लैशा : ओइरोइदौबा नुङशि मडलान्ने कायनरसि
पाखङ : ओइ, कायनरोइसि ओइदबा नट्टे नुङशिनबा
लैशा-पाखङ : ओइ, नुडशिनखिसि ऐखोय खोङ्गुलमेल्लैगुम उशादा पून्ना शाट्मिन्नखिसि
पाखङ : अतिया मालेम अनीदा शाट्मिन्नगनि
लैशा : उपाल उरीलक्ता शाट्मिन्नसि।

हिन्दी - युवक-युवतियाँ द्वारा गाये गीत
युवती : व्यर्थ की प्रेम सपने है, अलविदा
युवक : ओइ, अलविदा नहीं व्यर्थ नहीं है प्यार
युवक-युवती : ओइ, प्यार करेंगे हम खोङ्गुलमेल्लै की तरह तरु पर खिलेंगे साथ-साथ
युवक : खिलेंगे एक साथ सारे जहान में
युवती : खिलेंगे एक साथ वृक्ष-लताओं के बीच।

(खोङ्गुलमेल्लै - एक प्रकार की फूल जो पीले रंग में वृक्ष के तरु पर गुच्छे में खिलते हैं, ओरकिट)

६) संस्कार संबंधी गीत - चीरु जाति में भी जन्म, विवाह और मृत की प्रमुख संस्कार है। इसके साथ घर के उट्घाटन करते समय गाये जाने वाले गीत और विराह-गीत आदि हैं। जैसे-

चीरु - क) अओइना लाह – २
रोकनिङ ओह कानाइ ओह
रोकनिङ ओह कानाइ ओह
सो सुम मा खेङ् काबुकाइ अ
रोकनिङ ओह कानाइ ओह,
रोकनिङ राङ काति अ
रोकनिङ राङ काति अ
रोभा इनकोङ कासिनलाइ पे
रोकनिङ राङ काति अ।

(अनुना लोइना लाह)

मणिपुरी - क) तेङ्था ईशै – २
रोकनिङ्-ओ इमोम नुङ्शिबी-ओ
रोकनिङ्-ओ इमोम नुङ्शिबी-ओ
मीगी फौसु लङ्लगा थाजगनि।
रोकनिङ्-ओ इमोम नुङ्शिबी-ओ
रोकनिङ् नङ्गीदमक शाबिगनि
रोकनिङ् नङ्गीदमक शाबिगनि
पाया पनम्ना शम शाबिगनि
रोकनिङ् नङ्गीदमक शाबिगनि।

(रोकनिङ्ना लैखिदबदामाना तेङ्थारगा शकपा)

हिन्दी - क) विराह-गीत – २

रोकनिङ्-ओ प्यारी-बेटी
रोकनिङ्-ओ प्यारी-बेटी
काम करके हर घरों में
शादी कराएँगे तुमको।
रोकनिङ्-ओ प्यारी-बेटी
रोकनिङ् बनाएँगे तुम्हारे लिए
रोकनिङ् बनाएँगे तुम्हारे लिए
बनाएँगे पाया पनम से शम तेरे
रोकनिङ् बनाएँगे तुम्हारे लिए।

(रोकनिङ् के मरने पर माँ द्वारा विराह में गाये जाने वाले गीत)
(पाया पनम - बाँस से बने हुए पतला-सा बाँस का टुकड़ा)
(शम - बाँस से बना हुआ एक प्रकार के टोकरी जो सिर और पीट पर उठाकर ले जाता है।)
यहाँ माँ अपनी बेटी की मृत्यु पर गायी जाती हैं।
चीरु - ख) इन लोनालाह

इन होइ इन होइ जोम
चेपा इनहोइ जोम
चेपा इनहोइ जोम
चेपा तूव इय।

मणिपुरी - ख) यूम शङ्गाबगी ईशै
यूम लैरे नुंङाइरबा यूम
लैरे याइफरबा यूम
होइ सा-सा
हराओना लोइशिल्लबा यूम
होइ सा-सा।

हिन्दी - ख) घर उट्घाटन-गीत

घर है आनंदित घर
घर है अच्छे घर
होइ सा-सा
आनंद से बनाए हुए घर
होइ सा-सा |

इस तरह चीरु लोकगीतों में पशु-पक्षियों से संबंधित गीत, युध्द से संबंधित गीत, रिश्तेदारों से संबंधित गीत, विवाहित बेटी से संबंधित गीत, धर्म-संबंधी गीत, फूल से संबंधित गीत आदि कई सारे गीत प्रचुर मात्रा में मिल जाते हैं |

चीरु लोकगीतों की भूमिका इस संसार में बहुत बड़ी है | चीरु जनजाति आज भी इस तरह के गीत गाते रहते हैं |

संदर्भ सूची –

१) चीरुगी खुनुङ ईशै - हाओबम नालिनी – कल्चरेल फोरम, मणिपुर - २०२३ |
२) महिप पत्रिका - डॉ. लनचेनबा मीतै – मणिपुर हिन्दी परिषद, इम्फाल मार्च, २०१५ |
३) मणिपुरी लोकसाहित्य - केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा |
४) इंटरनेट आदि |

अनुवाद : अवधारणा एवं आयाम

- डॉ. लोइ्जम रोमी देवी

अनुवाद शब्द का अर्थ है एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में बिना उसका अर्थ परिवर्तन किए हुए कहना | अनुवाद को अंग्रेजी में Translation कहते हैं | अनुवाद के लिए भाषांतरण, उल्था, तजुर्मा और रूपांतरण आदि संज्ञाओं का प्रयोग भी किया जाता है | अनुवाद शब्द के अर्थ को स्पष्ट करते हुए प्रतिष्ठित विद्वान प्रो. सत्यदेव मिश्र लिखते हैं :- " किसी के कहने के उपरान्त कहना या पुनः कथन, अनुकथन या अनुवचन |"

1 वस्तुतः अनुवाद मुख्यतः दो प्रकार का होता है :- 1. शब्दानुवाद एवं 2. भावानुवाद | ड्राइडन ने अनुवाद का एक तीसरा प्रकार अनुकरण भी माना है | शब्दानुवाद एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में हू ब हू कहना है | अनुवाद का यह प्रकार बहुत अच्छा नहीं माना जाता है | यद्यपि वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में अनुवाद करते समय शब्दानुवाद ही अच्छा माना जाता है | इस संदर्भ में प्रो. सत्यदेव मिश्र लिखते है –"इस प्रकार के अनुवाद में स्रोत भाषा की शाब्दिक इकाइयों के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य और समानार्थी शाब्दिक इकाइयों का चयन किया जाता है | न्याय, विधि, बैंकिंग, वाणिज्य, विज्ञान, तकनीक, प्रौद्योगिक आदि में इस प्रकार के अनुवाद का आश्रय लिया जाता है |" 2 इसका कारण यह है कि कार्यालयी अनुवाद या वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों के अनुवाद में भाव के स्थान पर तथ्य की प्रधानता रहती है | इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि तथ्यों के अनुवाद में अनुवादक बिलकुल हस्तक्षेप नही कर सकता | भावानुवाद रचनात्मक लेखन की विधाओं में अधिक उपादेय है | किसी एक भाषा में लिखी हुई कविता को हम दूसरी भाषा में बिलकुल वैसे ही रूपांतरित नहीं कर सकते हैं | अनुवाद मूलतः और अंततः स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण है | विषयवस्तु के आधार पर अनुवाद को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है | पहला साहित्यिक अनुवाद और दूसरा साहित्येतर अनुवाद | साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद, कथासाहित्य का अनुवाद और कथ्येतर गद्य की विधाओं की अनुवाद को शामिल किया जा सकता है | साहित्येतर अनुवाद के अंतर्गत वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों का अनुवाद, वाणिज्य, संचार एवं सूचना तथा प्रशासन एवं कानून से संबंधित विषयों का अनुवाद समाहित है |

प्रतिष्ठित विद्वान प्रो. जी गोपीनाथन इस संदर्भ में लिखते हैं – ''काव्यानुवाद पूर्णतः पुनः सृजन की प्रक्रिया है | इसी कारण से काव्यानुवाद कभी व्याख्या, टीका, रूपांतरण, छाया, प्रतिध्वनि, भाषांतरण आदि हो जाता है | अनुवाद के डच विद्वान जइम्स होल्म्स के अनुसार अनुवाद मूलतः एक व्याख्या है और किसी कविता का अनुवाद वास्तविक काव्यानुवाद से लेकर अन्य भाषा में लिखित उसी पर आधारित कविता या आलोचना तक हो सकता है |'' 3 साहित्यिक अनुवाद और साहित्येतर अनुवाद में अंतर स्पष्ट करते हुए प्रो. जी गोपीनाथन अपनी कृति 'अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग' में लिखते हैं –

	''साहित्यिक अनुवाद	साहित्येतर अनुवाद
1.	वैयक्तिक, कलापरक, आलंकारिक शैली	निर्वैयक्तिक, अनालंकारिक, वस्तु- निष्ठ शैली
2.	अर्थ के नष्ट होने की संभावना ज्यादा	अर्थ के नष्ट होने की गुंजाइश कम
3.	भावानुवाद महत्त्वपूर्ण	शब्दानुवाद प्रायः आवश्यक	
4.	पारिभाषिक शब्द अनिवार्य नहीं	पारिभाषिक शब्द अनिवार्य
5.	पुनः सृजन आवश्यक	पुनः सृजन अनिवार्य नहीं
6.	घटाया-बढ़ाया जा सकता है	घटाना-बढ़ाना प्रायः असंभव
7.	परिनिष्ठित/आंचलिक/ग्रामीण/ अभिव्यंजनापरक भाषा	परिनिष्ठित, सूचनापरक भाषा	
1.	अनुभूति, रसात्मकता/समतुल्य प्रभाव प्रामाणिक, अर्थस्पष्टता, आवश्यक		पठनीयता, बोधगम्यता पर्याप्त |''4

अनुवाद का बहुत गहरा संबंध संस्कृति से है | इसीलिए यह कहा जा सकता है कि अनुवाद वस्तुतः एक सांस्कृतिक कर्म है |यह कहा जा सकता है कि सफल अनुवाद सफल भाषांतरण पर नहीं वरन् रचना में अंतर्निहित सांस्कृतिक पुनःसृजन की प्रक्रिया पर आश्रित होता है | अनुवाद व्यापक अर्थों में दो संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है | कहने का आशय यह कि अनुवाद के माध्यम से किसी एक संस्कृति का व्यक्ति किसी दूसरी संस्कृति से परिचित होता है | इस प्रकार अनुवाद दो भिन्न भाषा-भाषी, समाज के व्यक्तियों को भावनात्मक स्तर पर जोड़ने का कार्य भी करता है | एक दृष्टि से अनुवाद के माध्यम से हम भावनात्मक और राष्ट्रीय एकता की संकल्पना को पुष्ट बनाते हैं |

अनुवाद की महत्ता और उपादेयता इस दृष्टि से बढ़ जाती है कि अनुवाद कर्म न केवल राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करता है वरन् वैश्विक धरातल पर भी यह सार्वजनिन मनुष्यता के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करता है |इस संदर्भ में प्रो. गोपीनाथन की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं – " विश्वसंस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण रहा है | धर्म एवं दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य एवं व्यवसाय, राजनीति एवं कूटनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध है | संस्कृति की प्रगति वस्तुतः अनुवाद रूपी धुरी पर आश्रित है | अतः एक ऐसे चक्र की परिकल्पना की जा सकती है जो संस्कृति के भौतिक, भावनापरक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं को गतिशील बनाने में अनुवाद के योगदान को दिखा सकता है |"5

ज्ञान मीमांसा के क्षेत्र में अनुवाद कर्म सार्थक और महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है | भारत एक बहुभाषा- भाषी राष्ट्र है जहाँ पंद्रह सौ से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं | किसी एक भाषा समाज में रहने वाले व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि वह बहुत सारी भाषाएँ सीख सके | कोई व्यक्ति दो या तीन भाषाओँ में ली प्रवीणता हासिल कर सकता हैं, यद्यपि इसके अपवाद भी है | इस प्रकार हम कह सकते है कि किसी दूसरी भाषा के समाज, संस्कृति और साहित्य से परिचयकरण में अनुवाद की उपादेयता बढ़ जाती है | उदाहरण के लिए किसी हिंदी भाषी समाज के व्यक्ति को यदि मणिपुरी साहित्य की जानकारी प्राप्त करनी हो तो वह मणिपुरी कृतियों के अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से मणिपुरी साहित्य से परिचित हो सकता हैं | इस प्रकार हम कह सकते है कि भारत सदृश बहुभाषी देश में अनुवाद की महत्ता और इसकी उपादेयता असंदिग्ध है |

संदर्भ संकेत

1. डॉ. सत्यदेव मिश्र, अनुवाद : अवधारणा और आयाम, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, संस्करण : प्रथम 1998 ई., पृष्ठ 1
2. डॉ. सत्यदेव मिश्र, अनुवाद : अवधारणा और आयाम, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, संस्करण : प्रथम 1998 ई., पृष्ठ 29
3. जी. गोपीनाथन, अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, आठवाँ संस्करण 2022 ई., पृष्ठ 25
4. जी. गोपीनाथन, अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, आठवाँ संस्करण 2022 ई., पृष्ठ 25
5. जी. गोपीनाथन, अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, आठवाँ संस्करण 2022 ई., पृष्ठ 9-10

*****

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों के सहयोग से हिंदी का विकास

- सूर्य प्रकाश तिवारी

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- हिंदी भाषा का तकनीकी रूप से विकास का प्रारंभिक चरण
- सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति
- हिंदी का तकनीकी विकाश

1. टाइपराइटर/टेलीप्रिंटर
2. फैक्स
3. कम्प्यूटर तथा अन्य उपकरण

- आधुनिक युग में तकनीक के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रयोग

1. मानकीकरण के प्रयास
2. पारिभाषिक शब्दावली का विकास
3. अनुवाद कार्य की प्रगति
4. हिंदी के टंकण आदि से जुड़ी तकनीकों का विकास

- उपसंहार

सारांशः- वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी का समय है एवं वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी क्षेत्र से जुड़ा हो किसी रूप से तकनीक एवं प्रौद्योगिकी से अवश्य जुड़ा हुआ है, उदाहरण के तौर पर मोबाइल फोन, एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग, रेलवे आरक्षण, तथा ऑनलाइन खरीदारी।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी पूर्णरूप से कम्प्यूटर पर आधारित है। एक विकसित राष्ट्र के निर्माण कम्प्यूटर की विशेष भूमिका है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के द्वारा हम किसी भी व्यक्ति से चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो संचार स्थापित कर सकते हैं। आदर्श संचार माध्यम के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। उपयुक्त संचार के लिए संचार माध्यम की एक अहम भूमिका है। तथा भाषा का एक विशेष महत्व है। भारत जैसे राष्ट्र जिसने हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया है, एक विविधता वाला देश है जहाँ पर क्षेत्र भाषाई आधार पर प्रान्तो (राज्यों) के रूप में बटे हुए हैं। परन्तु अनेक भाषाई प्रान्तो के रूप में बटे होने के बावजूद राष्ट्र मे एकता व अखण्डता कायम है। इस एकता को बनाये रखने में हिंदी भाषा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी युग में हिंदी भाषा का प्रयोग हर प्रान्तो में सुलभ हो चुका है। तथा केंद्रीय सरकार ने हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा के रूप में विकसित करने के लिए गृह मंत्रालय के अंतर्गत एक अलग राजभाषा विभाग की स्थापना की है। वर्तमान में हिंदी भाषा के विकास के लिए अनेक संगठन कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में हिंदी भाषा के विकास के लिए अनेक संगठन कार्य कर रहे हैं। जिसमें प्रमुख संगठन हैं-

1. राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय),

2. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

इसके साथ ही अनेक सरकारी व गैर सरकारी संगठन हैं जो हिंदी भाषा के विकास के लिए कार्यरत व प्रयासरत हैं।

भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी भारत की राजभाषा, हिंदी भाषा-भाषी राज्यों की राज्यभाषा और केंद्र तथा हिंदी-अहिंदी राज्यों के मध्य संपर्क भाषा (संचार भाषा) के रूप में तो मान्य है ही अब वह धीरे-धीरे विश्व भाषा के रूप में भी विकसित हो रही है। भारत देश के बहुत बड़े उपभोक्ता बाजार के रूप में होने के कारण विदेशी कंपनियाँ भी भारतीय उपभोक्ताओं के समझ की भाषा हिंदी का बखूबी प्रयोग कर रही हैं।

हिंदी भाषा का तकनीकी रूप से विकास का प्रारम्भिक चरण-

विंडोज 2000 के रिलीज के बाद यह महसूस किया जाने लगा था कि भारतीय भाषाओं को यदि परिचलन प्राणाली में अंर्तनिहित नहीं किया गया तो उसमें अनेक कमियाँ रह जायेंगी। उदाहरण के लिए कोश निर्माण के लिए भारतीय भाषाओं की वर्णमाला के अनुरूप साॅर्टिंग की सुविधा अत्यन्त आवश्यक है और यह सुविधा आज मूल प्राणाली में हिंदी को अंर्तनिहित करने के कारण अनायास ही सुलभ हो गयी है, इसलिए यह कदम भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटिंग के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। विण्डोज आपरेटिंग सिस्टम के बाद अब 'लोटस', 'लाइनेक्स', एवं 'ओरेकल' कम्पनियों ने भी अपनी परिचालन प्रणाली में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को समाहित कर लेंगी।

सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति- वर्तमान युग में अचानक सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति समाहित हो गयी। उपग्रह के माध्यम से संचार प्राणालियों में आमूलचूल परिवर्तन हो गया। प्रतिदिन काम में आने वाली जानकारियों से लेकर गहन से गहन अध्ययन, व्यापार जगत, सरकारी कार्यालयों से संबंधित फाईलों में सर्वत्र इस प्रौद्योगिकी का सहज प्रवेश हो गया। इंटरनेट एक ऐसा माध्यम बन गया है जिसने भौगोलिक दूरियों को कम कर दिया है। व्यापार का नया स्वरूप ई-कामर्स के नाम से प्रकट हुआ है।

सूचना प्रौद्योगिकी अपने छोटे नाम 'आई.टी.' (इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी) से अधिक जानी जाती है। भारत सरकार ने आई. आई. आई.टी. (भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान) की स्थापना हैदराबाद में किया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व छात्रों द्वारा कई प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। कंप्यूटर की शिक्षा तो अब हर कदम पर दी जा रही है। सी-डैक हिंदी के माध्यम से अनेक स्थानो पर कंप्यूटर प्रशिक्षण दे रहा है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा मुक्त (पत्राचार)पद्धति से इसका प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में ज्ञान का महत्व था और आज भी सूचना प्रौद्योगिकी में ज्ञान ही केंद्र में है। सूचना को शीघ्र लिखने के लिए टाइपिंग (टंकण) तथा शीघ्र आशुलिपि का विकाश बहुत पहले हो चुका था। टाइपराइटर का कुंजी-पटल (की-बोर्ड) अक्षरों एवं वर्णों की आवृत्ति पर आधारित होता है।

हिंदी का तकनीकी विकास:-

1. टाइपराइटर/टेलीप्रिंटरः- टाइपराइटर एक यन्त्र है जिसका प्रयोग कागज पर कोई पाठ टाइप करने के लिये किया जाता है। अंग्रेजी का मानक टाइपराइटर क्वर्टी लेआउट आधारित है। यद्यपि अंग्रेजी के लिये कई सारे लेआउट समय-समय पर बनाये गये जिनमें क्वर्टी लेआउट गति के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ माना गया परन्तु समय के साथ क्वर्टी ही मानक बन गया। कम्प्यूटर के आविष्कार के पश्चात कीबोर्ड भी क्वर्टी लेआउट पर ही बने। 1930 के दशक में बाजार में हिन्दी टाइपराइटर आया था। हिन्दी टाइपराइटर का विकास अत्यंत जटिल कार्य था। कारण यह कि देवनागरी के अनेक चिह्न येन-केन प्रकारेण 26 कुंजियों पर ही व्यवस्थित करने थे। इसके अतिरिक्त टाइपराइटर मैकेनिकल होने के कारण कम्प्यूटर की तरह न तो मात्राओं को खुद ही जोड़ सकता था, न वर्ण-क्रम के अनुसार संयुक्ताक्षर बना सकता था, अतः सभी चिह्नों, मात्राओं, संयुक्ताक्षरों के लिये अलग से कुंजियाँ याद रखनी पड़ती थी। इस कारण टाइपराइटर का लेआउट अत्यंत जटिल हो गया। परन्तु उस समय हिन्दी टाइप करने का केवल यही एक साधन था।

2. फैक्स- यह एक ऐसा इलेक्ट्रानिक यंत्र है जिसके माध्यम से आप कोई भी सूचना लिखित रूप दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचा सकते हैं। यह मशीन लगभग हर बड़े कार्यालयों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है तथा फैक्स का लाभ यह है कि हम पूरा का पूरा पत्र, डाक्यूमेंट अथवा चित्र चंद सेकेंडों में हू-बहू दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचा सकते हैं - चाहे वह देवनागरी में लिखा हुआ हो या रोमन में।

3. कंप्यूटर तथा अन्य उपकरण:- कंप्यूटर में नागरी विधि तथा अन्य भारतीय लिपियों के प्रयोग की दिशा में 'जिस्ट' प्रौद्योगिकी ने क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया। कंप्यूटर को भारतीय भाषाओं के अनुकूल बनाने की दिशा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के इंजीनयरों द्वारा 'जिस्ट' के रूप में जो तोहफा प्रदान किया गया वह चमत्कार ही कहा जायेगा। 'जिस्ट' वस्तुतः एक्रोनिम है, जो ग्राफिक एंड इंटेलिजेंस बेस्ड स्क्रिप्ट टेक्नोलॉजी के प्रथम अक्षरों जी.आई.एस.टी से बना है। भारत के लिपियों की विशेषता यह है कि इनकी वर्णमाला मूलतः एक ही है। भारतीय लिपियों की इस विशेषता ने ही भारतीय इंजीनियरों को इस दिशा में प्रेरित किया। 'क' अक्षर चाहे देवनागरी का हो, चाहे अन्य किसी भारतीय लिपि का, यहाँ तक की द्रविड़ भाषा 'तमिल' का उन सब के लिए अब एक समान कोड है। इस कोड को इलेक्ट्रानिक विभाग ने सुनिश्चित कर दिया। जिस्ट कार्ड की सहायता से ही एक ही कुंजी पटल पर भारतीय लिपियों को स्थापित कर दिया गया। फलतः एक ही व्यक्ति हिंदी के अलावाँ बंग्ला या तेलगु जानता है तो वह उसी कम्प्यूटर पर सरलता से कार्य कर सकता है। 'जिस्ट' तकनीक ने ऐसा कम्प्यूटर उपलब्ध कर दिया जिससे अंग्रेजी के अतिरिक्त भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में टंकण किया जा सकता है।

जिस्ट को विकसित करने का श्रेय भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर को है, पर इसके विकाश में सी-डैक पुणे ने भी योगदान दिया है। भारतीय लिपियों की अंतर्निहित समानता के आधार पर 'इस्की' नामक एक ऐसी मानक कोडिंग प्राणाली को विकसित किया गया जिसके अंतर्गत सभी भारतीय भाषाएं तथा रोमन लिपि पर आधारित यूरोपिय भाषाएं आ जाती हैं। इसके माध्यम से न केवल भारतीय भाषाएं वरन् अंग्रेजी को भी टंकित किया जा सकता है।

आधुनिक युग में तकनीक के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रयोग- आज का युग तकनीक का युग है। तथा हम तकनीक का प्रयोग कर समय व उर्जा की बचत का प्रयास करते हैं। उदाहरण के तौर पर अब कोई पहले जैसा 25 पैसा या 75 पैसा वाला अंर्तदेशीय पत्र खरीद कर चिट्ठियाँ लिखना पसंद नहीं करता इसकी बजाय हम चुटकियों में एस.एम.एस या ई-मेल टाइप कर बिना समय गवाँए अपना कार्य सम्पादित करते हैं। आज कल हम सभी कंप्यूटर पर आसानी से टाइपिंग कर लेते हैं। कंप्यूटर पर हिंदी में टाइप करने के लिए देवनागरी के 2 प्रकार के फॉन्ट होते हैं।

यूनिकोड फॉन्ट- ये फॉन्ट प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नम्बर प्रदान करता है। इसके द्वारा एक ही दस्तावेज में अनेकों भाषाओं के टेक्स्ट लिखे जा सकते हैं।

नॉनयूनिकोड- इसमें उपरोक्त सुविधा नहीं उपलब्ध होती है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकाश का संबंध भाषा के आधुनिकीकरण से है। भाषा के आधुनिकीकरण के दो संदर्भ है- पहला यह कि भाषा आधुनिक प्रयोजनों के अनुकूलविकासित हो तथा दूसरा यह कि भाषा से संबंधित यांत्रिक साधनों का विकास हो। आमतौर पर यांत्रिक साधनों के विकास को वैज्ञानिक विकास भी कहा जाता है।

भाषा आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त हो सके, इसकी कुछ शर्तें हैं। पहली शर्त यह है कि भाषा आधुनिक जीवन के सारे प्रसंगों को समाविष्ट करती हो। इसका अर्थ यह हुआ कि इन्टरनेट से लेकर मार्केट इकॉनामी तक जितनी स्थितियाँ हमारे सामने हैं, उन सबके लिये हमारी भाषा में सरल तथा सहज शब्द हों। दूसरी आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक प्रशासन तंत्र में जिन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना आवश्यक होता है, उनका विकास हो। तीसरी बात यह है कि भाषा अपने सभी स्तरों पर मानकीकृत हों। इन स्तरों में ध्वनि, वर्ण, शब्द, वाक्य रचना, लिपि तथा वर्तनी सम्मिलित हैं। इस विकास के स्तर को छूने वाली भाषा को वैज्ञानिक भाषा कहा जाता है।

हिंदी का वैज्ञानिक विकास

हिंदी के संदर्भ में विचार करें तो पिछले कुछ दशकों में हिंदी के वैज्ञानिक विकास पर काफी ध्यान दिया गया है। यह मुख्यतः चार स्तरों पर दिखता है।

1. मानकीकरण के प्रयास

2. पारिभाषिक शब्दावली का विकास

3. अनुवाद कार्य की प्रगति

4. हिंदी के टंकण आदि से जुड़ी तकनीकों का विकास

1. मानकीकरण के प्रयास- मानकीकरण के प्रयास बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही दिखने लगते हैं तथा धीरे-धीरे हिंदी का मानकीकरण सरकारी सहायता के साथ लगभग पूरा हो गया है।

2. परिभाषिक शब्दों का विकास-

भाषा के वैज्ञानिक विकास का दूसरा प्रमुख कार्य है पारिभाषिक शब्दों का विकास। इस संबंध में 1955 में राजभाषा आयोग की संस्तुतियों के आधार पर भारत सरकार ने दो आयोगों का गठन किया है- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग तथा विधायी (शब्दावली) आयोग। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग को विधि क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी विषयों के पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का दायित्व सौंपा गया। विधायी (शब्दावली) आयोग का काम था कि विधि क्षेत्र में काम आने वाली सभी प्रयुक्तियों को वह हिंदी में समतुल्य रूप में प्रस्तुत करें। यह दोनों अयोग अपनी क्षमता के अनुसार लगातार काम करते रहे हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग वर्तमान समय में शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य कर रहा है। तथा इसने विज्ञान,वाणिज्य तथा मानविकी क्षेत्रों से संबंधित कई विषयों की मानक शब्दावली तैयार की है। विधायी (शब्दावली) आयोग, जो कि अब विधि मंत्रालय के एक विभाग के रूप में काम कर रहा है, ने भी विधि क्षेत्र में परिभाषिक शब्दावली का तीव्र विकास किया है।

3. अनुवाद कार्य की प्रगति-

भाषा की वैज्ञानिकता का तीसरा आधार है अनुवाद कार्य की प्रगति। अनुवाद की प्रगति इसलिये आवश्यक है कि संभावनाशील हाने के बावजूद ऐतिहासिक कारणों से हिंदी विश्व स्तर के संदर्भों को अपने आवरण में नहीं समेट सकी है। आज की दुनिया राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं है बल्कि सार्वभौमिक स्तर पर परस्पर संबद्ध है। ऐसे समय में बाहर की दुनिया की जानकारी तथा उन संदर्भों की अपनी भाषा में अभिव्यक्ति आवश्यक है तथा इस कार्य के लिये अनुवाद की सहायता लेना जरूरी है। अनुवाद की जरूरत प्रशासन में इसलिए भी है कि भारत सरकार अभी द्विभाषिक नीति पर चल रही है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की गति तथा गुणवत्ता भाषा के वैज्ञानिकीकरण में महत्वपूर्ण हो जाते हैं। भारत सरकार ने इस संबंध में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन किया है जो राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के अधीन कार्य करता है। ब्यूरो लाखों शब्दों का अनुवाद कर चुका है तथा पत्येक वर्ष अपने लक्ष्यों को पूरा कर रहा है।

1977 तक हिंदी में ऐसा कोई कार्यक्रम उपलब्ध नहीं था। 1977 में हैदराबाद की ई. सी. अई. एल. नामक कंपनी ने फोरट्रान नामक कंप्यूटर भाषा में पहली बार हिंदी को कंप्यूटर पर उतारा। 1980 के आस-पास दिल्ली की डी.सी.एम. नामक कंपनी ने सिद्धार्थ नामक मशीन पर शब्दमाला कार्यक्रम तैयार किया। यह हिंदी-मशीन द्विभाषी शब्द संसाधक थी, एक साथ दोनों भाषाओं में सामग्री संसाधन की सुविधा देती थी। इसी समय हैदराबाद की सी.एम.सी. नामक कंपनी ने तीन भाषाओं (अंग्रेजी, हिंदी और एक भारतीय भाषा) में शब्द संसाधन के लिए 'लिपि' नामक मशीन तैयार की। इसी तरह कई और कंपनियों तथा राजभाषा विभाग ने सॉफ्टवेयर तैयार किये, जिसमें प्रमुख हैं-

शब्दरल, अक्षर, सुलेख आदि। इन सभी कार्यक्रमों में प्रायः दो कमियाँ थी। एक तो ये लेजर मुद्रण या फोटो कंपोजिंग में प्रयुक्त नहीं हो सकते थे, तथा दूसरे इनके कुंजीपटल अलग-अलग थे और अक्षरों की बनावट में भी अंतर था। हिंदी के कंप्यूटरीकरण में कुछ और क्षेत्रों को भी जोड़ा गया है जिनमें अनुवाद तथा शिक्षण प्रमुख हैं। कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद की व्यवस्था हो सके, ऐसे कार्यक्रम का विकास करने पर बल दिया जा रहा है। ऐसे कुछ कार्यक्रम विकसित हुए भी हैं। हाल ही में, मोदी जीरोक्स ने ऐसे ही एक कार्यक्रम का प्रयोग करते हुए एक ऐसी फोटोकॉपी मशीन बनाई है जो अंग्रेजी के पाठ को हिंदी में फोटोग्राफी करती है। नए लोग हिंदी को कंप्यूटर के माध्यम से सीख सकें, इसके लिए लीला नामक एक पैकेज तैयार किया गया है जो उच्चारण, लिपि तथा मित्रों के माध्यम से बच्चों तथा विदेशियों को हिंदी का ज्ञान कराता है। अन्य प्रयासों में एक महत्वपूर्ण प्रयास स्पेलिंग चेकर (हिज्जे जाँचक) का विकाश करना है जिसपर आजकल काम चल रहा है।

4. हिंदी के टंकण आदि से जुड़ी तकनीकों का विकास-

टाइपराइटर पर हिंदी टाइपिंग मैकेनिकल टाइपराटर पर हिंदी में टाइप करने के लिए रेमिंगटन की-बोर्ड लेआउट का प्रयोग किया जाता है। यह अत्यंत कठिन लेआउट है, क्योंकि हर चिन्ह के लिए अलग-अलग कुंजियों को याद रखना पड़ता है।

कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग- कंप्यूटर पर टाइपिंग दो प्रकार की होती है।

1) - नॉन यूनिकोड- यह विधि कंप्यूटर पर यूनिकोड प्रणाली के आने से पहले प्रयोग की जाती थी। इसमें पुराने समय के हिंदी फॉण्ट प्रयोग किए जाते थे। इस टाइपिंग का उपयोग सिर्फ छपाई आदि कार्य में ही होता है। किसी वर्ड प्रोसैसर में हिंदी का नाॅन-यूनिकोड फाॅण्ट चुनकर टाइप किया जाता है तथा उसका प्रिंट लिया जा सकता है। किसी अन्य कंप्यूटर पर वह टैक्स्ट की जगह सिर्फ कचरा (जंक टैक्स्ट) दिखता है।

2) - यूनिकोड- यूनिकोड हिंदी टाइपिंग की नई विधि है। यूनिकोड की विशेषता यह है कि यह फाॅण्ट एवं कीबोर्ड लेआउटों पर निर्भर नहीं करती। आप किसी भी यूनिकोड फॉण्ट एवं किसी भी कीबोर्ड लेआउट का प्रयोग करके हिंदी टाइप कर सकते हैं। यूनिकोड फॉण्ट में लिखी हिंदी देखने के लिए उस फॉण्ट विशेष का कंप्यूटर में होना जरूरी नहीं है। किसी भी यूनिकोड हिंदी फॉण्ट के होने पर हिंदी देखी जा सकती है। अधिकतर नये ऑपरेटिंग सिस्टमों में यूनिकोड हिंदी फॉण्ट बना-बनाया आता है

गूगल इनपुट उपकरण द्वारा- यह एक टाइपिंग उपकरण है जिससे आप अपनी भाषा में कहीं भी टाइप कर सकते हैं जैसे कि एम,एस, आफिस, फेसबुक, व्हाट्सअप आदि। यह कई भाषाओं को सपोर्ट करता है। ये बहुत पुराना उपकरण है जिसका प्रयोग आज भी बहुत से लोग नहीं करते हैं। क्यों कि शायद वो इसके बारे में या इसका प्रयोग करना नहीं जानते। इस उपकरण द्वारा हिंदी टाइपिंग बहुत ही आसान है।

व्वायस टाईपिंग: कंप्यूटर पर बोलकर टाइप करने की प्रक्रिया को व्वायस टाईपिंग कहते हैं। भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्पीच से टेक्स्ट तकनीकी एक अहम उपलब्धि है। आजकल हिंदी भाषा को फोनेटिक टाईपिंग तथा लिपि परिवर्तन के साथ-साथ बोलकर टाइप करने अर्थात डिक्टेशन की सुविधा उपलब्ध कराने वाले सॉफ्टवेयर/ टूल्स भी आसानी से उपलब्ध हैं। इसके लिए गूगल के व्वायस टाईपिंग टूल्स का उपयोग कर सकते हैं।

उपसंहार

इस प्रकार हमने देखा कि 1977 के बाद से हिंदी के कंप्यूटरीकरण में तीव्र प्रगति हुई है। इस तीव्र विकास में जिन संस्थाओं का प्रमुख रूप से योगदान है उनमें राजभाषा विभाग का तकनीकी प्रभाग तथा इलैक्ट्रॉनिक विभाग प्रमुख हैं। इलैक्ट्रॉनिक विभाग ने भाषा प्रौद्योगिकी मिशन का आरंभ किया था जो काफी सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है।

हिंदी के कंप्यूटरीकरण के लिये जिन क्षेत्रों में अभी प्रयास हो रहे हैं, वे इस प्रकार हैं-

इलैक्ट्रॉनिक हिंदी शब्दकोश

इलैक्ट्रॉनिक बहुभाषी शब्दकोश

स्पेल-चेकर (हिज्जे-जाँचक)

अनुवाद कार्य

नेटवर्किंग आदि।

स्पष्ट है कि पिछले कुछ वर्षों में हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में कई महत्वपूर्ण चरण हमने पूरे किए हैं। इस क्षेत्र में अभी भी काफी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। पहली चुनौती हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली के साथ कंप्यूटर के सिस्टम सॉफ्टवेयर के विकास की है। इसके साथ ही, यह भी एक चुनौती है कि हिंदी में वे सभी सुविधाएँ मौजूद हों जो अभी अंग्रेजी और रोमन के लिए है। अंत में यह भी ध्यान रखना होगा कि वैज्ञानिक और तकनीकी विकास एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। अतः एक बार अंग्रेजी की बराबरी करने के बाद अपने उच्चतम स्तर को बनाए रखना भी एक चुनौती होगी-ऐसी चुनौती जो हमेशा हमारे सामने होगी और हमें सतत् विकास की प्रेरणा देती रहेगी

****

वह जो हमसे गायब हो गए

- शशिप्रभा कलिता

नब्बे के दशक के मध्य तक, हस्तलिखित पत्र दैनिक आधार पर लिए और वितरित किए जाते थे। उस समय आम लोगों के बीच टेलिफोन संचार सीमित था और मोबाईल फोन ने हमारे जीवन में प्रवेश नहीं किया था। पत्र जीवन के अमूल्य साधन बन गए थे। यह परिवार के सदस्यों के लिए एक-दूसरे के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सुन्दर तरीका था। कभी-कभी बच्चे जब स्कूल या कॉलेज के छात्रावासों में या दूर के कार्यस्थलों पर होते थे तो अपने माता-पिता को नियमित पत्र लिखना अपना कर्तव्य समझते थे। मित्रों के बीच भी पत्रों का व्यापक प्रयोग होता था। नीले लिफाफे में लिखे गए पत्र भी प्रेमिक जोड़े को करीब लाया करते थे। पत्र प्राप्तकर्ता को उत्तर देने के लिए दूसरा पत्र भेजना होगा, यह अनिवार्य हैं। वास्तव में, लोग उन्हें अपने प्रियजनों की लिखावट में पा सकते थे, भले ही वे वास्तव में मौजूद न हों। इस प्रकार पत्र व्यवहार से मधुर संबंध स्थापित हो जाते थे। लोग पत्रों में अनेक रहस्य साझा करने में सुरक्षित महसूस करते थे। इसका कारण यह है कि उस समय सगर के साधन अधिकतर पत्तों तक ही सीमित थे।

इतिहास के पन्ने पलटने पर हमें कई प्रसिद्ध और रहस्यमय पब मिलते हैं। कई प्रसिद्ध पत्रो का अभी भी शोधकर्ताओं द्वारा अध्ययन किया जा रहा है। लोकप्रिय साहित्य, फिल्मों, गीतों नाटकों आदि में पत्रों का उल्लेख किया जाता है। प्राचीन काल से ही पत्र भेजने के अनेक माध्यम रहे हैं।

वह कभी-कभी घोड़े पर सवार होकर पत्र भेजते थे। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान समुद्र के रास्ते छह सौ से सात सौ मील की दूरी तक पत्र भेजें जाते थे। ऐसा कहा जाता है कि पहला हस्तलिखित पत्र फारस की रानी इतोशा शाहबानु ने भेजा था। वह 500 ईसापूर्व का प्रसिद्ध फारसी राजा डेरियस की रानी थीं।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, पत्र लिखने और भेजने का प्रचलन कम होता गया। आज के मशीनी युग में अक्षरों का आकर्षण खो गया है। पत्र हमारे जीवन से गायब हो गए हैं। आज लोग बात करने के लिए भी समय नहीं निकाल पाते हैं या समय की कमी दिखाते हैं।

इसके अलावा, इंटरनेट की लहर ने संसार को दुनिया को बदल दिया है। अब आप मोबाइल फोन की विभिन्न सुविधाओं जैसे एसएमएस (SMS), व्हाट्सएप (Whatsapp), ई-मेल (E-mail) आदि से तुरंत समाचार प्राप्त कर सकते हैं। कभी- कभी एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को भेजा गया सदेंश कई लोगों के बीच सार्वजनिक होता है और यही बात आज की पीढ़ी के लोग वायरल (Vinal) वोलते हैं। यहां कोई नीजता नहीं है। आधुनिक मीडिया पाठक को धीमी गति से पत्र पढ़ने का स्वाद नहीं दे सकता। हालाँकि, जैसे-जैसे युग बदला है, हमारे जीवन कँ विभिन्न पहलू भी बदल गए हैं। पत्र लिखने और भेजने के तरीके में बड़े बदलाव हुए हैं।

यदि विद्यार्थियों को पत्र लिखने की आदत है तो उन्हें भी व्याकरण, वर्तनी और लिखावट बहुत सहायक हो सकते हैं। अत: हम कई गुणों को ध्यान में रखकर अपने खोए हुए पत्रों के काल को फिर से को वापस लाने का प्रयास कर सकते हैं। जिस प्रकार पिछली पीढ़ियों को पब का इंतजार रहता था, उसी प्रकार हम भी समय-समय पर एक पत्र लिखने का प्रयास कर सकते है और इसे अपने सभी रिश्तेदारों को भेज सकते हैं।

****

सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद

- रिकी बरदोलोई

भूमिका: मानव मन स्वभावत: किसी सीमा में बाँधकर नहीं रहना चाहता, बल्कि वह सीमाओं को पार कर संसार भर में व्यापने के लिए तड़पता रहता है । इस धरती पर सभी मनुष्य मूलत: एक हैं, पर भौगोलिक, सामाजिक, जातिगत, आर्थिक तथा भाषिक सीमाएँ मानव को एक दूसरे से दूर कर देती हैं । अन्य देशों की बात तो अलग अपने ही देश में विभिन्न प्रदेशों के लोग एक-दूसरे की भाषा समझ न पाने के कारण अजनबी हो जाते हैं । इसी भाषा की सीमा को लाँघने का सबसे बड़ा माध्यम है अनुवाद । इसी अनुवाद के माध्यम से ही लोग देशों-विदेशों की भाषाओं में लिखे कृतियों को पढ़ने का मौका मिलने पर मनुष्य यह समझने में समर्थ हो गया है कि भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक तथा भाषागत सीमाएँ मनुष्य द्वारा निर्मित कृत्रिम सीमाएँ हैं । मनुष्य की एक प्रवृत्ति रही है कि जो वह जानता है उसे वह दूसरों को बताना चाहता है और जो दूसरे जानते हैं उसे स्वयं जानना चाहता है । लेकिन इस प्रक्रिया में उसके सामने सबसे बड़ी बाधा भाषा की सीमाएँ आती हैं । इसलिए आज अनुवाद साहित्य के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान के विकास का अनिवार्य साधन बन गया है ।

सृजनात्मक साहित्य: साहित्य मानव मन की उत्कृष्ट उपज है । साहित्य में मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष से संबन्धित पहलुओं का संगम हो जाता है । लेखक निजी ढंग से जो अनुभव करता है, अपनी रचनाओं में वह अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, जिसके माध्यम से उसे लक्ष्य की ओर अपनी राह बनानी पड़ती है । इसमें लेखक अपने अध्ययन से, तथ्यों के मूल्यांकन से तथा अपने ज्ञान और अनुभव के बल पर उसे अपने सांचे में ढालता है । इस प्रकार लेखक अपनी सर्जना शक्ति को भव्यता प्रदान करता है ।

सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद बहुत पहले से ही हो रहा है । 'सृजनात्मक साहित्य' को अंग्रेजी में 'Creative Literature' कहा गया है । सृजनात्मक साहित्य विचारों की अभिव्यक्ति पर आधारित होते हैं और इसमें कई विधाएँ समाहित रहते हैं । किसी लेखक की जानकारियों की सीमा और किसी अनुवादक के अनुभव-अर्थज्ञान की सीमा भिन्न होती है । लेखक के साहित्य में अंकित जानकारियाँ उसके अपने अनुभव तथा उसके पूर्वाग्रहों पर आधारित होकर अपनी प्रतिक्रिया को लेखनी में प्रतिबिम्बित करती है, दूसरी ओर अनुवादक की मनोवृत्ति अलग आधार पर टिकी होती है । इसलिए अनुवादक को लेखक की सोच, उसका चिंतन तथा उसके व्यक्तित्व आदि को समझकर अनुवाद कार्य करना पड़ता है । साहित्यानुवाद की प्रासंगिकता विभिन्न क्षेत्रों और संदर्भों में निहित है ।

"साहित्यानुवाद के महत्व को अन्य भाषाओं की महान साहित्यिक रचनाओं को अपनी भाषा में लाने, राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता के पल्लवन, भारतीय साहित्य की एकात्मकता के उद्घाटन, विश्व साहित्य की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान करने, सांस्कृतिक समृद्धि, वैश्विक समाज-संस्कृति से परिचय प्राप्त करने, साहित्यकार की मनोभूमि से जुड़ने तथा उसके आत्मविस्तार को स्वर देने, सामासिक संस्कृति का वाहक बनाने, तुलनात्मक साहित्याध्ययन को बढ़ावा देने, भाषा के विकास एवं उन्नयन आदि संदर्भों में क्रमश: अवलोकित किया जा सकता है ।"

कथा साहित्य का अनुवाद: कथा साहित्य एक सृजनात्मक विधा है । कथा साहित्य अर्थात् उपन्यास-कहानी में भी नाटक और कविता की तरह सृजनात्मक शक्ति की आवश्यकता रहती है । कथा साहित्य की रचना तो गद्य में ही होता है, लेकिन यह कार्यालयीन, जनसंचार, विज्ञान, प्रोद्योगिकी गद्य से भिन्न होती है । कथा साहित्य में अन्य गद्य विधाओं जैसे- नाटक, कविता, रेखाचित्र आदि के गुण समाहित रहते हैं । कथा साहित्य में भी मिथक और प्रतीक होते हैं । कथा साहित्य के अनुवाद में भी उन सभी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो अन्य विधाओं में मिलती हैं । किसी कहानी या उपन्यास का प्रथम अनुच्छेद उसके अंतिम अनुच्छेद के साथ जुड़ा हो सकता है । इसलिए पूरी रचना का अनुवाद स्वतंत्र अनुवाद होता है । अनुवादक को कथा साहित्य के अनुवाद में रचना की मूल वस्तु के प्रति अपनत्व निभानी होती है, जहाँ उसे भाषा की सहजता, स्पष्टता, बोधगम्यता का ध्यान रखना होता है । कथा साहित्य में पूरी कृति को एक ही अर्थ में ग्रहण से ही कृति का अर्थ स्पष्ट होता है । कहानी या उपन्यास के विभिन्न अंश एक-दूसरे से परस्पर जुड़े होते हैं ।

अनुवाद करते समय अनुवादक को कभी कुछ जोड़ना पड़ता है और कभी कुछ छोड़ना पड़ता है । कई बार मूल रचना की अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा की स्थानापन्न अभिव्यक्ति देनी पड़ती है । कई बार विभिन्न विकल्पों में से किसी एक सटीक विकल्प को लेना पड़ता है । इसके अलावा कई बार सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक संदर्भों के अनुसार शब्दों का चयन करना पड़ता है । तब जाकर अनूदित पाठ मूल पाठ का सहपाठ बन पाता है । गुगा वा के उपन्यास 'Matigari' का एक अंश इस प्रकार है: "Wake up zebra ! One of them punched him। He woke up. इस अफ्रीकी उपन्यास को हिन्दी में अनुवाद करते हुए Zebra के स्थान पर 'भैंसे' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं । जैसा कि 'भैंसा' शब्द में 'जेब्रा' के भारीपन का लाक्षणिक अर्थ सटीक बैठता है । इसी प्रकार उसी उपन्यास मेन see how sweet she wears her flower patterned lasso aroumd her shoulders and breast. यहाँ lasso का हिन्दी अनुवाद 'साड़ी अधिक उपयुक्त होगा । इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण His hair is dark as the hyacinth blossom में hyacinth blossom शीत जलवायु में पानी में उगाने वाला एक पौधा होता है, जिस पर विभिन्न रंग के फूल होते हैं और वह घंटी के आकार का होता है । इस उपमा का हिन्दी में सृजनात्मक प्रयोग 'नीलकमल' ही उचित जान पड़ता है । इसके अलावा समतुल्य भाषिक अभिव्यक्ति के प्रति भी अनुवादक को सजग और सचेत रहना पड़ता है । जैसे भारतीय समाज में 'उल्लू' शब्द का लाक्षणिक अर्थ है 'मूर्ख' । लेकिन उल्लू को अन्य देशों में जैसे जापान तथा यूरोप में क्रमश: Fukro और Owl 'बुद्धिमत्ता' का प्रतीक के रूप में माना जाता है । इसलिए इस उपमान के समतुल्य कोई अन्य उपमान खोजना होगा, जिसमें 'मूर्खता' का अर्थ मिले ।

सं. डॉ हरीश कुमार सेठी, सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद, भारतीय अनुवाद परिषद, पृष्ठ-49
सं. डॉ हरीश कुमार सेठी, सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद, भारतीय अनुवाद परिषद, पृष्ठ-144-145

काव्यानुवाद: अनुवाद कार्य में काव्यानुवाद सबसे कठिन कार्य है । काव्यानुवाद करने के लिए अनुवादक को कवि की अंतरात्मा के साथ सामंजस्य बैठाना पड़ता है । मूल रचना की भावना, उदात्तता, सत्यता आदि सबकुछ अनूदित कविता में परिलक्षित होना चाहिए । प्राय: सभी भाषाओं की कविताओं में अलंकार, छंद, प्रतिक, बिम्ब, मुहावरा-लोकोक्ति आदि होते हैं, जिन्हें अनूदित करना कठिन कार्य है । कविता में शब्द विशेष को सुर, लय, कल्पना, रस आदि से सराबोर किया जाता है । इसलिए काव्यानुवाद करने वाले अनुवादक का कवि होना आवश्यक है, तभी वे सुर, ताल, रस, बिम्ब आदि को बनाए रखते हुए मूल के भाव के अनुरूप अनुवाद करने में सक्षम होगा ।

कविता की प्रभावशीलता और उसकी शक्ति, उसकी भाषा की संगीत से जुड़ी होती है । इसका एक रूप है नाद-सौंदर्य । जिस नाद-सौंदर्य से कविता की रसानुभूति होती है, उसका अनुवाद प्राय: असंभव-सा होता है । इसमें अलंकार, छंद आदि अनुवादक के लिए सबसे बड़ी समस्या होती है । अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलंकारों से युक्त कविता को ऐसी भाषा में अनुवाद करना संभव है जिनमें जिन भाषा में इसका प्रयोग होते हैं, लेकिन ऐसी भाषा में नहीं हो सकता जिनमें इन सबका प्रयोग न होता हो । जैसे:

"कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात ।
भरैं मौन में करत हैं नैनन ही सब बात ॥" (बिहारी सतसई)

इसका अंग्रेजी में अनुवाद होगा- "They speak, disagree, rejoice, get annoyed, are reconciled, feel pleased and then blush. While seated in the crowded hall, they speak to each other with their eyes." इस अनुवाद में 'त' वर्ण की आवृत्ती ने काव्यात्मक अभिव्यक्ति में संगीतात्मकता उत्पन्न कर दी है । शब्दों का सुंदर संयोजन होने पर भी अनुवाद में संगीतात्मकता नहीं है । लेकिन अनुवादक ने इसे काफी हद तक सफल करने का प्रयास किया है । इसलिए रघुवीर सहाय का कहना है- "कविता की भाषा अन्य प्रकार की भाषा से बहुत भिन्न होती है । केवल इसलिए नहीं कि उसमें छंद और अलंकार होता है । वास्तव में कविता भाषा के उस क्षेत्र को भेदकर अपने को व्यक्त करती है जो अथक है । वह जो कुछ बताती है वह शब्दों की पकड़ से परे होता है । इसलिए कविता संकेतों, बिंबों और प्रतिकों से वह काम कर ले जाती है जो शब्दों के द्वारा नहीं हो सकता ।"

किसी कविता की पंक्ति में भावों, विचारों तथा लय में एक संबंध होता है । जिसे पहचाने बिना अनुवाद अस्पष्ट तथा रंगविहीन हो जाता है । कभी-कभी स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय बिंबों के अनुवाद में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । जैसे जर्मन स्रोत भाषा में 'Hen' शब्द को हिन्दी लक्ष्य भाषा में 'मुर्गी' के रूप में बिंबानुवाद किया जाए तो वह गलत होगा, क्योंकि 'Hen' शब्द का अर्थ जर्मन भाषा 'कुलटा स्त्री' है । इसलिए अनुवादक को दोनों भाषाओं के अंतर को समझना होगा और उसे ध्यान में रखकर बिंबानुवाद करते समय 'मुर्गी' के स्थान पर 'कुतिया' शब्द का प्रयोग करना होगा ।

रघुवीर सहाय, कविता के अनुवाद का रहस्य, 'अनुवाद' पत्रिका , अंक 55, पृष्ठ- 85

अर्थात् अनुवादक को सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि को समझना होगा । इसलिए भोलानाथ तिवारी का कहना है- "हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थ-बिम्ब होता है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंध होता है । दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिम्ब नहीं उभार सकता । किसी अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त 'Spring' शब्द का ठीक प्रतिशब्द हिन्दी में 'वसंत' इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि अंग्रेजी भाषी के मन में 'स्प्रिंग' शब्द में इंग्लैंड के 'स्प्रिंग' का चित्र जो है, वह भारतीय वसंत के चित्र से सर्वथा भिन्न है । अंत: उस कविता के हिन्दी के अनुवाद को पढ़ने वाले के मन में जो अर्थ-बिम्ब उभरेगा वह भारतीय वसंत का होगा, जबकि होना चाहिए इंग्लैंड के 'स्प्रिंग' का है । ऐसे ही रूप का 'जाड़ा' अरब का 'जाड़ा' नहीं हो सकता, न भारत की 'गर्मी' फ्रांस की 'गर्मी' काव्यभाषा में प्रयुक्त इन शब्दों का प्रतिनिधित्व इसलिए किसी भी दूसरी भाषा के समानार्थी शब्दों द्वारा कदापि नहीं किया जा सकता ।"

काव्य में प्रतिकों का बहुत महत्व है । काव्य में प्रस्तुत से अप्रस्तुत और अप्रस्तुत से प्रस्तुत को संकेतित किया जाता है । काव्य में कहीं-कहीं प्रयुक्त प्रतीक किसी स्थिति, संदर्भ तथा मानसिकता के सूचक होते हैं । प्रतिकों का अनुवाद करते समय स्रोत भाषा में यह ध्यान रखना होता है कि प्रतीकात्मक रूप में जो वस्तु ग्रहण की गई, वह लक्ष्य भाषा में वहीं अर्थ देती है या नहीं । गधे, कुत्ता, बादल आदि शब्दों का अनुवाद बहुत सोच-समझकर करना चाहिए । जैसे गधे शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'Donkey' है, लेकिन मूर्खता के लक्षणों की दृष्टि से 'Donkey' का प्रयोग सही नहीं होगा । इसके लिए 'Ass' शब्द का प्रयोग करना होगा । उसी तरह बहुत अधिक सर्दी पड़ने पर पश्चिमी देशों में सूर्य का चमकना आनंद का प्रतीक है, किन्तु भारत में परिस्थिति इसके विपरीत है । क्योंकि भारत में सूर्य का चमकना आनंद का प्रतीक न होकर सामान्य दिनचर्या के स्थिति का द्योतक है । इसी तरह बारिश और बादल का आना भारत में खुशी का प्रतीक है, लेकिन पश्चिमी देशों में यह दोनों उदासी का प्रतीक है ।

काव्यानुवाद करते समय बिम्ब, प्रतीक, छंद आदि का अनुवाद करते समय जैसी परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, वैसी ही समस्या अनुवादक को काव्य में अलंकारों का अनुवाद करते समय भी ध्यान देना पड़ता है । दूसरी ओर श्लेष और यमक अलंकारों का अनुवाद कारण असंभव है । श्लेष अलंकार एक साथ दो या अधिक व्यंजना प्रस्तुत करता है । जब श्लेष किसी सांस्कृतिक संदर्भ या ऐतिहासिक व्यक्ति के नाम प्रयुक्त हुआ तो उसका अनुवाद किसी भी प्रकार संभव नहीं है ।

भोलानाथ तिवारी, काव्यानुवाद की समस्याएँ, (साहित्य का अनुवाद) पृष्ठ-54

जैसे, "शेक्सपियर के नाटक 'हैलमेट' की निम्न पंक्ति देखी जा सकती है जोकि पोलिनियस से बात करते हुए हैलमेट ने कही है ' The brute part of his killed the capital, calf there'. प्रस्तुत पंक्ति में तीन स्थलों पर श्लेष का प्रयोग हुआ है 'Brute', 'Capital' और 'calf' । इनमें से 'Brute' का प्रयोग 'Brutus' नामक योद्धा को संकेतित करता है और साथ ही उसकी बर्बरता को भी । स्पष्ट है कि हिन्दी लक्ष्य भाषा में ऐसा कोई शब्द नहीं है जो एक साथ 'Brutus, नामक पात्र और उसकी बर्बरता को संकेत रूप से व्यंजित कर सके । 'Capital' का प्रयोग 'राज्य' के अर्थ के साथ ही 'उत्तराधिकारी' के अर्थ को भी व्यंजित करता है । 'calf' 'जानवर' का अर्थ ध्वनित करते हुए 'राजकुमार' की ओर भी संकेत करता है । इन दोनों के लिए भी हिन्दी में कोई समकक्ष पर्याय उपलब्ध नहीं है ।" कविता की भाषा अन्य साहित्यिक भाषा से कई कारणों से भिन्न होती है । विशेष शब्दों के प्रयोग के कारण कविता में सजीवता उत्पन्न होती है । सामान्य शब्दों को तो अनुवादक आसानी से अनुवाद कर देता है, लेकिन विशिष्ट अर्थछवियों का प्रयोग इस कारण नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्येक भाषा में इस प्रकार के शब्द नहीं होते । काव्यशास्त्रीय तत्वों के संदर्भ में काव्यभाषा जितनी जटिल होगी, उसका अनुवाद करना भी उतना ही कठिन होगा ।

लोकोक्तियों-मुहावरों का अनुवाद: सृजनात्मक अनुवाद में एक समस्या लोकोक्तियों-मुहावरों के अनुवाद की भी होती है । लोकोक्ति और मुहावरा किसी समाज और संस्कृति सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक परिवेश और परिस्थितियों के सूचक होते हैं । प्राय: अनुवादक मुहावरा और लोकोक्ति आने पर अनुवाद करते समय उसका शब्दानुवाद कर दिया जाता है । मुहावरे या कहावत की विशेषता यह है कि अर्थ गाम्भीर्ययुक्त होने के साथ-साथ संक्षिप्त एवं साहित्यिक भी होते हैं । अंग्रेजी में ऐसे अनेक मुहावरे हैं जिनके हिन्दी में समानार्थक मुहावरे होने के साथ ही शब्दानुवाद भी उपलब्ध हैं । जैसे- 'To build castles in the air' का हिन्दी में समानार्थक मुहावरा है- 'मन में लड्डू खाना' या 'ख्याली पुलाव पकाना', लेकिन इसका शब्दानुवाद भी उपलब्ध है- 'हवाई किले बनाना' । मुहावरों-लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय प्रथम प्रयास तो यही करना चाहिए कि अनुवादक लक्ष्य भाषा में समतुल्य मुहावरे की खोज करें । दूसरी भाषाओं में समतुल्य मुहावरों की खोज करना आसान नहीं है । यह अनुवादक के भाषा पर अधिकार, अनुवादक के अनुभव पर निर्भर करता है । हमारे भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय समतुल्य मुहावरे मिल जाते हैं, लेकिन अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं के अनुवाद में ही अधिक कठिनाई होती है । कुछ समतुल्य मुहावरे इस प्रकार हैं-

सं. डॉ हरीश कुमार सेठी, सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद, भारतीय अनुवाद परिषद, पृष्ठ-264

1) आँखों में धूल झोंकना- To throw dust in eyes

2) मगरमच्छ के आँसू- Crocodiles tears

3) दुधारी तलवार- Double edged weapon

4) आग से खेलना- To play with fire

5) अंधेरे में रखना- To keep in dark

सामाजिक-सांस्कृतिक भेदों की तरह दो अलग-अलग भाषाओं में मूल्यगत भेद भी होते हैं । हिन्दी और अंग्रेजी के लोकोक्तियों में समान और असमान मूल्यों को व्यक्त करने वाली दोनों प्रकार की लोकोक्तियाँ उपलब्ध हैं । इसका एक ही कारण हो सकता है कि आदर्श मूल्यों को समस्त मानव समाज स्वीकारता है । समान मूल्यों वाली लोकोक्तियाँ हिन्दी में समतुल्य धरातल पर उपलब्ध तो है, लेकिन असमान मूल्यों वाले लोकोक्तियों का शब्दानुवाद किया जाता है । जब कभी समतुल्य मुहावरे-लोकोक्ति का समानार्थक मुहावरा लक्ष्य भाषा में उपलब्ध नहीं होता, तब शब्दानुवाद या भावानुवाद का सहारा लिया जाता है । किसी नए लोकोक्ति का पहले पहल प्रयोग करते समय अटपटा लग सकता है, लेकिन उसके बार-बार प्रयोग करने पर वह अटपटा नहीं रहता । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

1) अध जल गगरी झलकत जाए- Empty vessel makes much noise

2) सफ़ेद झूठ- A white lie

3) विहंगम दृष्टि- A bird's eye view

4) खाली दिमाग शैतान का घर An empty mind is devil's workshop

5) आवश्यकता आविष्कार की जननी है- Necessity is the mother of invention

लोकोक्तियों के अनुवाद में भी मुहावरों की तरह समस्याएँ आती है । लोकोक्तियाँ किसी भी देश की समाज और संस्कृति का द्योतक है । इसलिए किसी लोकोक्ति का दूसरी भाषाओं में समानार्थक लोकोक्ति मिलना आसान नहीं है । अनुवाद करते समय अनुवादक के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों पर अधिकार के साथ ही दोनों भाषाओं की समाज और संस्कृति का भी ज्ञान होना आवश्यक है । अंग्रेजी भाषा में एक लोकोक्ति है- "Out of yhe frying pan into the fire" । इसका हिन्दी में शब्दानुवाद करें तो होगा- "कड़ाही से निकला, आग में गिरा" अर्थात् एक मुसीवत से बचा नहीं कि किसी दूसरी बड़ी मुसीवत में फँस जाना । हिन्दी में इसका समतुल्य लोकोक्ति हैं- "आसमान से गिरा, खजूर में अटका" ।

कई ऐसे लोकोक्ति भी हैं, जो लोकसाहित्य तथा दंत कथाओं पर आधारित होते हैं । ऐसे में अनुवादक को उन लोकोक्तियों के पीछे छिपे कहानियों से अवगत रहना पड़ता हैं या समझना पड़ता है । जैसे "शेखी बघारना", "शेखचिल्ली बनना" । अनुवादक को ऐसे प्रयोगों के पीछे के मर्म को समझना चाहिए । शेखचिली एक सूफी संत थे और वे दारा शिकोह के गुरु भी थे । लेकिन कठमुल्लाओं ने उसे हमेशा मूर्खता का प्रतीक बना दिया । इस दार्शनिक सूफी संत के जीवन को इतना तोड़-मरोड़ कर दिखाया गया कि वह मूर्खता के लिए प्रसिद्ध हो गया । तो "शेखी बघारना" का अर्थ होगा "he is a conventional fool or who builds castles in the air" । लाक्षणिक चमत्कार के कारण दो भाषाओं की लोकोक्तियाँ एक-से बन जाते हैं ।

लोकोक्तियों का संबंध साधारण जनमानस से हैं । लोकोक्तियाँ लोकजीवन को दर्शाते हैं । ध्यान देने की बात यह है कि अंग्रेजी की लोकोक्तियाँ सामान्य शब्दावली के होते हैं, लेकिन उनकी समतुल्य हिन्दी लोकोक्तियों में हमारा लोक जीवन और लोक अनुभव व्यक्त होता है । संस्कृतियाँ भिन्न होने के कारण लोकोक्तियों का शब्दानुवाद प्राय: नहीं हो पाता । जिसके लिए समानान्तर लोकोक्तियों का प्रयोग करना चाहिए ।

निष्कर्ष: सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद निश्चय ही एक कठिन प्रक्रिया है । क्योंकि साहित्य में विशेष रूप से काव्यभाषा और काव्यशास्त्रीय तत्व समाहित रहते हैं । सफल अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि अनुवादक रचना के भाव के साथ-साथ मूल रचना की शैलीपरक विशेषताओं को भी लक्ष्य भाषा में परिवर्तित करना चाहिए । ये विशेषताएँ लोकश्रित, दार्शनिक, काव्यशास्त्रीय, सांस्कृतिक, दार्शनिक, शैलीगत, व्याकरणिक आदि तत्वों के रूप में उपलब्ध होते हैं । कथानुवाद में अनुवादक से पैनी संवेदनशीलता की अपेक्षा की जाती है । भाषा अभिव्यक्ति चाहे कोई भी हो, परंतु मूल भाव में परिवर्तन की अपेक्षा नहीं की जाती । काव्यानुवाद एक कठिन कार्य है । इसके लिए अनुवादक को कवि की संवेदनशीलता, उसकी अनुभूति, उसकी कल्पना के साथ समंजस्य रखना पड़ता है । मूल काव्य की सत्यता, जागरूकता, भावना आदि सभी अनूदित कविता में सफलतापूर्वक परिलक्षित होना चाहिए । इधर भारतीय भाषाओं में लोकोक्ति-मुहावरे का अनुवाद करना आसान है और अनेक समानार्थक मुहावरे-लोकोक्तियों की शब्दावली भी एक जैसे होते हैं । लेकिन जहाँ भाषाओं में सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में अंतर आ जाता है, वहाँ अनुवाद करना कठिन हो जाता है, तब अनुवादक को समतुल्य लोकोक्तियों-मुहावरों को खोजना पड़ता है । परिवर्तित संसार में ऐसा कोई साहित्यकार नहीं है जो मानवीय अनुभूति से संपृक्त न हो । इसी कारण सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद एक अखंड एवं अनवरत प्रक्रिया हैं । विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य के आदान-प्रदान से समाज और संस्कृति के विकास में सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

*****

अनुवाद की आवश्यकता

~मनस्विता शर्मा

अंग्रेजी में एक कथन है : 'Terms are to be identified before we enter into the argument' इसलिए अनुवाद की चर्चा करने से पहले 'अनुवाद' शब्द की मूल अवधारणा या अनुवाद की व्युत्पत्ति से परिचित होना आवश्यक है। 'अनुवाद' शब्द संस्कृत भाषा का यौगिक शब्द है जो 'अनु' और 'वाद' के जुड़ने से बना है। संस्कृत में 'अनु' का अर्थ है 'पीछे' या 'अनुगमन करना' और 'वाद' संस्कृत के 'वद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या 'कहना'। इस 'वद्' धातु में 'घञ' प्रत्यय जुड़ने से 'वाद' शब्द बना और उसमें 'अनु' उपसर्ग जुड़ने पर 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ। अतः 'अनुवाद' का शाब्दिक अर्थ हुआ- 'प्राप्त कथन को पुनः कहना।

आज के समय में 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' का भी पर्याय है और वहाँ यह शब्द फ्रेंच भाषा के माध्यम से आया था। 'ट्रांसलेशन' वस्तुत: लेटिन भाषा का शब्द है। लेटिन भाषा में 'ट्रांस' का अर्थ है 'पार' और 'लेशन' ले जाने की क्रिया में आता है। अतः 'ट्रांसलेशन' का शाब्दिक अर्थ हुआ- 'एक पार से दूसरे पार लेजाना।' यानी एक स्थान बिन्दु से दूसरे स्थान बिन्दु पर ले जाना। यहाँ एक स्थान बिन्दु 'स्रोत-भाषा या 'Source Language' है तो दूसरा स्थान बिन्दु 'लक्ष्य-भाषा' या 'Target Language' है और ले जाने वाली वस्तु मूल या स्रोत-भाषा में निहित अर्थ या संदेश होता है। 'ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' में 'Translation' का अर्थ दिया गया है-

'A written or spoken rendering of the meaning of a word, speech, book, etc. in another language.'

आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुन: कथन' से लेकर आज के 'ट्रांसलेशन' तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में 'स्वांत: सुखाय' माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है।

दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद प्राचीन काल की व्यक्ति परिधि से निकलकर आधुनिक युग की समष्टि परिधि में समा गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

बीसवीं शताब्दी के अवसान और इक्कीसवीं सदी के स्वागत के बीच आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिन्तन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों। भारत में अनुवाद की परम्परा पुरानी है किन्तु अनुवाद को जो महत्व 21वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्राप्त हुआ वह पहले नहीं हुआ था।

सन् 1947 में भारत के स्वतत्र होने के पश्चात देश की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आया। विश्व के अन्य देशों के साथ भारत के आर्थिक एवं राजनीतिक समीकरण बदले। राजनैतिक और आर्थिक कारणों के साथ विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी का विकास भी इस युग की प्रमुख घटना है जिसके फलस्वरूप विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों में सम्पर्क की स्थिति उभर कर सामने आयी।

आज विश्व के अधिकांश बड़े देशों में एक प्रमुख भाषा के साथ-साथ अन्य कई भाषाएँ भी गौण भाषा के रूप में समान्तर चल रही हैं। अतएव एक ही भौगोलिक सीमा की राजनैतिक, प्रशासनिक इकाई के अन्तर्गत भाषायी बहुसंख्यक भी रहते हैं और भाषायी अल्पसंख्यक भी।

अत: विभिन्न भाषाभाषियों के बीच उन्हीं की अपनी भाषा में सम्पर्क स्थापित कर लोकतंत्र में सबकी हिस्सेदारी सुनिश्चित की जा सकती है। वस्तुत: अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़ती हुई आदान-प्रदान की अनिवार्यता ने अनुवाद एवं अनुवाद कार्य के महत्त्व को बढ़ा दिया है।

हमारे देश में अनुवाद का महत्त्व प्राचीन काल से ही स्वीकृत है। प्रो. जी. गोपीनाथन ने ठीक ही लक्ष्य किया था कि अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है। आज के सिमटते हुए संसार में सम्प्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है।

डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया ने ठीक ही लिखा है कि- 'दूर-दूर सीमाओं में बँटी मानव जाति अनुवाद के माध्यम से ही समीप आती जाती है।'

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एक मात्र अचूक साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकनेवाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

अनुवाद के महत्व को कई दृष्टियों से रेखांकित किया जा सकता है।

1. नव्यतम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता:-
औद्योगीकरण एवं जनसंचार के माध्यमों में हुए अत्याधुनिक विकास ने विश्व की दिशा ही बदल दी है। औद्योगिक उत्पादन, वितरण तथा आर्थिक नियन्त्रण की विभिन्न प्रणालियों पर पूरे विश्व में अनुसंधान हो रहा है। नई खोज और नई तकनीक का विकास कर पूरे विश्व में औद्योगिक क्रान्ति मची हुई है। इस क्षेत्र में होने वाले अद्यतन विकास को विभिन्न भाषा-भाषी राष्ट्रों तक पहुँचाने में भाषा एवं अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

वैज्ञानिक अनुसंधानों को तीव्र गति से पूरे विश्व में पहुँचा देने का श्रेय नव्यतम विकसित जनसंचार के माध्यमों को है। आज विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कृषि तथा व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में जो कुछ भी नया होता है वह कुछ ही पलों में टेलीफोन, टेलेक्स तथा फैक्स जैसी तकनीकों के माध्यम से पूरे विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित हो जाता है। आज जनसंचार के माध्यमों में होने वाले विकास ने हिन्दी भाषा के प्रयुक्ति-क्षेत्रों को विस्तृत कर दिया है। विज्ञान, व्यवसाय, खेलकूद एवं विज्ञापनों की अपनी अलग शब्दावली हैं।

2. आयुर्विज्ञान संबंधी शोधों से परिचित होना:- आयुर्विज्ञान ने आज लगभग 95% असाध्य रोगों का उपचार खोज निकाला है। विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य संगठन इस सम्बन्ध में विविध भाषाओं में शोध कार्य कर हैं। इनसे परिचित होने के लिए अनुवाद ही एकमात्र जरिया है। इस तरह अनुवाद मानव सभ्यता और स्वास्थ्य निर्माण का महत्वपूर्ण कारक है।

3. विधि, न्याय, प्रशासन, प्रजातंत्र आदि संबंधी ज्ञान के सम्बर्धन के लिए अनुवाद की भूमिका:– मानव सभ्यता हाजरों वर्षों की विकास प्रक्रिया के बाद प्रजातंत्र और गणतंत्र के युग प्रवेश कर गयी है। अतः शासन, प्रशासन, प्रजातंत्रीय प्रणाली आदि के उत्तरोत्तर विकास के लिए इससे सम्बन्धित विशिष्ट जानकारी के लिए अनुवाद ही एक मात्र महत्वपूर्ण साधन है।

4. संस्कृति के विकास में अनुवाद की आवश्यकता:-
दुनिया के जिन देशों में विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों का मिलन हुआ है वहाँ सामासिक संस्कृति के निर्माण में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। अनुवाद की परम्परा के अध्ययन से पता चलता है कि ईसा के तीन सौ वर्ष पूर्व रोमन लोगों का ग्रीक के लोगों से सम्पर्क हुआ जिसके फलस्वरूप ग्रीक से लैटिन में अनुवाद हुए। इसी प्रकार ग्यारहवीं, बारहवीं शताब्दी में स्पेन के लोग इस्लाम के सम्पर्क में आए और बड़े पैमाने पर योरपीय भाषाओं में अरबी का अनुवाद हुआ। भारत में भी विभिन्न जातियों एवं विश्वासों के लोग आए।

आज की भारतीय संस्कृति जिसे हम सामासिक संस्कृति कहते हैं उसके निर्माण में हजारों वर्षों के विभिन्न धर्मों, मतों एवं विश्वासों की साधना छिपी हुई है।

इन सभी मतों एवं विश्वासों को आत्मसात कर जिस भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है उसके पीछे अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका असंदिग्ध है।

5. धर्म, संस्कृति, दर्शन सम्बन्धी अन्तः सम्बन्धों के विकास का सेतु-अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु है। संश्लिष्ट संस्कृति के निर्माण का मूल कारक है। मानव चेतना के उत्कर्ष के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सौख्य के निर्वाह के लिए हमारे पास एक ही माध्यम है-अनुवाद। विश्व मैत्री का साधन है— अनुवाद। भावात्मक एकता और राष्ट्रीय सामाजिक संस्कृति के विकास का सोपान है-अनुवाद।

6. व्यवसाय के रूप में अनुवाद की आवश्यकता:-
वर्तमान युग में अनुवाद ज्ञान की ऐसी शाखा के रूप में विकसित हुआ है जहाँ इज्जत, शोहरत एवं पैसा तीनों हैं। आज अनुवादक दूसरे दर्जे का साहित्यकार नहीं बल्कि उसकी अपनी मौलिक पहचान है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हुए विकास के साथ भारतीय परिदृश्य में कृषि, उद्योग, चिकित्सा, अभियान्त्रिकी और व्यापार के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का भारतीयकरण कर इन्हें लोकोन्मुख करने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद को महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन करता है। संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के पश्चात् केन्द्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थानों और प्रतिष्ठानों में राजभाषा प्रभाग की स्थापना हुई जहाँ अनुवाद कार्य में प्रशिक्षित हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी अधिकारी कार्य करते हैं। आज रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद सबसे आगे है। प्रति सप्ताह अनुवाद से सम्बन्धित जितने पद यहाँ विज्ञापित होते हैं अन्य किसी भी क्षेत्र में नहीं।

7. साहित्य के अध्ययन में अनुवाद की आवश्यकता:-
साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व आज व्यापक हो गया है। साहित्य यदि जीवन और समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करता है तो विभिन्न भाषाओं के साहित्य के सामूहिक अध्ययन से किसी भी समाज, देश या विश्व की चिन्तन-धारा एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है। अनुवाद का महत्व निम्नलिखित साहित्यों के अध्ययन में सहायक है-
भारतीय साहित्य का अध्ययन।
अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन।
तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन।

भारतीय साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि विभिन्न साहित्यक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों में हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषा के साहित्यकारों का स्वर प्राय: एक जैसा रहा है। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन, स्वतन्त्रता आन्दोलन तथा नक्सलबाड़ी आन्दोलनों को प्राय: सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में अभिव्यक्ति मिली है।

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य के अनुवाद से ही यह तथ्य प्रकाश में आया कि दुनिया के विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य में ज्ञान का विपुल भण्डार छिपा हुआ है। भारत में अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य का अनुवाद तो भारत में सूफियों के दार्शनिक सिद्धान्तों के प्रचलन के साथ ही शुरू हो गया था; किन्तु इसे व्यवस्थित स्वरूप आधुनिक युग में ही प्राप्त हुआ। शेक्सपियर, डी.एच. लॉरेंस, मोपासाँ तथा सार्त्र जैसे चिन्तकों की रचनाओं के अनुवाद से भारतीय जनमानस का साक्षात्कार हुआ एवं कालिदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं प्रेमचन्द की रचनाओं से विश्व प्रभावित हुआ।

दुनिया के विभिन्न भाषाओं के अनुवाद द्वारा ही तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायता मिलती है। तुलनात्मक साहित्य द्वारा इस बात का पता लगाया जाता है कि देश, काल और समय की भिन्नता के बावजूद विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों के साहित्य में साम्य और वैषम्य क्यों है ? अनुवाद के द्वारा ही जो तुलनीय है वह तुलनात्मक अध्ययन का विषय बनता है। प्रेमचन्द और गोर्की, निराला और इलियट तथा राजकमल चौधरी एवं मोपासाँ के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के फलस्वरूप ही सम्भव हो सका।

8. संचार और मीडिया में अनुवाद का योगदान- संसार की लगभग 350 भाषाओं में रेडियो, दूरदर्शन प्रसारण और पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का कार्य हो रहा है। स्पष्ट है कि फिल्मों और सीरियलों तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हम घर बैठे ही विश्व के घटनाचक्रों से, संसार की गतिविधियों से और विविध भाषाओं की कला-चेतना से परिचित हो सकते हैं। इस परिचय का सम्वाहक है— अनुवाद। इस तरह हम देखते हैं कि अनुवाद की भूमिका मानव जीवन और मानव मूल्यों के संवर्द्धन एवं संरक्षण में गुणात्मक एवं विशिष्ट है।

9.राष्ट्रीय एकता में अनुवाद की आवश्यकता
भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग मे अनुवाद की आवश्यकता असंदिग्ध है। भारत की भौगोलिक सीमाएँ न केवल कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखरी हुई हैं बल्कि इस विशाल भूखण्ड में विभिन्न विश्वासों एवं सम्प्रदायों के लोग रहते हैं जिनकी भाषाएँ एंव बोलियाँ एक दूसरे से भिन्न हैं। भारत की अनेकता में एकता इन्हीं अर्थों में है कि विभिन्न भाषाओं, विभिन्न जातियों, विभिन्न सम्प्रदायों एवं विभिन्न विश्वासों के देश में भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता कहीं भी बाधित नहीं होती। एक समय में महाराष्ट्र का जो व्यक्ति सोचता है वही हिमाचल का निवासी भी चिन्तन करता है।

भारत के हजारों वर्षों के अद्यतन इतिहास चिन्तन ने इस धारणा को पुष्ट किया है कि मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन से लेकर आज के प्रगतिशील आन्दोलन तक भारतीय साहित्य की दिशा एक रही है। यह बात अनुवाद के द्वारा ही सम्भव हो सकी कि जिस समय गोस्वामी तुलसीदास राम के चरित्र पर महाकाव्य लिख रहे थे, हिन्दी के समानान्तर ओड़िआ में बलराम, बांग्ला में कृत्तिवास, तेलुगु में पोतना, तमिल में कम्बन तथा हरियाणवी में अहमदबख्श अपने-अपने साहित्य में राम के चरित्र को नया रूप दे रहे थे।

स्वतंत्रता आन्दोलन में जिस साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के विरोध की चिंगारी सुलगी थी उसका उत्कर्ष छायावादी दौर की विभिन्न भारतीय भाषाओं की कविता में मिलता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संसार में आज अनुवाद केन्द्रीय स्थिति में है। 21वीं शताब्दी के मौजूदा दौर में अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश के जन-समुदायों के बीच अंत:संप्रेषण के संवाहक के रूप में अनुवाद का बहुआयामी प्रयोजन सर्वविदित है। यदि आज के इस युग को 'अनुवाद का युग' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि आज जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की उपादेयता को सहज ही सिद्ध किया जा सकता है। धर्म-दर्शन, साहित्य-शिक्षा, विज्ञान-तकनीकी, वाणिज्य व्यवसाय, राजनीति-कूटनीति, आदि सभी क्षेत्रों से अनुवाद का अभिन्न संबंध रहा है। अत: चिंतन और व्यवहार के प्रत्येक स्तर पर आज मनुष्य अनुवाद पर आश्रित है। इतना ही नहीं विश्व-संस्कृति के विकास में भी अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जनता के बीच अंत:संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में, उनके बीच भावात्मक एकता को कायम रखने में, देश-विदेश के नवीन ज्ञान-विज्ञान, शोध-चिंतन को दुनिया के हर कोने तक ही नहीं, आम जनता तक भी पहुँचाने में तथा दो भिन्न संस्कृतियों को नजदीक लाकर एक सूत्र में पिरोने में अनुवाद की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

प्रो. जीगोपीनाथन के शब्दों में, 'अनुवाद मानव की मूलभूत एकता की व्यक्ति-चेतना एवं विश्व-चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है'। अत: मौजूदा शताब्दी में अनुवाद ने अपनी संकुचित साहित्यिक परिधि को लाँघकर प्रशासन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीकी, चिकित्सा, कला, संस्कृति, अनुसंधान, पत्रकारिता, जनसंचार, दूरस्थ शिक्षा, प्रतिरक्षा, विधि, व्यवसाय आदि हर क्षेत्र में प्रवेश कर यह साबित कर दिया है कि अनुवाद समकालीन जीवन की अनिवार्यता है।

हिन्दी अब बाजार-तंत्र की, व्यवसाय-व्यापार की, संचार-तंत्र की तथा शासकीय व्यवस्था की भाषा बन रही है। हिन्दी भाषा में और हिन्दी भाषा से अनुवाद की परम्परा अब सुदीर्घ होने के साथ-साथ पुख्ता और उल्लेखनीय भी होती जा रही है। लोठार लुत्से की बात पर गोर करें तो हमें हिन्दी, मराठी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू या कन्नड़ लेखकों को उनकी भाषा के नहीं, भारतीय लेखक के रूप में देखना चाहिए। तभी भारतीय भाषाएँ भारत में और फिर विश्व में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी। ओड़िआ का लेखक सारे ओड़िशा में प्रतिष्ठा प्राप्त कर ले तो यह कोई छोटी बात नहीं होगी, लेकिन ओड़िआ का लेखक पूरे भारत में प्रतिष्ठा हासिल करें तो यह उससे भी बड़ी बात होगी और उसके लिए चुनौती भी। और जो लेखक इस चुनौती को स्वीकार कर उसमें खरे उतरते हैं, वे सचमुच बड़े, बहुत बड़े लेखक सिद्ध होते हैं। इसके लिए जरूरी है कि भारतीय भाषाओं में अनुवाद की प्रक्रिया को तेज किया जाए। अनुवाद के बिना हमारा कोई भी लेखक यूरोप-अमेरिका तो दूर अपने ही देश में भारतीय लेखक के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो सकता।

अनुवाद आज के व्यावसायिक युग की अपेक्षा ही नहीं अनिवार्यता भी बन गया है। यह एक सेतु है। सांस्कृतिक सेतु। सांस्कृतिक एकता, परस्पर आदान-प्रदान तथा 'विश्वकुटुम्बकम्' के स्वप्न को साकार करने की दृष्टि से अनुवाद की भूमिका उल्लेखनीय रही है। इस प्रकार वर्तमान युग में अनुवाद की महत्ता और उपयोगिता केवाल भाषा और साहित्य तक ही सीमित नहीं है, वह हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय संहति और ऐक्य का माध्यम है जो भाषायी सीमाओं को पार करके भारतीय चिन्तन और साहित्य की सर्जनात्मक चेतना की समरूपता के साथ-साथ, वर्तमान तकनीकी और वैज्ञानिक युग की अपेक्षाओं की पूर्तिकर हमारे ज्ञान-विज्ञान के आयामों को देश-विदेश में संपृक्त करती है।

दूसरे शब्दों में, अनुवाद विश्व-संस्कृति, विश्व-बंधुत्व, एकता और समरसता स्थापित करने का एक ऐसा सेतु है जिसके माध्यम से विश्व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयतावाद के संकुचित एवं सीमित दायरे से बाहर निकल कर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केन्द्र बिन्दु तक पहुँच सकता है और यही अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता का सशस्त एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आज जब सारा विश्व सामाजिक पुनर्व्यवस्था पर एक नये सिरे से विचार कर रहा है और व्यक्ति तथा समाज को एक नव्य स्वतंत्र दृष्टि मिली है वहीं हम भी व्यक्ति और देश को विश्व के परिप्रेक्ष्य में देखने-समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद का महत्व और भी बढ़ जाता है। किसी समाज और देश की अभिव्यक्ति भाषा की सीमा के कारण एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रह जाए और दूसरों तक न पहुँच पाए तो विश्व स्तर पर एक नव्य सामाजिक पुनर्व्यवस्था की बात सार्थक कैसे हो सकती है!

*****

नारी

- स्नेहमिता बोरा

एक शक्ति के प्रतीक है

नारी
एक शक्ति के प्रतीक है
जन्म से लेकर मृत्यु तक
कितनी सुख-दुख चढ़नी पड़ती है
नारी के
आगे सबकुछ
कठिन काम
भी सहज हो उठते हैं,
नारी --- एक शक्ति के प्रतीक है
कहीं-कही नारी के
जन्म को लेकर
होती है बहुत सी गुंजर
लेकिन वहीं लोग नहीं सोचते है
नारी ही वह जड़ है जिसके जड़ीए
इस पृथ्वि को महसुस करने में सहायक होहो उठते हैं

नारी
एक शक्ति के प्रतीक है।

*****

जिन्दगी

-तनुश्री

-जिन्दगी अनमोल है.

इसे नष्ट होने से बचाना चाहिए,
जिन्दगी खुबसूरत है,
इसे तारीफ करना चाहिए।
जिन्दगी एक सपना है,
इसे साकार करना चाहिए,
जिन्दगी एक किस्मत है,
इसको आजमाना चाहिए,
जिन्दगी एक कर्तव्य है,
इसे पूरा करना चाहिये।
जिन्दगी एक दुःख है,
इस पर काबू रखना चाहिए।
जिन्दगी एक आनंद है,
इसका आनंद लेना चाहिए,
जिन्दगी एक अवसर है,
इसका लाभ उठाना चाहिए।

कोशिश जारी है हिम्मत बरकरार है,
इस दुनिया पर छाने की जिद है,...

भरोसा है मुझे अपनी मे मेहनत पर,
एक दिन ये हालात बदलेगे जरूर..

जिन्दगी अनमोल है ..

*****

आजादी के सपने

सुनेना देवी

बरसों से जो देखे थे सपने स्वतंत्रता के
वह साकार हुआ
राष्ट्रपिता के आह्वान से भारत स्वतंत्र हुआ
इससे पहले था भारत पराधीन,
अंग्रंजों ने आकर भारत का शासन अपने
हाथों में ले लिया,
थे करते वह अनेक अत्याचार हम भारतीयों
पर ।
फिर गांधीजी के अहिंसा आंदोलन ने,
देश को झकझोर दिया,
सभी देश के लोग विद्रोह में शामिल हुए ।
विद्रोह के भयंकर रूप देख
अंग्रेज साहबों की छाती धड़कने लगीं
भारत माता की आजादी के नगाड़े बज उठे
भारत माता जी भरकर हंसने लगी
१५ अगस्त को
भारत पर राज करने का मंत्र लिखा गया
सभी लोगों ने मिलकर
राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान किया।

*****

अनुवाद के संदर्भ में क्या करें और क्या न करें ?

- मुहम्मद जियाऊल हक
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग – 793001.

करें	न करें
1. मूल पाठ के प्रति निष्ठावान रहें। इसके लिए यह आवश्यक है कि अनुवाद के लिए दी हुई सामग्री को ध्यान से पढ़ा जाए और वाक्य-संरचना का सम्यक विश्लेषण किया जाए तथा अन्तर्निहित भाव को यथार्थ रूप में ग्रहण किया जाए।	1. मूल पाठ के भाव को अच्छी तरह समझे बिना अनुवाद न करें, अन्यथा लक्ष्य भाषा में भाव विकृत हो जाने का डर रहता है। अत: मूल पाठ को पढ़ने तथा मूल भाव को समझने में जल्दबाजी न करें।
2. वाक्य को इकाई मानकर अनुवाद करें।	2. शब्द प्रति-शब्द अनुवाद न करें, क्योंकि वाक्य का अपना वाक्यार्थ होता है।
3. मूल पाठ के लम्बे और जटिल वाक्यों को लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति के अनुरूप विभक्त करें।	3. लम्बें, अटपटे और अविभक्त वाक्यों की रचना न करें। अनुवाद में एक वाक्यता अपेक्षित है, वाक्य का एक होना नहीं।
4. मूल रचना के अन्तर्गत वाक्य में शब्द के स्थान पर पूरा ध्यान दें। वाक्य में शब्द का स्थान बदल जाने से कभी-कभी भाव-बल बदल जाता है।	4. वाक्य में प्रयुक्त शब्द के स्थान को नजरअंदाज न करें।
5. लक्ष्य भाषा के समानार्थी शब्द को ढूढ़ते समय मूल पाठ के संदर्भ-प्रसंग-विषय का पूरा ध्यान रखें।	5. लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द को ढूढ़ते समय मूल पाठ के संदर्भ-प्रसंग की उपेक्षा न करें।
6. अनुवाद करते समय भाषेतर प्रसंग पर पूरा ध्यान दें।	6. मात्र भाषा और अर्थ की पारस्परिकता पर निर्भर न करें।
7. लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति सरल, सुबोध और सहज भाषा में करें ताकि जिनके लिए अनुवाद किया जा रहा है, वे उसे अच्छी तरह से समझ सकें।	7. जटिल, लम्बे, और अटपटे वाक्यों की रचना न करें, क्योंकि ऐसा करने पर अनुवाद क्लिष्ट, दुर्बोध और असहज हो जाता है, जिससे अर्थ के सम्प्रेषण में बाधा पड़ती है।
8. अनुवाद में अभिव्यक्त लक्ष्य भाषा की प्रकृति और प्रवृत्ति के अनुकूल हो तथा उसमें पठनीयता और प्रवाह हो।	8. लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करते समय स्रोत भाषा की वाक्य संरचना की नक्ल न करें।

9. कभी-कभी विभिन्न विषयों में प्रयुक्त होने वाले शब्द या पदबंध बहि:केन्द्रिक होते हैं, उनका सामान्यत: ज्ञात या प्रचलित अर्थ नहीं होता। विषय-विषय में अर्थ रूढ़ हो जाने के कारण उनका अर्थ सामान्य न रहकर विशिष्ट हो जाता है। ऐसे विशिष्ट शब्दों या पदबंधों का पूरा अथवा संदर्भगर्भित अथवा रूढ़ अर्थ समझकर अनुवाद करें।	9. विभिन्न विषयों के ऐसे शब्दों या पदबंधों का अनुवाद उनके विशिष्ट रूढ़ अर्थ को समझे बिना तथा शब्दश: करें।
10. लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति करते समय जहाँ-जहाँ मूल पाठ के भाव को अक्षुण्ण रखा जाए, वहाँ वाक्य विन्यास लक्ष्य भाषा की संरचना, प्रकृत्ति और प्रयोग के अनुरूप रखा जाए।	10. लक्ष्य भाषा की संरचना, प्रकृति और प्रयोग के प्रतिकूल वाक्य रचना न करें।
11. पारिभाषिक, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों के लिए केवल स्वीकृत पर्याय ही काम में लाएं। यदि स्वीकृत तकनीकी पर्याय उपलब्ध न हों तो मूल शब्द को ही लिप्यांतरित रूप में प्रयुक्त करें।	11. प्रत्येक शब्द को पारिभाषिक, तकनीकी अथवा वैज्ञानिक शब्द मानकर अनुवाद न करें।
12. अनुवाद करते समय किसी संस्था के नाम का भाषान्तरण उस समय तक न करें, जबतक यह सुनिश्चित न हो जाए कि उसका नाम लक्ष्य भाषा में भी रजिस्टर्ड या अनुमोदित है।	12. नामवाचक संज्ञा का अनुवाद प्राय: नहीं करना चाहिए। उसे केवल लिप्यांतरित करें।
13. अन्तर्राष्ट्रीय संकेतों, सूत्रों और प्रतीकों को मूल रूप में लिखा जाना चाहिए।	13. इनके लिप्यांतरण की छूट नहीं है।
14. सम्पूर्ण अनुवाद में श्रोत भाषा की शैली को अक्षुण्ण रखा जाए। रचना का समग्र प्रभाव बना रहने से अनुवाद प्रामाणिक, सटीक और अर्थानुसार रहता है।	14. स्रोत भाषा की अवहेलना करना उचित नहीं कहा जा सकता क्योंकि इससे मूल कथ्य का समग्र प्रभाव विश्रृंखल, विरूपित और विनिष्ट हो सकता है।
15. अभिव्यक्ति में मानकीकृत वर्तनी का अनुसरण करें, शब्दावली की एकरूपता का ध्यान रखें तथा सर्वत्र प्रचलित प्रयोग करें।	15. लक्ष्य भाषा में क्षेत्रीय प्रभाव से बचें।

अनाथ बालक और तेन्दुआ

मूल- बिदरसिं क्र
अनुवाद- तृप्ति रानी आचार्य
वेलिन रंफारपि

(लेखक परिचय- बिदरसिं क्र
जन्म- 27 जून 1956, कार्बि आंलं, असम
मृत्यु- 17 जनवरी 1921, डिफु, असम

साहित्यिक देन- Rup Taineh(कार्बि लोकगीतों का संग्रह) , Akemi Karbi Lamthe Amarjong (कार्बि-अंग्रेजी-असमीया शब्द कोश 2002) Pirbi Alir(उपन्यास) Jangreso(कार्बि लोकप्रचलित कहानियों का संग्रह)।
सामाजिक कार्य- 1978 में 'मंजिर' कार्बि भाषा की पत्रिका का सम्पादन,1980 में 'कार्बि युव समारोह' का उप सचिव, चार बार के लिए 'कार्बि साहित्य सभा' के सभापति।
सम्मान- 2005 ई में साहित्य अकाडेमी,नई दिल्ली से 'भाषा सम्मान' ।
प्रस्तुत कहानी आपकी 'Jangrengso pen Bonkrui' नामक रोचक कहानी का हिन्दी रुपांतर है।)

पुराने जमाने की बात है। एक गाँव में एक अनाथ बालक अपनी माँ के साथ रहता था। वे बहुत ही गरीब थे, तथा वे मजदूरी और भिक्षावृत्ति से अपना पेट पालते थे। धीरे-धीरे बालक बड़ा होने लगा। बालक के थोड़ा सा समझदार होने पर उसकी माँ ने उसे कहा – "बेटा! दिनभर मजदूरी करने पर तुझे जो पाँच मोहर मिले है, उससे तू अपनी मनपसंद का कुछ सामान खरीद ला"।

मोहर मिलने के कारण लड़का बहुत खुश था। वह खुशी-खुशी बाजार चला गया। बाजार पहुँचकर वह कुछ देर तक बाजार के चारों और घुम-घुम कर देखने लगा और अंत में एक जगह पर खड़े होकर ये सोचने लगा कि अब वह बाजार से खरिदे तो क्या खरीदे ? सोचते-सोचते उसकी नजर एक आइने पर पड़ा और उसने आइना खरीदने का मन बना लिया। उसके पास कुल पाँच मोहर था और आइने की कीमत एक मोहर से भी कम था,पर लड़के ने अपनी नासमझी के कारण पाँचों के पाँचों मोहर व्यापारी को देकर वहाँ से चल दिया। आइने के व्यापारी लड़के को मोहर वापस करने के लिए पिछे से बुलाने लगा पर लड़के को लगा कि शायद व्यापारी को और अधिक मोहर चाहिए इसीलिए बुला रहा है, पर क्योंकि उसके पास और मोहर नहीं था इसीलिए वह और तेज-तेज चलने लगा और एकबार भी पिछे मुड़कर नहीं देखा।

लड़का जल्दी-जल्दी घर लौट आया। अपने बेटे को इतनी जल्दी वापस आते देख माँ ने पूछा – "क्यों बेटा बाजार से इतनी जल्दी कैसे वापस आ गया ?" लड़के ने उत्तर दिया – "माँ, मैं बाजार से एक बहुत ही खुबसुरत चींज लाया हूँ और इसीलिए पाँच मोहर देकर जल्दी-जल्दी लौट आया हूँ। वो व्यापारी मुझे बार-बार पिछे से बुला रहा था पर मैंने मुड़कर नहीं देखा,बल्कि और तेज चलकर आ गया हूँ"। लड़का अपनी माँ को आइना दिखाते हुए कहने लगा – "माँ, देखो तो सही, ये कितना सुंदर है, और इसमें तुम्हारी परछाइ भी दिखाइ देती है"।

आइना देखकर माँ को बहुत गुस्सा आया। वह कहने लगी – "इतनी छोटी सी चीज के लिए तूने पाँच मेहर क्यों दे दिए"। गुस्से से लाल-पीला होकर माँ अपने बेटे को मारने लगी। माँ की पिटाइ से नाराज होकर लड़का घर से निकल गया।

गांव से थोड़ी ही दूरी पर एक पहाड़ी इलाके में लड़के को एक तिनको का बना झोपड़ी दिखाइ देता है। झोपड़ी के अंदर घास उग आए थे। लड़का झोपड़ी को साफ करके जैस-तैसे रहने लायक बना लेता है। उसी झोपड़ी में वह एक दिन और एक रात बिताता है। दूसरे दिन झोपड़ी के पास लड़के को एक तेन्दुआ दिखाइ देता है।लड़के को देखते ही तेन्दुआ गरज उठता है तथा उसपर झपटने के लिए अपना मुंह खोलता है। लड़के ने तेन्दुआ को अपनी ओर आते देख कहने लगा – "अरे मुर्ख ! तू मुझे खाना चाहता है ! क्या तू ये नहीं जानता कि तेरे मा-बाप को मैंने ही खाया है ? तेरा वंश खत्म ना हो जाए इसीलिए मैंने तुझे अबतक छोड़ रखा था, पर आज अगर तू खुद चलकर मेरे पास आ ही गया है तो आज मैं तुझे भी खा लूँगा। पिछले करीब सात दिनों से मैं भुखा हूँ, आ आज मौत से पहले तू अपनी माँ-बाप को एकबार देख लें"। लड़के की बात सुनकर तेन्दुआ चौक गया और डर के मारे धीरे-धीरे लड़के के निकट पहुँचा।लड़के ने अपनी झोली में से आइना निकाल कर तेन्दुए के सामने रखकर कहा- "ये देख ये तेरा बाप है"। लड़के ने आइने को झोली में रखकर फिर से उसी आइने को निकाल कर तेन्दुए को दिखाते हुए कहा "देख ये तेरी माँ है"। इस तरह लड़का चालाकी से बार-बार एक ही आइने को दिखा-दिखाकर तेन्दुए से कहता है कि "ये तेरे दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची..... है"। तेन्दुआ बेचारा अपनी ही परछाई को आइने में देखकर डर जाता है और हाथ जोड़कर कहने लगता है कि – "हे प्रभु ! आप मुझे मत मारिए।मुझे बचाकर आप मेरी वंश रक्षा करे। मेरे प्राण के बदले में आप जो कुछ कहेंगे मैं देने के लिए तैयार हूँ"।लड़का थोड़ा देर सोचने का नाटक करते हुए कहने लगा- "अच्छा ठिक है, इस बार के लिए मैं तुझे छोड़ रहा हूँ, पर मेरा एक शर्त है। तूझको मुझे खाना और एक हजार मोहर लाकर देना पड़ेगा, नहीं तो मैं तुझे नहीं छोडूंगा"।

तेन्दुआ खुश हो गया और उछल-उछल कर लड़के के लिए खाने की खोज में निकल पड़ा। रास्ते में तेन्दुए ने देखा कि एक आदमी केला लेकर आ रहा है। उसे देखकर तेन्दुआ झाड़ियों के पिछे छुप गया और जब वो आदमी के झाड़ियों के पास पहुँचते ही तेन्दुआ छलांग लगाकर उसके सामने निकल जाता है। तेन्दुए को देख आदमी केला फेंककर भाग जाता है।तेन्दुआ फेंके हुए केले को अपनी मुँह में लेकर लड़के के पास पहुँचता है।

लड़के को केला देकर अब तेन्दुआ फिर से लड़के के लिए मोहर की खोज में निकल पड़ता है। चलते-चलते तेन्दुए को रस्ते में एक राजा दिखाइ देता है, जो अपनी सेनाओं के साथ एक जगह से दूसरी जगह जा रहे थे। तेन्दुआ फिर से झारियों में छुपकर बैठ जाता है और ये पता लगाने कि कोशिश करता है कि मोहर बगेरा किसके साथ है। राजा को आगे पिछे बहुत सारे लोग थे पर तेन्दुए ने अपनी बुद्धि के बलपर ये पता लगा लेता है कि मोहर वाला व्यक्ति सबसे पिछे की कतार में है। मौका देखकर तेन्दुए ने फिर से छलांग लगाया । तेन्दुए को देखकर मोहर वाला व्यक्ति डर के मारे मोहरों की पोटली को वहीं फेंक कर वहाँ से भाग गया। इसबार भी तेन्दुआ मोहरों से भरी पोटली कों मुंह से खींचता हुआ लड़के के पास पहुँचता है। मोहरों से भरी पोटली लड़के को देकर तेन्दुआ कहता है- "हे प्रभु ! क्या अब मैं जा सकता हूँ?"

लड़के ने कहा – "मैंने तो बहुत दिनों से कुछ नहीं खाया हैं, इसीलिए मैं बहुत कमजोड़ हो गया हूँ। मैं इस मोहर की पोटली को कैसे ले जै सकुँगा ? इसीलिए तुझे ही इस पोटली को मेरे घर तक पहुँचाना होगा। उसके बाद ही तू जा सकता है"।

अतः लड़के के पिछे-पिछे तेन्दुआ मोहरों से भरा पोटली खींचते हुए ले जाने लगा। गाँव पहुँचते ही गाँव के लोगों ने देखा कि लड़के के पिछे-पिछे एक तेन्दुआ भी चला आ रहा है। ये दृश्य देखकर गाँव के लोग चौक गए । गाँववालों के साथ-साथ लड़के की माँ भी अपने बेटे के साथ तेन्दुए को आते देख हैरान हो जाती है।

तेन्दुए ने मोहरों की पोटली को लड़के के घर के आँगन तक पहुँचाने के बाद लड़के ने तेन्दुए से कहा- "ठिक है, अब तू जा सकता है", और तेन्दुआ वहां से चला जाता है।

इस तरह उन मोहरों से मां-बेटा खुशी-खुशी दिन बिताने लगे।

(बुरे से बुरे परिस्थितियों को भी बुद्धि से जीता जा सकता है)

*****

" माँ "

- मिलानी लुक्राम

माँ, तुम्हारा प्यार एक रहस्य है:

तुम यह सब कैसे कर सकती हो?

आप हमेशा मेरी छोटी-बड़ी समस्याओं का सटीक समाधान लेकर मौजूद रहते हैं।

आपका प्यार दिन-ब-दिन मेरी रक्षा करता है,

इसलिए मैं निडर, सुरक्षित और स्वस्थ हूं।

मुझे लगता है कि जब भी आप आसपास होते हैं तो मैं कुछ भी कर सकता हूं।

माँ, आपका प्यार एक रहस्य है।

एक माँ की बाँह मुझे जन्म दे रही है,

उसके प्यार भरे स्पर्श, उसकी प्यार भरी बाँहों में जन्मा है,

प्यार बढ़ रहा है, उम्र बढ़ रही है, जिन दिनों मैं डर रहा हूँ,

मैं उसकी बाँहों में हूँ, उसकी बाँहें अब भी ज़रूरत के समय पहुँच जाती हैं,

कभी-कभी बहुत दूर हो जाती हैं, लेकिन वे अभी भी लिपटी रहती हैं।

मेरे चारों ओर, प्यार भरी बाहें, हर दिन मुझे प्यार की ज़रूरत होती है,

मैं अपनी माँ की बाहों के बारे में सोचता हूँ ,

माँ, तुम्हारा प्यार एक रहस्य है:

तुम यह सब कैसे कर सकती हो?

माँ होने का मतलब है,

विनम्र, सुंदर, अराजक, अद्भुत, तनावपूर्ण, विक्षिप्त, निराशाजनक,

अद्वितीय और ज्ञानवर्धक चीजों को अपनाना जो केवल यह महत्वपूर्ण भूमिका ही ला सकती है।

जब धरती पर दिन ख़त्म हो जाते हैं,

एक माँ का प्यार जीवित रहता है,

कई पीढ़ियों तक, हर एक पर भगवान का आशीर्वाद,

माँ, तुम्हारा प्यार एक रहस्य है:

तुम यह सब कैसे कर सकती हो?हता है।

OBJECTIVE OF THE COURSE

1. To provide training in translation for job of Translator, Hindi Officer in various fields.
2. To make aware of the usefullness of latest Information and Communication Technology.
3. To Learn about the skill of making translation.
4. To clarify the creative role in translation in the global scenario.
5. To provide practical training for official translation.
6. To make the students/trainees familiar towards the linguistic nature of the Bank, Insurance, Parliament, Law amd Media sectors.
7. To provide training in interpretation.
8. To introduce the aspects of Print and Electronic media and Journalism.
9. To make efficient in technical terminology lexicography and functional Hindi.
10. To make practical sense of translation along with the theoretical knowledge of diverse dimensions and disciplines.
11. To create parallel proficiency in English & Hindi language.
12. To inculcate the competitive mindset of the students.

Shabda Bharati

PG DIPLOMA IN TRANSLATION

Recognized by Govt of India

कैसे बनी शब्द भारती : गठन से वर्तमान तक का सफर

मोहन कोईराला
सचिव
शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)

सन 1994 की बात है। मुझे अचानक एक दिन डाक से पोस्ट कार्ड पर लिखा हुआ एक पत्र मिला। पत्र लिखनेवाले दिल्ली के प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा थे जो भारतीय अनुवाद परिषद के सचिव भी थे। मेरी उनसे पूर्व की कोई लान-पहचान नहीं थी। मेरा पता उन्हें साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग या कादम्बिनी पत्रिका से मिली होगी जहां मैं उन दिनों लिखता था। शायद उन पत्र-पत्रिकाओं में मेरी रचनाएं पढ़कर होगा कि पत्र में उन्होंने लिखा था कि वे पूर्वोत्तर भारत पर एक पुस्तक का लेखन कर रहे हैं, इसलिए पूर्वोत्तर के अनुवाद साहित्य पर उन्हें कुछ सामग्री देकर सहायता करनी है। मैंने उन्हें यथासमय पूर्वोत्तर पर सामग्री भेज दी। इस तरह उनके साथ पत्राचार चलता रहा। 1995 में किसी प्रशिक्षण के लिए मैं दिल्ली गया था। दैहिक मुलाकात करने के लिहाज से वहां मैंने उन्हें फोन किया कि मैं पहली बार दिल्ली आया हूं। वे भारतीय अनुवाद परिषद के बारखंबा रोड स्थित कार्यालय में थे। मुझे वहीं उन्होंने बुलाया । परिषद के कार्यालय में उनसे बहुत देर तक बातचीत हुई। अंतत: उन्होंने मुझे परिषद की कुछ सामग्री दी और कहा कि पूर्वोत्तर में इस प्रकार का कोई अनुष्ठान बनाने का काम करो , विद्यार्थियों का कल्याण होगा।

गुवाहाटी वापस लौटकर मैंने सामग्री का अध्ययन किया और किसी विद्यमान संगठन के साथ मिलकर वाकसेतु अनुवाद पाठ्यक्रम खोलने के बारे में सोचा। मैं पहले पूर्वांचल प्रहरी समाचार-पत्र में उप संपादक का काम कर चुका था, इसलिए जी.एल.अग्रवाल जी को पहचानता था। अत: सबसे पहले मैं जी. एल. अग्रवाल जी के पास गया और उनसे इस विषय पर चर्चा की । उन्होंने 'ठीक है, देखेंगे' कहकर मुझे विदा कर दिया। करीब दो साल तक मैं उनसे मिलकर अनुवाद पाठ्यक्रम लाने के बारे में चर्चा करता रहा पर सफल नहीं हो पाया।

भारतीय जनता पार्टी गुवाहाटी महानगर के सदस्य बनमाली शर्मा से भी मेरा हिंदी के नाते परिचय था। उन दिनों गणेशगुरी के फ्लाईओवर के पास होटल अम्बरीश के सामने उनका एक ग्लोबल इंस्टीट्यूट चलता था जहां हिंदी की टाईपिंग भी सीखायी जाती थी। कुछ महीनों के बाद उनसे एक दिन मुलाकात हुई और मैंने पाठ्यक्रम के खोलने के लिए उनसे अनुरोध किया। उन्होंने 'विचार करूंगा, बहुत अच्छा ' कहकर मेरा उत्साहवर्धन किया।

जारी..

लगभग एक साल के बाद अचानक वे मुझे गणेशगुड़ी के रामधेनु प्रिंटिंग प्रेस में मुझे मिल गए। मैंने उन्हें स्मरण दिलाया तो बोले 'मैं कुछ कर रहा हूं जल्दी ही यह काम करना पड़ेगा।' कुछ महीनों के बाद उन्होंने खबर दी कि मैं उनसे मिलूं और वे मुझे एक जगह ले जाएंगे। मैं जाकर उनसे मिला और और हम दोनों जयानगर स्थित केंद्रीय हिंदी संस्थान के कार्यालय गए। उस दिन वहां सहायता अनुदान आवंटन समिति की मीटिंग हो रही थी। वहां असम के डीपीआइ बरदलोइ साहब भी मिले और साथ में हिंदी के प्रचारक और असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री सूर्यवंशी चौधुरी भी मिले। बनताली शर्मा जी ने भूमिका बांधी और मैंने दोनों के समक्ष इस पाठ्यक्रम को खोलने की बातें रखीं तो बरदोलोइ जी ने सूर्यवंशी चौधुरी को इस पाठ्यक्रम को चलाने का अनुरोध किया। सूर्यवंशी चौधुरी ने भी 'देखेंगे बहुत अच्छा काम है ' कहकर हम दोनों को विदा कर दिया। इस तरह दो साल और बीत गए।

एक दिन आफिस में अचानक सूर्यवंशी चौधुरी का एक लड़का मेरे पास आकर मुझे पांच हजार रूपए का एक ड्राफ्ट देकर गया। और कहा कि मुझे सूर्यवंशी जी ने बुलाया है। मैं रात को जाकर उनसे मिला तो उन्होंने मुझे इस पाठ्यक्रम को उनकी समिति के अधीन चलाने की बात कही और पैसों का मदद करने की बात भी कही। मैंने दिल्ली में डा. विमलेश जी से फोन करके बात की और उन्होंने पाठ्यक्रम चलाने की अनुमति दे दी। विमलेश जी के कहे अनुसार सारी आफिशियल काम पूरे कर दिए गए। और इस प्रकार 16 अगस्त 1999 में दिसपुर हायर सेकेंडरी स्कूल में वाकसेतु अनुवाद पाठ्यक्रम का शुभारंभ हो गया। मेरे जान-पहचान के राजभाषा अधिकारियों और अन्य लेखकों को मैंने अध्यापन कार्य के लिए जोड़ा। तब सर्व प्रथम जुड़नेवालों में से यूको बैंक के राजभाषा अधिकारी अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी, असम सेंसस के राजभाषा अधिकारी मातबर सिंह चौहान, और सेंटिनल के संपादक अनिल कुमार जी थे। इस प्रकार, किसी तरह दिसपुर हायर सेकेंडरी में अनुवाद पाठ्यक्रम का एक साल चल गया। तब के पढ़नेवाले विद्यार्थियों में जहां तक मुझे याद है लक्ष्मी थी जो आजकल उर्वरक मंत्रालय, दिल्ली में सहायक निदेशक है, राजेन्द्र राम थे जो आजकल नेह में राजभाषा अधिकारी है। उस समय के 7/8 विद्यार्थी ही रहे होंगे जो सभी कहीं न कहीं नौकरियों में हैं। दिसपुर हायर सेकेंडरी स्कूल ऑथरिटी की तरफ से अगले साल पढ़ाने का कमरा न दे सकने की बात कही गई। पढ़ाने की जगह की तलाश में मैं और त्रिवेदी जी जाकर दिसपुर लास्टगेट में रहनेवाले विल्डवर्थ लिमिटेड के आर.के. गिरि जी से मिले। उन्होंने हमें राम नगीना सिंह जी से मिलवाया। राम नगीना सिंह जी पूवांचल विद्यापीठ स्कूल तथा विल्डवर्थ लिमिटेड के मालिक थे। शनिवार और रविवार को पाठ्यक्रम चलाने के हेतु स्कूल में जगह देने के लिए वे तैयार हो गए।

सन् 2000 से फिर पाठ्यक्रम पूवांचल विद्यापीठ स्कूल में चलने लगा। दूसरे वर्ष (2001) में पढ़ाने के लिए गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अच्युत शर्मा और स्टेट बैंक के राजभाषा अधिकारी कालीचरण बासफोर, ईलाहाबाद बैंक के विनय दूबे जी और यूनाइटेड एश्योरेन्स कॅपनी के राजभाषा अधिकारी डॉ. दीनेश कुमार शर्मा जी को भी जोड़ लिया गया। पृष्ठभूमि से डा. नंदकिशोर सिंह और विवेक श्रीवास्तव जी का समर्थन मिल रहा था।

जारी..

दूसरे वर्ष के अंत में विवाद की अनेक बातें उभरीं और सभी फेकल्टी ने असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अधीन वाकसेतु अनुवाद पाठ्यक्रम हेतु काम न करने का निर्णय लिया। और इसलिए तीसरे वर्ष के शुरू होने से पहले-पहले असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से हटकर एक स्वतंत्र अनुष्ठान बनाने और उस अनुष्ठान के अधीन वाकसेतु अनुवाद पाठ्यक्रम की परिकल्पना चलने लगी।

संगठन बनाने के लिए एक ड्राफ्रट तैयार किया गया। मैंने ये बातें श्री अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी जी से चर्चा की और उन्होंने इस तरह के एक संस्थान खोलने में रूचि भी दिखायी और कहा कि **शब्द सरस्वती** नाम से एक संस्थान बनायी जाए जहां हिंदी से संबंधित सब कुछ उपलब्ध हो। उस सामग्री को लेकर मैं सबसे पहले नर्थ गुवाहाटी हिंदी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के सेवानिवृत्त अध्यक्ष एवं हिंदी के वरिष्ठ लेखक डॉ. परेशदेव शर्मा के उलुबाड़ी के घर 'मरमी पँजा' पर जाकर उनसे मिला और अनुष्ठान बनाने और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने की बात कही। उन्होंने भी मेरे हौसले को जगाते हुए मुझे कस्तूरबा गांधी ट्रस्ट से संबंधित कुछ सामग्री दी क्योंकि उन दिनों वे कस्तूरबा गांधी ट्रस्ट के अध्यक्ष भी थे और उसीके तर्ज पर एक संविधान का ड्राफ्ट तैयार करने और कुछ विद्वतजनों के पास जाने की की सलाह दी। उक्त कार्य करके उनके ही परामर्श से मैं डॉ. विवेक कुमार श्रीवास्तव, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के रीडर से मिला। उसके बाद फिर प्रागज्योतिष कालेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. नंद किशोर सिंह जी से मिला। इस प्रकार उनके परामर्श से ड्राफ्ट में संशोधन किया गया और नए बननेवाले अनुष्ठान का नाम शब्द सरस्वती के बदले उन्होंने **शब्द भारती** रख दिया।

सभी विद्वानों के परामर्श और फेकल्टी के सहयोग से सन् **2001 के 4** जनवरी को शब्दभारती का गठन हुआ। उस समय नाम दे,ाकर अजयेन्द्र त्रिवेदी जी ने 'हिन्दी संसाधन केन्द्र' टैगलाईन रखने की बात कही थी। इसलिए शब्द भारती का पूरा नाम केवल शब्द भारती न होकर **'शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)'** रखा गया जो इसी नाम से पंजीकृत है। इस प्रकार, **1999 और 2000** का सत्र असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अधीन चला और **2001** से उक्त पाठ्यक्रम स्वतंत्र रूप से गठित शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र) के अधीन चलने लगा।

शब्द भारती की नवगठित समिति में डॉ. अच्युत शर्मा जी अध्यक्ष थे और अनिल कुमार जी और श्री मातबर सिंह चौहान उपाध्यक्ष थे। और मुझे सचिव बनाया गया था। त्रिवेदी जी का उसी साल ट्रांसफर हो जाने के कारण वे गुवाहाटी से चले गए थे, इसलिए वे समिति में नहीं थे। तदंतर, एक साल बाद के.सी. दास कॉमर्स कॉलेज के हिंदी के विभागाध्यक्ष डॉ. राधेश्याम तिवारी को भी उपाध्यक्ष बनाया गया। और उसी वर्ष एक अनुवाद ब्यूरो का गठन करके श्री मातबर सिंह चौहान को ब्यूरो का अध्यक्ष बनाया गया था। ब्यूरो इसलिए बनाया गया था क्योंकि शब्द भारती को चलाने के लिए मेम्बर्स द्वारा दिया जानेवाला सामान्य शुल्क अपर्याप्त होता था। अनुवाद ब्यूरो में अनुवाद का काम कराने से धन का एक अच्छा स्रोत आता था जिससे शब्द भारती को मदद मिलती थी। डॉ. नंदकिशोर सिंह और डॉ. विवेक कुमार श्रीवास्तव के परामर्श के अनुसार संविधान में संशोधन करके पूरे पूर्वोत्तर के आठ राज्यों के 20 श्रेष्ठ विद्वानों और वरिष्ठ नागरिकों को इसका संरक्षक भी बनाया गया था।

जारी..

रामनगीना जी की वार्धक्य अस्वस्था थी, इसलिए पूर्वांचल विद्यापीठ का कमान उनके लड़कों के हाथ में आने के कारण वे शब्द भारती को जगह देने के लिए आपत्ति करने लग गए थे। लेकिन तब तक शब्द भारती आर्थिक रूप कुछ स्वच्छल भी बन गई थी। इसलिए उसने 2004 में कनक भवन में मासिक रू.4000/- में एक किराए का मकान ले लिया और पूरा अनुष्ठान वहीं शिफ्ट हो गया। सन 2005-06 के दौरान उपाध्यक्ष श्री अनिल कुमार ने व्यक्तिगत कारण से अपना पद छोड़ दिया था तब उनके स्थान पर श्री अशोक कुमार मिश्र जी को उपाध्यक्ष बनाया गया था। इसी बीच गुवाहाटी रिफाइनरी के प्रवीण बलिया भी संकाय के रूप में जुड़ चुके थे।

सन् 2004 से 2016 तक कनक भवन में स्थित शब्द भारती का कार्यालय

कनक भवन में शब्द भारती के साथ अनेक लोग जुड़ गए और करीब 12 साल शब्द भारती के कार्यकलाप वहीं से चलाया जाता रहा। 2008 में शब्द भारती के अध्यक्ष अच्युत शर्मा, उपाध्यक्ष डॉ. राधेश्याम तिवारी ने त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र देने के पीछे शब्द भारती को तोड़ कर नया अनुष्ठान बनाने हेतु विद्या भारती के प्रकाशक श्री गोविंद गोस्वामी की जो भूमिका थी उसे यहां बयाँ करना उचित नहीं होगा। इसके बाद नए अध्यक्ष के रूप में राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर के प्रोफेसर अनंत कुमार नाथ अध्यक्ष बनकर आए। दूसरे उपाध्यक्ष के रूप में श्री मातबर सिंह चौहान ने भी सन 2009 में व्यक्तिगत कारण दिखाकर पद से त्यागपत्र दे दिया था, इसलिए उस समय से लगभग 2011 तक यह पद खाली रहा। सन् 2012 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दिलिप कुमार मेधी जी उपाध्यक्ष बनें जो अभी तक निरंतर अपनी सेवा दे रहे हैं।

.. जारी..

कनक भवन में शब्द भारती के नए कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर काव्य गोष्ठी 'शारदीय कविताओं की एक शाम'

2015-16 में असम सरकार द्वारा कनक भवन क्षेत्र को कामर्शियल जगह घोषित कर दिया गया था। और जिसके चलते मकान का किराया बढ़ा दिया गया था। उस समय डॉ. अनंत कुमार नाथ के परामर्श से अनुष्ठान को उनके बेलतला स्थित मकान में शिफ्ट कर दिया गया। हालांकि, बेलतला स्थित भवन में पाठदान की सुविधा नहीं थी, वहां केवल शब्द भारती का छोटा-सा आफिस ही चलता था और प्रशिक्षण की व्यवस्था शनिवार और रविवार को किराए देकर बेलतला कॉलेज में किया गया। इस प्रकार 2015-16 से 2017-18 तक पाठदान की व्यवस्था बेलतला कॉलेज में ही चलता रहा। 2017 में डॉ. अनंत कुमार नाथ के बेलतला स्थित टेम्पोरेरी मकान को तोड़ कर पक्का मकान बनाने का काम शुरू किया, इसलिए आफिस को वहां से रू.5000/- के किराए से शिव मंदिर पथ के मदन शर्मा जी के घर पर शिफ्ट करना पड़ा। 2019 में मकान के अर्ध-निर्मित अवस्था में शब्द भारती को अध्यक्ष के परामर्श से फिर से डॉ. अनंत कुमार नाथ के बेलतला स्थित नए पक्के के मकान में शिफ्ट कर दिया गया। इस शिफ्टिंग में पाठदान के लिए एक हॉल और आफिस दोनों एक साथ एक ही स्थान पर आ गए, जिसका किराया प्रतिमाह रू.3000/- दिया जा रहा है। इस तरह शब्द भारती को बार-बार इधर से उधर शिफ्ट कराने के कारण उसके स्थायीत्व में धीरे-धीरे प्रश्नचिह्न लगते जा रहे हैं। 2008-09 के बाद दूसरे खेमे के अनेक लोगों का कहना था कि शब्द भारती दो-चार सालों की मेहमान है। हिन्दी के अन्य अनुष्ठानों की तरह यह भी शीघ्र ही दम तोड़ देगी। परंतु अभी 2020 तक ऐसा नहीं हुआ है। जबकि यदि 2001 से भी गिना जाए तो 2025 में इसकी रजत जयंती मननी चाहिए जो दो युग पार करके तीसरे युग में अपना कदम रखेगी।

.. जारी..

कॉटन कॉलेज में आयोजित शब्द भारती का प्रथम स्थापना दिवस- 2004 में

शब्द भारती का पंचम स्थापना दिवस समारोह कॉटन कॉलेज में -2008 में एवं हिंदी के प्रख्यात लेखक प्रचारक श्री चित्र मंहत जी को अनुवादश्री पुरस्कार प्रदान का क्षण

शब्द भारती के संरक्षक मंडली के गतिशील संरक्षक डॉ. जगमल सिंह

.. जारी..

शब्द भारती दवारा प्रकाशित अनुवाद भारती के 8वें अंक का विमोचन –2010 में

शब्द भारती दवारा प्रकाशित अनुवाद भारती के 7वें अंक का विमोचन कार्यक्रम– 2008 में

गुवाहाटी ग्रंथ मेले के एक कार्यक्रम में शब्दभारती के उपाध्यक्ष प्रोफेसर दिलिप कुमार मेधि जी का सम्मान

शब्द भारती के गठन के सूत्रधार डॉ. नन्द किशोर सिंह
शब्द भारती के एक कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए

यहां यह प्रश्न उल्लेखनीय है कि आखिरकार कैसे यह अनुष्ठान 'लाभ नहीं-हानि नहीं' के आधार पर अभी तक चल रहा है? इसके पीछे के कारणों को देखा जाए तो मुझे लगता है इस अनुष्ठान में यहां से पढ़े हुए छात्र-छात्राओं द्वारा किए गए मदद, अनुवाद ब्यूरो के काम से प्राप्त राजस्व, मेम्बर फी और पढ़ रहे विद्यार्थियों का शुल्क एवं कुछ धनाढ़ बिजनेस पर्सनेलिटीज की उदारतापूर्वक किया गया सहयोग भी है। यहां इतने सारे लोगों का नाम लिखना तो संभव नहीं होगा, परंतु शब्द भारती टिकी है तो यह उनके ही आशीर्वाद और मदद से। केवल दो वर्ष (2005-06 और 2006-07) के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा दिए गए 49,000+49,000 के ग्रांट इन एड को छोड़कर अभी तक शब्द भारती ने न तो भारत सरकार के पास हाथ फैलाया है और न ही असम सरकार के पास। धीरे से ही सही यह अपने बलबूते पर ही चल रही है।

प्रबुद्ध पत्रकार और सांसद राजनाथ सिंह का शब्द भारती में पदार्पण-2003 में

.. जारी..

असम के प्रख्यात अनुवादक नवारूण वर्मा जी शब्द भारती के एक कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए

शब्द भारती द्वारा किए गए कल्याणमूलक कार्य:

वर्ष 2019 से शब्द-भारती ने बीपीएल परिवार के विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए शुल्क में रियायत दे दिया है। इसके साथ ही शब्द भारती द्वारा आयोजित कम्पेटेटिव परीक्षा में मानदंड से ज्यादा अंक लानेवाले कॉलेज, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को भी शुल्क में रियायत दे दिया है। विद्यार्थियों को विभिन्न कल्याणकामी अनुष्ठानों के कार्यक्रम से जोड़ा है ताकि उनका मानसिक विकास तड़ित गति से हो और किसी भी सरकारी, गैर-सरकारी सेवा में जाने के लिए वे अपने मनोबल को दृढ़ बना सके। विभिन्न प्राइवेट भर्ती एजेन्सियों के साथ भी शब्द भारती के विद्यार्थियों को जॉब में रखने के लिए बातचीत होती रही है। एम्प्लायमेंट न्यूज के नौकरी संबंधी विज्ञापन, प्राइवेट एजेन्सियों के नौकरी संबंधी विज्ञापन भी ह्वाट्सएप ग्रुप में परिचालित कर विद्यार्थियों को उत्साहित किया जाता रहा है। समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करके विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। रचनात्मक लेखन के लिए भी विद्यार्थियों को मंच दिया गया है।

अरूणाचल में शब्द भारती के विस्तार केंद्र अरूण भारती का उद्घाटन- 2006 में

इंटरप्रिटेशन पर कार्यशाला- भारतीय संसद के प्रख्यात इंटरप्रिटर रमेन शर्मा और भाषाविद डॉ. परेशदेव शर्मा

.. जारी..

इसके अतिरिक्त, 2018 से रियायत दर पर विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-यात्रा शुरू किया गया। पहला अध्ययन यात्रा बिहार के राजगीर, बौधगया के लिए कराया गया और दूसरा अध्ययन यात्रा 2019 में दार्जिलिंग और पशुपति के लिए कराया गया। इससे पहले अनुवाद पिकनिक के तौर पर विद्यार्थियों को किलिंग, सीताजखला, हाहिम, बाको, चंद्रपुर और उमत्रु का दर्शन भी कराया गया है।

शब्द भारती द्वारा 2018 में बोधगया का शैक्षणिक भ्रमण

शब्द भारती द्वारा 2018 में राजगीर का शैक्षणिक भ्रमण

शब्द भारती द्वारा 2018 में नालन्दा का शैक्षिक भ्रमण

शब्द भारती द्वारा 2019 में दार्जिलिंग का शैक्षिक भ्रमण

एसएससी कोर्स:

एसएससी या अन्य सरकारी एजेन्सियों द्वारा ली जानेवाली हिन्दी अनुवादक की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए शब्द भारती ने 2018 से अभ्यास कोर्स भी निशुल्क चलाना आरंभ किया है। इस कोर्समें अभ्यास करके विद्यार्थी अनुवादक की नौकरी पा रहे हैं।

संवर्धन कार्य:

दूर-दराज के विद्यार्थी गुवाहाटी आकर पढ़ नहीं पाते हैं, इसलिए संभावना को देखते हुए शब्द भारती कभी-कभी अपने प्रोग्राम का विस्तार भी करती है। इस तरह का एक विस्तार कार्यक्रम नीरजुलि, अरूणाचल प्रदेश में दो साल के लिए चलाया गया था। उसके बाद कोहिमा, नागालैंड में भी दो साल चलाया गया था। नगांव कॉलेज के तत्वावधान में भी दो वर्ष एक विस्तार कार्यक्रम चलाया गया। पिछले वर्ष से लंका कॉलेज के हिन्दी विभाग के अंतर्गत डॉ. गुणेश्वर शईकीया और हिटलर सिंह के नेतृत्व में एक और विस्तार कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

शब्द भारती द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी- 2015 में

.. जारी..

इंटरप्रिटेशन पर कार्यशाला- भारतीय संसद के प्रख्यात इंटरप्रिटर रमेन शर्मा और भाषाविद परेशदेव शर्मा

बेलतला कॉलेज में शब्द भारती के वाकसेतु अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के डॉ. कार्यकलापों का एक दृश्य- 2016 में

पुराने उत्साही संकायों का योगदान:

गोलोक चंद्र डेका, प्रदीप शर्मा, गुलाब यादव, उदिता जैन, कालीचरण बासफोर, डॉ. अच्युत शर्मा, डॉ. राधेश्याम तिवारी, अनिल कुमार, प्रवीण बालिया, अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी, प्रोफेसर टी.के.झा, डॉ. ज्ञानम आदि।

नए उत्साही संकायों का योगदान:

हर वर्ष शब्द भारती में नए-नए युवा उत्साही अनुभवी संकायों को जोड़ा जा रहा है। वर्ष 2011 से 2017 तक लोचन माखीजा, प्रवीण भारद्वाज, डॉ. चंद्रलेखा शर्मा, दिव्यज्योति डेका, डॉ. संजय सिंह, बी.बी.मुर्मु, के.के.पांडेय, कमल कुमार, विरेन्द्र कुमार सिंह, नीरज श्रीवास्तव। वर्ष 2018 से मनोज कुमार, दीपक कुमार, गौरांग पाल, सुश्री बिनीता ब्रह्म, सागरिका दत्त, रामेश्वर शर्मा, हिटलर सिंह, गुणेश्वर शईकीया, सरस्वती सिंघा, तृप्तिरानी आचार्य आदि को जोड़ा गया।

इससे पहले जिन लोगों ने शब्द भारती को अध्यापन की सेवाएं दी उनमें- अजय कुमार, मनोरंजन प्रसाद, रवि पासवान, विकास भैमिक आदि का नाम भी लिया जा सकता है।

उम्दे किस्म के विद्यार्थी जो शब्द भारती से प्रशिक्षण लेकर विभिन्न नौकरियों में हैं, समय-समय पर उनके भी अनुभवों की सेवा ली जाती रही है। इस संदर्भ में राजेन्द्र राम, एन.ओ. सिंह, नव बरा, संचिता चक्रवर्ती, जयंतिका मुखर्जी, विष्णुकमल तामुली, ज्योति प्रकाश सक्सेना, नमितारानी पाल, मासूमा अख्तर, पूजा सिंह, देवानंद दास, काशिरा जहान, पिनांकी दे, निर्माली देवी, काकुमणि भरद्वाज का नाम उल्लेख्य हैं।

श्री रमेश कुमार ने 2002 से लगातार 2008 तक और श्री प्रवीण कुमार ने 2009 से 2015 तक शब्द भारती के कार्यालय संचालन में विशेष सहयोग दिया जो भुलाए नहीं भूलता। श्री जे.पी.सक्सेना और मौसुमी चौधुरी ने भी शब्द भारती के जटिल समय में कार्यालय संचालन में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया है। श्री रमेश कुमार वर्तमान कोलकाता में नौकरी कर रहे हैं और प्रवीण कुमार चौहाण दिल्ली में । मोसुमी चौधुरी गुवाहाटी में नौकरी में है और श्री जे.पी.सक्सेना गुवाहाटी में स्वयं के ग्लास का कारोबार कर रहे हैं।

.. जारी..

अनुवाद ब्यूरो का पुनर्गठन :
शब्द भारती के अधीन अनुवाद ब्यूरो एक ऐसा मंच है जहां अनुवाद कार्य में इच्छुक विद्यार्थी काम करके अनुभव और धनार्जन लाभ कर सकते हैं। इस मंच का हाल ही में पुनर्गठन किया गया है और कम से कम 28 विद्यार्थियों को काम पर रखने के लिए पैनलाइज्ड किया गया है। उम्मीद है योग्य मार्गदर्शन में यह मंच एक दिन सफल मंच सिद्ध होगा। और अनेक विद्यार्थी इससे लाभान्वित होंगे।

पुस्तक प्रकाशन, विक्रय और प्रदर्शन :
पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में शब्द-भारती ने 2013 से कदम रखा था। अभी तक इसने स्थानीय लेखकों/अनुवादकों द्वारा लिखे या अनुवाद किए गए हिन्दी की कईं पुस्तकों का आइएसबीएन प्रकाशन किया है और उनके विक्रय का नेटवर्क भी बनाया है। दरअसल, पूर्वोत्तर भारत में सालों से हिन्दी पुस्तक के प्रकाशकों का अभाव रहा है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शब्द भारती ने यह कदम उठाया है। शब्द भारती की अपनी पुस्तक 'अनुवाद सुधा' भाग-1 और 'अनुवाद सुधा' भाग-2 के प्रकाशन के बाद हर साल हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता रहा है, इनमें से समरणीय पुस्तकें हैं- 2019 में नव बरा द्वारा अनुदित 'मोर जीवन सोंवरण' का 'मेरे जीवन की यादें', 2018 में किसी पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो पाया, 2017 में 'इम्प्रेशन', 2017 में अजित बरदलोई की असमिया कविताओं का हिन्दी अनुवाद 'धूप की सुगंध की तलाश में', 2016 में करबी देवी, साहुल कुमार और मोहन कोईराला की मौलिक कविताओं का संकलन 'बरसाती चांदनी का सफर', 2015 में हीराबाला देवी द्वारा बांगला से अनुवाद किया गया ग्रंथ 'गौड़ीय नृत्य की नृत्य परंपरा धारा का ओझा नृत्य' और प्रोफेसर दिलिप कुमार मेधि द्वारा संपादित 'भारतीय भक्ति आंदोलन और पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आंदोलन में शंकरदेव और माधवदेव का योगदान', 2014 में ज्योतिष कुमार देव की मौलिक हिन्दी कविताओं का संकलन 'जिन्दगी एक सौगात' और शब्द भारती द्वारा प्रकाशित शोध आलेखों का संकलन 'प्रेमचंद साहित्य का मूल्यांकन: वर्तमान के संदर्भ में', 2013 में लखीमपुर जर्नलिस्ट एसोशिएशन का ग्रंथ 'वेदनिधि' आदि।

अनुवाद सुधा का लोकार्पण समारोह- भारतीय अनुवाद परिषद के सचिव/ निदेशक डॉ. पूरनचंद टंडन तथा अवर सचिव संतोष खान्ना जी का सम्मान शब्द भारती द्वारा आयोजित अनुवादक सम्मान समारोह- 2011 में

.. जारी..

प्रति वर्ष असम सरकार द्वारा आयोजित 'गुवाहाटी ग्रंथ मेला' में भी यह 2017 से प्रदर्शनी और बिक्री कार्यक्रम में भाग लेते आ रहा है। हालांकि, यह कार्यकलाप आर्थिक लाभ की उपेक्षा करते हुए हिन्दी पुस्तक पठन और प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से किया जा रहा है।

मुखपत्र 'अनुवाद भारती' का प्रकाशन लगातार 2004 से किया जाता रहा है। अनुवाद पर इसके अनेक अंक प्रकाशित होकर निकले हैं। इसका नवीनतम अंक पहली बार ई-पत्रिका के रूप में इसी बार 14 सितंबर 2020 में प्रकाशित हुआ है जो आपके हाथों में सुशोभित है। इसमें अनुदित रचनाएं, अनुवाद समीक्षा, विवेचन, रचनात्मक साहित्य एवं शब्द भारती के कार्यकलापों का विवरण प्रकाशन किया गया है।

गुवाहाटी ग्रंथ मेले में शब्द भारती की छात्र छात्राएं एवं पदाधिकारीगण

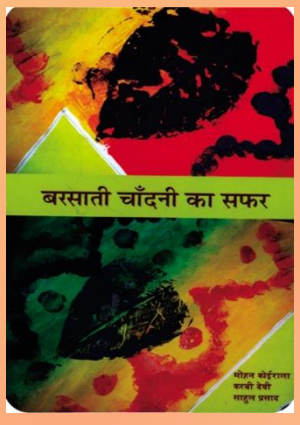

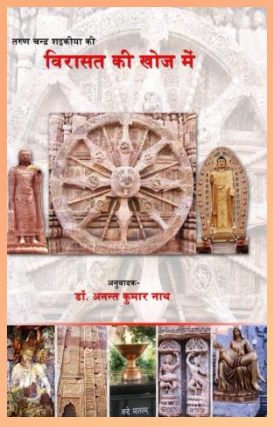

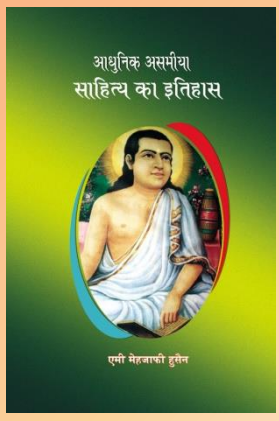

शब्द भारती द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

'अनुवादश्री' पुरस्कार

अभी तक जिन महान अनुवादकों को उनकी यावत-जीवन अनुवाद-सेवा के लिए शब्द भारती ने 'अनुवादश्री' पुरस्कार प्रदान किया है, उनमें से निम्नलिखित नाम उल्लेख्य हैं- श्रीमती निरूपमा फुकन (डिब्रुगढ़), नवारूण वर्मा (गुवाहाटी), चित्र महंत (गुवाहाटी), लोकनाथ भराली (गुवाहाटी), डॉ. थानेश्वर शर्मा (गुवाहाटी), गिरिजा बरूवा (गुवाहाटी), दिनकर कुमार और वन्ति आशा चलिहा (गुवाहाटी), डॉ. भूषण पाठक (भवानीपुर)। 2014 से विभिन्न कारणों से 'अनुवादश्री' पुरस्कार प्रदान को स्थगित रखा गया है।

प्रख्यात कवि/अनुवादक दिनकर कुमार को शब्द भारती द्वारा वर्ष 2010 का अनुवादश्री पुरस्कार प्रदान

हिंदी के लेखक गुलशन राय मोंगाजी के गुवाहाटी आगमन के अवसर पर शब्द भारती में सम्मान समारोह

.. जारी..

शब्द भारती के आंगन में अपने पदचिह्न छोड़ने वाले हितैषी:

शब्दभारती के आंगन में हजारों लोगोंने अपने पदचिह्नछोड़े हैं, उनमें से सभी नाम तो याद नहीं हैं परंतु जो नाम तत्काल याद आ रहे हैं, उनमें से हैं- डा. शिव आचार्य (प्रोफेसर), राजनाथ सिंह (सांसद), श्रीष प्रसाद जायावाल (पत्रकार), निरंजन लस्कर (एसएससी के निदेशक), गुलशन राय मोंगा (लेखक), रामनिरंजन गोयेंका (समाजसेवी), डॉ. उमेश डेका (प्रोफेसर), डॉ. जगमल सिंह (प्रोफेसर), डॉ. पुरनचंद टंडन (प्रोफेसर), संतोष खन्ना (संपादक), डॉ. नवीन शर्मा (प्रोफेसर), कनकसेन डेका (संपादक), डॉ. ज्ञानम (प्रोफेसर), डॉ. अशोक कुमार गोस्वामी (प्रोफेसर), गुलाम चिश्ती (पत्रकार), ओम प्रकाश राठोड़ (समाजसेवी), रामसेवक राय (अधिकारी), राहुल जैन (पत्रकार), डॉ. चंद्रभूषण द्विवेदी (वैज्ञानिक), डॉ. विश्वनाथ प्रसाद (प्रोफेसर), बिरेन्द्र नाथ दत्त (प्रोफेसर), डॉ. प्रमोद भट्टचार्य (लेखक), डॉ. रिजु हाजरिका (लेखक), डॉ. सुधा श्रीवास्तव (लेखिका), रामजीतन सिंह चौहाण (अध्यापक), डॉ. विनय कुमार सिंह (निदेशक), डॉ. दिलिप बरा (प्रोफेसर), डॉ. सुशील शर्मा (प्रोफेसर), डॉ. के.के. सिंह (उप निदेशक), डॉ. हेमराज मीणा (निदेशक), बी.आर.मेधि (निदेशक), डॉ. असमी गगोइ (निदेशक), मायाशंकर वर्मा (अधिकारी), विनोद रिंगानिया (पत्रकार), डॉ. बिन्दु चौधुरी (लेखिका), सत्यानंद पाठक (पत्रकार संपादक), रविशंकर रवि (पत्रकार संपादक), कपूरचंद जैन (लेखक), डॉ. संजीव शर्मा (फील्ड आफिसर), पी.पी.श्रीवास्तव (एनइसी के सचिव), डॉ. के. गुप्ता (डीजीएम, नाबार्ड), डा.मीना ओला (डीजीएम, नाबार्ड), डॉ. जयशंकर राय (शिक्षक), एन.पायेंग (सहायक निदेशक), रीणा सोनोवाल (निदेशक,पीआइबी), डॉ. चित्राली गोस्वामी (आइआइटी), उमाकांत खुबलकर (निदेशक), रमेन शर्मा (इंटरप्रेटर) एवं गिरिश रस्तोगी (आइ ए एस) पटवारी चेरिटेबल ट्रस्ट के पदाधिकारीगण।

पेशे से गुवाहाटी हाईकोर्ट के एडवोकेट होते हुए भी डॉ. ईन्द्रनील चौधुरी और उनकी श्रीमती राखी सिसरोटिया द्वारा शब्द भारती को दिए गए अपूर्व आर्थिक सहयोग और सेवा को भूलाया नहीं जा सकता। उसी तरह, पटवारी चैरीटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा भी शब्द भारती के उत्थान के लिए शुरूआती दिनों से अनेक प्रकार से अपनी सेवाएं दी हैं। फैन्सी बाजार के श्री आर.एन.गोयेंका की आर्थिक सेवा भी शब्द भारती के लिए अत्यंत स्मरणीय है। शब्द भारती से उत्तीर्ण होकर सरकारी नौकरी पानेवाले विद्यार्थियों द्वारा शब्द भारती को समय असमय दिए गए सहयोग का भी कोई जवाब नहीं है। यह लिस्ट अनेक लंबी है। फिर भी पहली पंक्ति में आनेवाले कुछ विद्यार्थियों का नामोल्लेख आवश्यक लगता है- जियाउल हक, देवानंद दास, धीराज शर्मा, एन. ओकेन्द्रो सिंह, रूमि कलिता, सोफिया अली, करवी देवी, सरस्वती शर्मा, रेणुका बरूवा, विकास राय, नीलोत्पल बरा, हीरकज्योति शर्मा, जयंत राजबंशी, दिगंत डेका और दैमाली ब्रह्म आदि।

अंतिम राय :

कोई भी अनुष्ठान आर्थिक रूप से सबल होने पर ही लंबे समय तक टिके रह सकता है। शब्द भारती का भी यही हाल है। स्थायी रुप से आर्थिक स्वच्छलता न होने के कारण अनेक बार इसकी डावाडोल होने की अवस्था भी आयी है। फिर भी डूबते-उतरते, लड़खड़ाते यह चल रही है और तमाम विद्यार्थियों का कल्याण कर रही है। मुझे लगता है कि यह अनुष्ठान मजबूत हाथों में रहना चाहिए जो पर्याप्त संरक्षण देकर इसे हमेशा चलायमान और तेज गतिशील बनाए।

.. जारी..

स्थायी मकान और जमीन का अभाव :

सबसे चिंतनीय बात यही है कि इसके पास न अपनी जमीन है और न ही स्वयं का मकान। असम सरकार से सरकारी जमीन प्राप्त करके खुद का स्थायी भवन बनाने का सपना दस वर्षों से पेंडिंग है। समय के अभाव से हम कोई भी सरकार के पास जा नहीं पाते और इतनी भी औकात नहीं है कि हम अपने पैसे से शब्द भारती के लिए एक टूकड़ी जमीन खरीद पाते। इस प्रकार, किराए के मकान में अनिश्चित आर्थिक स्रोत से कब तक अनुष्ठान चल पाएगा- यह कहना बहुत मुश्किल है। फिर भी, प्रोफेसर अनंत कुमार नाथ जी की उदारता ही है कि उन्होंने अनुष्ठान को अभी तक मरने नहीं दिया है।

मेरा व्यक्तिगत विचार:

1994 से लेकर आज तक कोई ऐसा दिन नहीं होगा जिस दिन मैंने शब्द भारती के बारे में सोचा न हो या उसके लिए काम न किया हो। लेकिन 'अकेला वृहस्पति हमेशा झूठा' ही होता है। मैं कितना भी क्यों न करूं दस लोगों की ताकत के आगे वह कुछ भी नहीं है। समूह में जो काम तत्काल हो सकता है वह अकेले से कभी नहीं हो सकता। समूह में हम कब जागेंगे- कब कमर कसेंगे, यही प्रतीक्षित है, अनंत समय के लिए। बीस वर्षों तक सचिव की सेवा करते-करते हड्डी-पसली जवाब देने लग गए हैं। आयु के साठ वर्ष की दहलीज पर पहुंच कर ऐसा लगता है अब प्रत्यावर्तन का समय नजदीक आ पहुंचा है। जाना होगा फिर कहीं दूर एक दूसरी शब्द भारती के सृजन के लिए जहां अनेक नि:स्वार्थी बैठे राह जोह रहे हैं- एक नए सूरज को उगाने के लिए जिसके किरणों में बैठी प्रज्ञा उनमें प्राण संचारित कर दें।

****

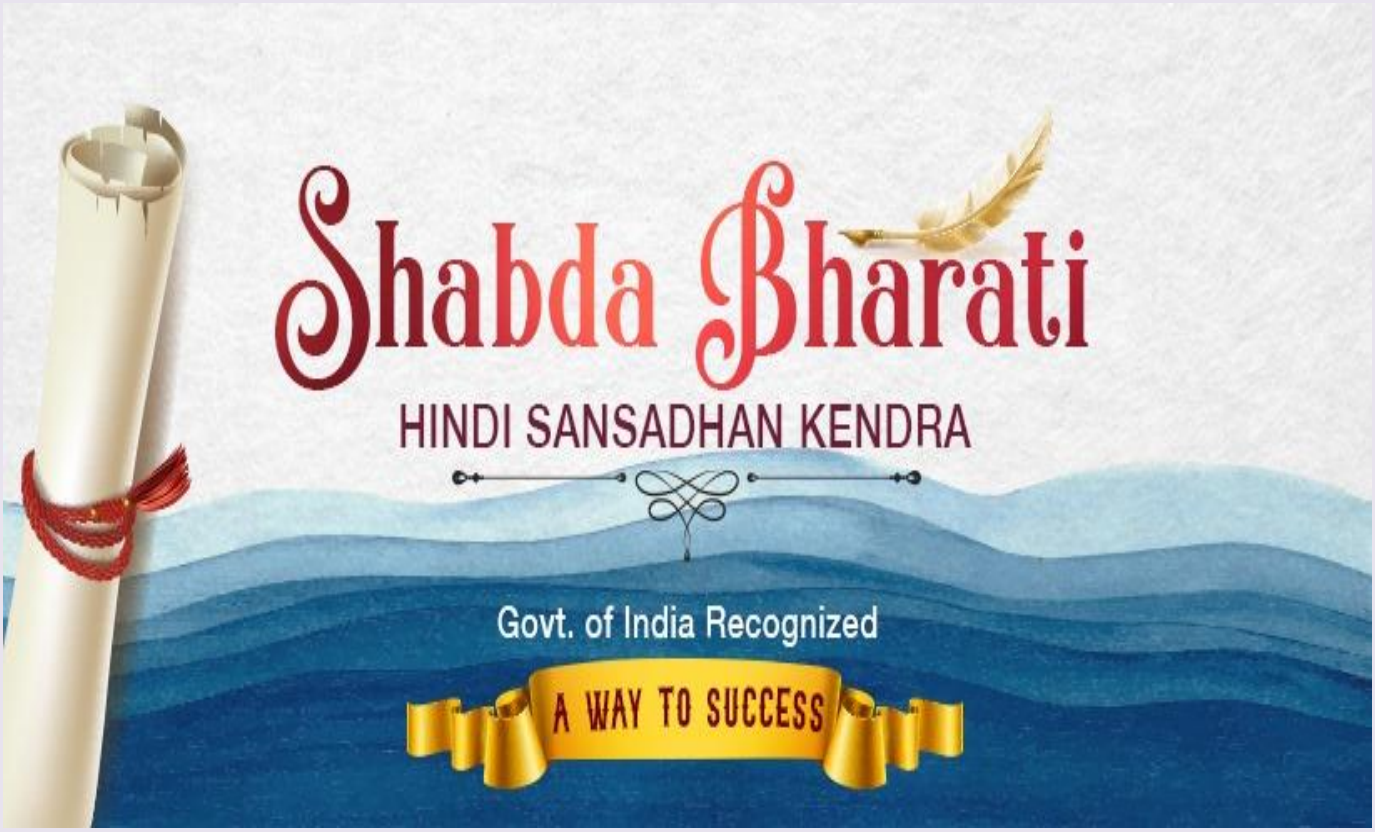

A WAY TO SUCCESS

Admission Open

PG DIPLOMA IN TRANSLATION

(English-Hindi-English)

(Govt. of India Recognized)

A Course for becoming a Hindi Translator / Hindi Officer / Rajbhasha Adhikari / Hindi Assistant / Rajbhasha Assistant / Hindi Content Writer / Junior Translation Officer / Freelance Translator & Others

at

SHABDA BHARATI

(Hindi Sansadhan Kendra)

Beltala, Guwahati-28

Contact us:

Faculty:
9436979505
9864024645
9873567522
9854233038
9085849720

Office:
8724951078
9864505108

WhatsApp:
8254823695
9101605074

Composing, Editing, Art & Designed by - Manoj Kumar +918254823695

शब्द भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)

सप्तर्षि पथ, बनगाँव, बेलतला, गुवाहाटी - 28